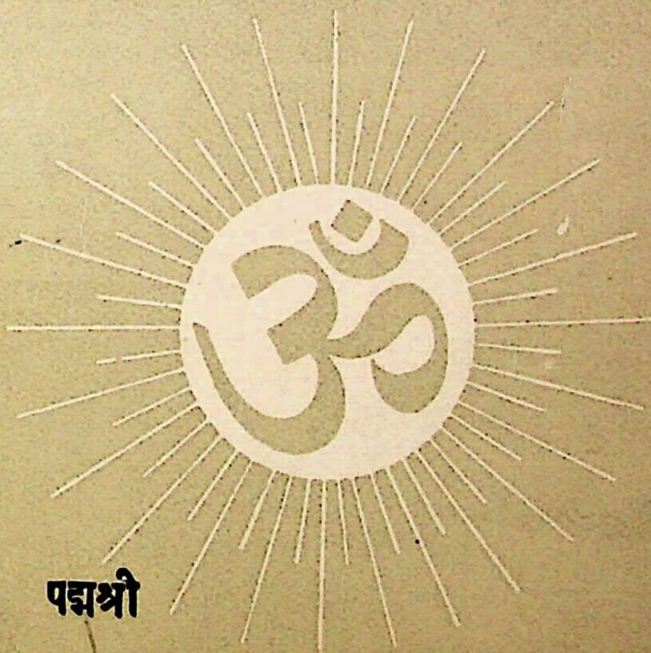
वेदामृतम्



# सामवेद सुभाषितावली



पद्मश्री
डा० कपिलदेव द्विवेदी



उपहार-प्राप्ति

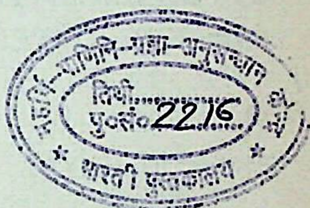


ओ३म्

वेदामृतम् : भाग - १०

# सामवेद - सुभाषितावली

## 1768 MAXIMS FROM THE SAMAVEDA





लेखक

**पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी**
निदेशक, विश्वभारती अनुसंधान परिषद
ज्ञानपुर (वाराणसी)

एवं

**डा० भारतेन्दु द्विवेदी**
अध्यक्ष, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्
ज्ञानपुर (वाराणसी)



**विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्**

**ज्ञानपुर ( वाराणसी )**

**VEDAMRITAM -VOL. X**
**(SAMAVEDA-SUBHASITAVALI)**
***1768 Maxims From The Samaveda.***

**By : Dr. K.D. DVIVEDI & Dr. B. DVIVEDI**


संस्करण : सन् १९९४ ई०

मूल्य : सजिल्द ३५.०० ISBN 81-85246-21-1
अजिल्द २५.०० ISBN 81-85246-22-X

**ISBN 81-85246-02-5 (Set)**

वितरक :
**विश्वभारती बुक एजेन्सी**
ज्ञानपुर (वाराणसी)

प्रकाशक :
**विश्वभारती अनुसंधान परिषद्**
शान्ति-निकेतन, ज्ञानपुर (वाराणसी )

कम्पोजिंग : *मोहित कम्प्यूटर*,
बी०२६/२५७ नबाबगंज, राजेश सदन
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी (उ.प्र.)



# प्राक्कथन

**सामवेद का महत्त्व :** वेद प्रभु की वाणी है। वेद ज्ञान के स्रोत हैं । वेदों में अनन्त ज्ञान भरा हुआ है । वे मानवमात्र के लिए प्रकाश-स्तम्भ हैं । सामवेद उपासना-प्रधान वेद है । इसमें प्रभु की भक्ति और उपासना से संबद्ध मन्त्र हैं । इनका संगीत-शास्त्र की दृष्टि से गान होता है। सामवेद में १८७५ मंत्र हैं । इनमें से १७७१ मंत्र ऋग्वेद के हैं । केवल १०४ मंत्र नये हैं ।

प्रभु की भक्ति जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। प्रभु की भक्ति से ही सच्चे आनन्द की प्राप्ति होती है। जहाँ आनन्द है, वहाँ सुख, शान्ति, वैभव और विकास हैं। लोक और परलोक को सुधारने का सशक्त मार्ग प्रभु की भक्ति ही है। सामवेद में प्रभु की भक्ति के द्वारा जीवन के सर्वांगीण विकास की विधि प्रस्तुति की गयी है। अतः सामवेद में सभी विषयों से सम्बद्ध मंत्र आये हैं।

**सुभाषित-संकलन :** प्रस्तुत संकलन में सामवेद संहिता (राणायनीय एवं कौथुम शाखा) से १७६८ सुभाषित संग्रह किये गये हैं। सुभाषित ग्रन्थ के प्राण या सार होते हैं। इसमें सूत्ररूप में जीवन की विविध शिक्षाएं दी हुई हैं। ये स्मरणीय हैं। इनमें से कुछ सुभाषितों को जीवन में क्रियात्मक रूप में उतारने पर जीवन पवित्र और उन्नत होता है, मानव की सभी अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं तथा महासंकटों से उद्धार होता है। सुभाषित प्रकाश-स्तम्भ हैं ।

**सुभाषितों का वर्गीकरण :** समस्त सुभाषितों को विषय की दृष्टि से १४ भागों में बाँटा गया है। सुविधा के लिए इनके भी उपविभाग किये गये हैं। सारे सुभाषित विषयानुसार अकारादि-क्रम से दिये गये हैं। प्रत्येक विषय से संबद्ध सुभाषित उसी शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये हैं। १४ शीर्षक ये हैं :— १.धार्मिक (अ), २.धार्मिक (आ), ३.आचारशिक्षा, ४.नीतिशिक्षा, ५.राजनीतिशास्त्र, ६.अर्थशास्त्रीय, ७.समाजशास्त्रीय, ८.राष्ट्रीय, विश्व-कल्याण, ९.दार्शनिक, १०.आयुर्वेद, ११.विज्ञान, १२.वनस्पतिशास्त्र एवं प्राणिविज्ञान, १३.मनोविज्ञान, १४.विविध ।

**सन्दर्भ-निर्देश :** सारे सुभाषित सामवेद-संहिता से लिए गए हैं, अतः प्रत्येक सुभाषित के आगे सामवेद, साम० नहीं लिखा गया है। सुभाषित के आगे संख्याएँ

दी गयी हैं। ये संख्याएँ श्रीपाद दामोदर सातवलेकर (स्वाध्याय मंडल, पारडी) के संस्करण के अनुसार हैं।

**मन्त्रार्थ-विधि :** मन्त्रार्थ के विषय में महर्षि पतञ्जलि के वैज्ञानिक मन्तव्य को अपनाया गया है कि 'यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्' अर्थात् जो शब्द या मन्त्र का पद कहता है, वह हमारे लिए प्रमाण है । अतः मन्त्रार्थ के लिए वेद के शब्दों को ही आदर्श माना गया है और जो अर्थ अति सरल विधि से मन्त्र से निकलता है, वही दिया गया है । एक परमात्मा के ही अग्नि, इन्द्र, वरुण आदि नाम हैं, अतः यथास्थान इन शब्दों का अर्थ परमात्मा दिया गया है । सुभाषितों में मन्त्र का कुछ अंश आदि या अन्त में नहीं आया है, अतः वाक्य-पूर्ति के लिए आदि या अन्त में वह अंश हिन्दी अर्थ में दिया गया है । इससे वाक्य का अर्थ पूरा स्पष्ट हो जाता है । कहीं-कहीं पर शाब्दिक अनुवाद न करके अर्थ-स्पष्टता के लिए सुबोध अर्थ दिया गया है। मन्त्रार्थ में नैरुक्त-प्रक्रिया और भाषावैज्ञानिक पद्धति को विशेष रूप से अपनाया गया है ।

**मुद्रण कार्य :** प्रेस के लिए ँ (ग्वङ्) समस्या थी, अतः उसके स्थान पर अनुस्वार( ं ) का प्रयोग किया गया है। कुछ स्थानों पर अर्थ - स्पष्टता के लिये यण् आदि सन्धियों को तोड़कर रखा गया है। ... संकेत का अर्थ है– मध्य में कुछ अंश छोड़ा गया है।

पुस्तक के प्रकाशन - सम्बन्धी कार्यों में तथा प्रूफरीडिंग आदि में चि० धर्मेन्दु, ज्ञानेन्दु, विश्वेन्दु, आर्येन्दु एवं श्रीमती सविता द्विवेदी ने विशेष सहयोग दिया है, तदर्थ वे आशीर्वाद के पात्र हैं ।

आशा है वेदामृतम् का यह दशम भाग वेद-प्रेमियों की आवश्यकता पूर्ण करेगा और उनकी वेदों के प्रति रुचि बढ़ाएगा।

शान्ति-निकेतन,
ज्ञानपुर (वाराणसी)
१-१-९४ ई०

-डा० कपिलदेव द्विवेदी

# विषयसूची

## [ १ ] धार्मिक, (अ) यज्ञादि १-१०



## [ २ ] धार्मिक, (आ) देवता १०-५२



## [ ३ ] आचारशिक्षा ५२-७२

# सामवेद–सुभाषितावली

## (१) धार्मिक (अ)

### (क) यज्ञ

१. अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते,
क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते । साम० १६१४
यज्ञकर्ता यज्ञ को संस्कृत, अभिव्यक्त और प्रशस्त करते हुए उसे अपनाते हैं तथा मधु से सिक्त करते हैं ।

२. अथो यज्ञस्य यत् पयः । साम० ६०२
मुझे यज्ञ का रस (सार) प्राप्त हो ।

३. अबोध्यग्निः समिधा जनानाम् । ७३
लोगों द्वारा दी गई समिधाओं से अग्नि प्रदीप्त हुई ।

४. अयं स होता यो द्विजन्मा । १७७६
द्विज ही होता (यज्ञकर्ता) होता है ।

५. आ घा ये अग्निमिन्धते, स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।
येषामिन्द्रो युवा सखा । १३३, १३३८
जो प्रतिदिन अग्नि प्रदीप्त करते हैं (यज्ञ करते हैं), आसन बिछाते हैं, नित्य युवा इन्द्र (परमात्मा) उनका मित्र होता है ।

६. आ जुहोता हविषा मर्जयध्वम् । ६३
हव्य से यज्ञ करो और यज्ञभूमि को स्वच्छ रखो ।

७. आयुर्दधद् यज्ञपतावविहृतम् । ६२८
परमात्मा यज्ञकर्ता को अक्षत आयु देता है ।

८. इष्टा होत्रा असृक्षत । १५१
विद्वानों ने अभीष्ट–साधक यज्ञों को जन्म दिया ।

९. उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये । १३७९
यज्ञ में जाकर अग्नि देव के लिए मन्त्र बोलें ।

१०. ऋषीणां सुष्टुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम् । १०३०
ऋषियों की स्तुतियों और मनुष्यों के यज्ञ में देव आते हैं ।

११. एष ब्रह्मा य ऋत्वियः । ४३८, १७३८
ऋतुओं के अनुसार यज्ञ करने वाला ब्रह्मा होता है ।

१२. कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे । ३२
यज्ञ में क्रान्तदर्शी और सत्यनिष्ठ अग्नि की स्तुति करो ।

१३. तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि । ६६१
विद्वान् समिधा और घी से अग्नि को दीप्त करते हैं ।

१४. त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । २
हे अग्नि ! तुम यज्ञ के प्रसारक और लोकहितकारी हो ।

१५. देवमादनः क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः । १३१५
यज्ञ देवों का आह्लादक, सोम्य और ज्ञानी है ।

१६. देवाँ देवयते यज । १००
हे अग्नि ! तुम देवभक्तों के लिए देवों को लाओ ।

१७. देवा यज्ञं नयन्तु नः । ५६
देवता हमारे यज्ञ को स्वीकार करें ।

१८. देवा हविरदन्त्वाहुतम् । १०६६
देवता प्रदत्त आहुति खावें (स्वीकार करें) ।

१९. धर्ता दिवो भुवनस्य विश्पतिः । १८४५
यज्ञ द्युलोक का धारक और संसार का स्वामी है ।

२०. प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे । १६
हे अग्नि ! तुम्हें इस सुन्दर यज्ञ में सोम-पान के लिए बुलाते हैं ।

२१. ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनाम् । ९४४
सोम (ईश्वर) देवों का ब्रह्मा (राजा) और कवियों का मार्गदर्शक है ।

२२. भद्रो नो अग्निराहुतः । १११, १५५९
आहुति दिया हुआ अग्नि हमारे लिए शुभ हो ।

२३. भरामेध्मं कृणवामा हवींषि । १०६५
हम यज्ञ में समिधा और हवि डालते हैं ।

२४. मही यज्ञस्य रप्सुदा । १६०२
यज्ञ की महान् प्रतिष्ठा है ।

२५. यजस्व जातवेदसम् । १०३
अग्नि में यज्ञ करो ।

२६. यजा देवाँ ऋतं बृहत् । १५३७
हे अग्नि ! तुम हमारे लिए देवों को और महान् सत्य को लाओ ।

२७. यजा स्वध्वरं जनं मनुजातम् । ९६
हे अग्नि ! तुम यज्ञकर्ता मनुष्य का आदर करो ।

२८. यज्ञ इन्द्रमवर्धयत् । १२१, १६३९
यज्ञ इन्द्र (मेघ) को बढ़ाता है ।

२९. यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा । १०७३
हे इन्द्र और अग्नि ! तुम यज्ञ के ऋत्विज् हो ।

३०. यज्ञैः परि भूषत श्रिये । ५६८
समृद्धि के लिए यज्ञों से (गृहादि को) अलंकृत करो ।

३१. यज्ञो जिगाति चेतनः । ६७०
चेतन यज्ञ (ईश्वर) चारों ओर जाता है (व्याप्त है) ।

३२. यदि वीरो अनु ष्याद् अग्निमिन्धीत मर्त्यः । ८२
जो वीर पुरुषार्थ करता है और यज्ञ करता है, उसे दिव्य सुख मिलता है।

३३. यद् भूमिं व्यवर्तयत् । १२१, १६३९
यज्ञ भूमि में चारों ओर फैल जाता है ।

३४. विश्वे देवा-मम शृण्वन्तु यज्ञम् । ६१०
सारे देव मेरे यज्ञ को सुनें (स्वीकार करें) ।

३५. शर्म भक्षीय दैव्यम् । ८२
यज्ञकर्ता को दिव्य सुख मिलता है ।

३६. सहस्रदाः शतदा भूरिदावा । १८४५
यज्ञ अत्यधिक और सहस्रों रूप में सुख देता है ।

३७. सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनाम् । ७५०
यज्ञ श्रेष्ठ ब्रह्मा (वेदज्ञ) और वसुओं को शान्ति देता है ।

३८. सुभग भद्रो अध्वरः । १११, १५५९
श्रेष्ठ यज्ञ सौभाग्य के लिए हो ।

३९. सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे । ८३
हे अग्नि ! तुम अपनी ज्योति से सूर्य की तरह चमकते हो ।

४०. सूर्यस्य भानुं यज्ञो दाधार । १८४५
यज्ञ सूर्य की किरणों को धारण करता है ।

४१. होतारं त्वा वृणीमहे । ४२०
हे अग्नि ! देवों को लाने वाले तुमको हम चुनते हैं ।

## (ख) स्तुति, उपासना

४२. अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः । ८७
मैं विचारों की पूर्ण शक्ति से प्रिय अग्नि की स्तुति करता हूँ ।

४३. अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिर्वृणीमहे । ५९
हम सूक्ति युक्त वचनों (मन्त्रों) से अग्नि का वरण करते हैं ।

४४. अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः । ४९
अपनी सुरक्षा के लिए मन्त्रों से अग्नि की स्तुति करो ।

४५. अदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः । २९९
अदिति हमारे अजेय एवं रक्षक वचनों की रक्षा करे ।

४६. अभि वाणीर्ऋषीणां सप्ता नूषत । ५७७
सप्तर्षियों की वाणी ने देवों की स्तुति की ।

४७. अया वर्धस्व तन्वा गिरा मम । ५२
हे अग्नि ! तुम मेरी इस विस्तृत वाणी से बढ़ो ।

४८. अर्चत प्रार्चता नरः प्रियमेधासो अर्चत । ३६२
हे बुद्धिप्रिय व्यक्तियो! तुम निरन्तर इन्द्र की स्तुति करो ।

४९. अर्चन्तु पुत्रका उत । ३६२
पुत्रगण भी इन्द्र की स्तुति करें ।

५०. आशिषे राधसे महे । २०८
हम आशीर्वाद-प्राप्ति और विशाल धन के लिए स्तुति करते हैं ।

५१. इन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना । ३५०
हम पवित्र इन्द्र की पवित्र सामवेद के मन्त्रों से स्तुति करते हैं ।

५२. उप त्वाग्ने दिवेदिवे . . . . नमो भरन्त एमसि । १४
हे अग्नि ! हम प्रतिदिन नमस्कार करते हुए तेरे पास आते हैं ।

५३. उप ब्रह्माणि नः शृणु । ६६७
हे इन्द्र ! तुम हमारी स्तुतियों को सुनो ।

५४. उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । ६५१
हे लोगो ! तुम पवित्र सोम के लिए मन्त्रगान करो ।

५५. गाव उप वदावटे । ११७
हे इन्द्र ! तुम हमारे हृदयरूपी गर्त में ज्ञान की वाणी भरो ।

५६. चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम् । १०६५
हे अग्नि (ईश) ! शरीर के प्रत्येक पर्व पर हम तेरा ध्यान करें ।

५७. तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत । १६३३
उस पवित्र सोम की प्राचीन गाथाओं से लोगों ने स्तुति की ।

५८. तं गूर्धया स्वर्णरम् । १०९
उस तेजोमय देव परमात्मा की स्तुति करो ।

५९. त्वष्टा नो दैव्यं वचः . . . . पातु । २९९
सृष्टिकर्ता ईश हमारे दिव्य वचनों की रक्षा करे ।

६०. त्वां विप्रासः . . . . आ विवासन्ति वेधसः । ४२
हे अग्नि ! ज्ञानी विद्वान् तुम्हारी उपासना करते हैं ।

६१. देवान् गच्छन्तु वो मदाः । ८७२
तुम्हारे मादक सोमरस देवों को प्राप्त हों ।

६२. देवासो देवमरतिं दधन्विरे । १०९
देवों ने सतत कर्मठ अग्नि को प्राप्त किया ।

६३. द्युमन्तं धीमहे वयम् । २६
तेजोमय अग्नि को हम स्थापित करते हैं ।

६४. नमो भरन्त एमसि । १४
हे ईश ! नमस्कार करते हुए हम तुम्हारे पास आते हैं ।

६५. पुनानाय प्र गायत । ५६८
पवित्र सोम के लिए मंत्रगान करो ।

६६. पुरमिद् धृष्ण्वर्चत । ३६२
दृढ़ नगरी के तुल्य अजेय इन्द्र की स्तुति करो ।

६७. प्र गायताभ्यर्चाम देवान् । ५३५
हे लोगो ! मन्त्रगान करो। हम देवों की पूजा करें ।

६८. प्रियमेधासो अर्चत । ३६२
हे बुद्धिप्रिय व्यक्तियो ! इन्द्र की स्तुति करो ।

६९. बृहदर्च विभावसो । ८६
हे तेजोमय विद्वान् ! तुम अग्नि की महान् स्तुति करो ।

७०. मघवन् विदा गातुम् अनुशंसिषो दिशः । ६४१
हे इन्द्र ! तुमने मार्ग पाया और तुमने दिशाओं का बोध कराया ।

७१. यं नमस्यन्ति कृष्टयः । ५४
उस अग्नि को सभी प्रजाएँ नमस्कार करती हैं ।

७२. य एक इद् भूरतिथिर्जनानाम् । ३७२
वह अकेला इन्द्र ही लोगों के हृदय में अतिथिरूप है ।

७३. यजिष्ठमृञ्जसे गिरा । १२
श्रेष्ठ यज्ञकर्ता अग्नि की मैं वाणी से स्तुति करता हूँ ।

७४. यदिन्द्र यावतस्त्वम् एतावद् अहमीशीय । १७९६
हे इन्द्र ! तुम जितने के स्वामी हो, उतने का मैं भी स्वामी होऊँ ।

७५. वसुविदमभि वाणीरनूषत । ५७५
धनदाता सोम की हमारी वाणियों ने स्तुति की ।

७६. शुचयो विपश्चितोऽभिस्तोमैरनूषत । २५०
हे इन्द्र ! पवित्र विद्वानों ने स्तोत्रों से तेरी स्तुति की ।

७७. सखायो मदाय पुनानमभि गायत । ५६९
हे मित्रो ! आनन्द के लिए पवित्र करने वाले ईश्वर का गुणगान करो ।

७८. सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि । १७९९
हे ईश ! तेरे यशस्वी नाम का सदा गुणगान करता हूँ ।

७९. स पावक श्रुधी हवम् । २९
हे पवित्रकर्ता ईश ! मेरी प्रार्थना सुनो ।

८०. समेत विश्वा ओजसा पतिं दिवः । ३७२
अपने ओज से द्युलोक के स्वामी इन्द्र की शरण में आवो ।

## (ग) भक्त, भक्ति

८१. अभि द्युम्नं बृहद् यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम् । १०११
हे अन्नपति देव सोम ! तुम देवभक्त को धन और महान् यश दो ।

८२. अभि प्र नोनुमो वृषन् । १३२
हे सुखों के वर्षक ईश ! हम तुम्हें प्रणाम करते हैं ।

८३. अया पवस्व देवयु । ७७२
हे देवप्रिय सोम ! इस सोम की धारा से पवित्र करो ।

८४. अरिरग्ने तव स्विदा । ९७
हे अग्नि (ईश) ! मैं तुम्हारा सेवक हूँ ।

८५. इमे त इन्द्र ते वयम् । ३७३
हे इन्द्र (ईश) ! ये हम सब तुम्हारे भक्त हैं ।

८६. त्वं ह्येहि चेरवे । १५८१
हे इन्द्र (ईश) ! तुम मुझ भक्त के पास आवो ।

८७. त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो । ३७३
हे महाधनी इन्द्र ! हम तेरा नाम लेकर काम करते हैं ।

८८. दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम् । १०५
हे सज्जनों के स्वामी ईश ! इस भक्त के लिए दुर्गम को सुगम बनाओ ।

८९. न तस्य मायया च न रिपुरीशीत मर्त्यः । १०४
यज्ञकर्ता को कोई शत्रु छल से वश में नहीं कर सकता ।

९०. न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः । ३७३
हे इन्द्र ! तेरे अतिरिक्त और कोई वाणी के द्वारा स्तुत्य नहीं है ।

९१. मधोर्धारा असृक्षत । ७७२
हमने भक्ति रूपी मधु की धारा बहाई है।

९२. वयमिन्द्र त्वायवः । १३२
हे ईश ! हम तेरे हैं ।

९३. वसो वसुत्वनाय राधसे । २९२
हे तेजोमय इन्द्र ! समृद्धि और ऐश्वर्य के लिए तेरे पास आते हैं ।

९४. वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुः । २९२
हे इन्द्र ! तुम मेरे पिता और भाई से अधिक प्रिय हो ।

९५. सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्रगायत । ११५७
हे मित्रो ! बैठो और पवित्रकर्ता सोम का गुणगान करो ।

९६. समीं वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम् । ११५८
ऐश्वर्य के साधक परमात्मा से जीव को ऐसे मिला दो, जैसे बछड़े को माँ से ।

९७. सोमः पवित्रे अस्मयुः । १०४१

सोम्य परमात्मा पवित्र व्यक्ति पर ममता रखता है ।

९८. स्तोता मे गोसखा स्यात् । १२२

परमात्मा का भक्त गाय आदि धन पाता है ।

९९. स्तोता स्यां तव शर्मणि । १५३३

हे ईश ! मैं स्तुतिकर्ता तुम्हारी कृपादृष्टि में रहूँ ।

१००. हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति । १०३२

परमात्मा मित्रों (भक्तों) के हृदयरूपी भवन में निवास करता है ।

## (घ) देवकृपा

१०१. अश्वी रथी सुरूप इद् गोमान् यदिन्द्र ते सखा । २७७

हे इन्द्र ! तुम्हारा मित्र गाय, अश्व, रथ और सौन्दर्य से युक्त होता है ।

१०२. अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवः । ५२६

उस ईश की तीव्र प्रेरणा से दिव्य जीवात्मा पवित्र होता है ।

१०३. ऋध्यामा त ओहैः । १७७७

हे परमात्मन् । तुम्हारी स्तुति (कृपा) से हम समृद्ध हों ।

१०४. न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् । ४२६

हे देवो ! देवरक्षित मनुष्य को पाप और दुर्गुण प्राप्त नहीं होते हैं ।

१०५. महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षम् । १९२

मित्र, वरुण, अर्यमा, इन तीनों की महान् दिव्य-रक्षा हमें प्राप्त हो।

१०६. यं रक्षन्ति प्रचेतसो . . . न किः स दभ्यते जनः । १८५

जिसकी मित्रादि देव रक्षा करते हैं, वह कभी नहीं हारता ।

१०७. यच्चिकेत सत्यमित् तन्न मोघम् । १७८३

इन्द्र जो चाहता है, वह सत्य होता है, व्यर्थ नहीं ।

१०८. यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः । ४२६
अर्यमा, मित्र और वरुण मनुष्य को द्वेष से दूर ले जाते हैं ।

१०९. श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा । २७७
देवभक्त शक्तियुक्त दीर्घायु से सदा युक्त होता है ।

११०. सदा चन्द्रैर्याति सभामुप । २७७
देवभक्त सुवर्णालंकार से युक्त होकर सभा में जाता है ।

१११. सदा देवा अरेपसः । ४४२
देवगण सदा निर्दोष हैं ।

११२. सुक्रतुः कृपा स्वः । ४६४
श्रेष्ठ विचार वाले परमात्मा की कृपा से आनन्द मिलता है ।

११३. सुनीथो घा स मर्त्यो . . . . यमर्यमा, मित्रास्पान्त्यद्रुहः । २०६
मित्र, अर्यमा आदि जिसकी रक्षा करते हैं, वह मनुष्य सुरक्षित है ।

### (ङ) धर्म

११४. धर्मणा वायुमारुहः । ९२१
धर्म से अन्तरिक्ष में चढ़ा ।

११५. वायुमा रोह धर्मणा । ४८३, १२३५
धर्म से अन्तरिक्ष में चढ़ो ।

११६. वृषा धर्माणि दध्रिषे । ७८१
हे सुखवर्षक सोम ! तुम श्रेष्ठ धर्मों को धारण करते हो ।

## २. धार्मिक (आ)

### (क) अग्नि देवता

११७. अग्न आ याहि वीतये । १, ६६०
हे अग्नि ! तुम आनन्द के उपभोग के लिए आवो ।

११८. अग्न आयूंषि पवसे । ६२७
हे अग्नि ! तुम हमारी आयु को पवित्र करते हो ।
११९. अग्निं तं मन्ये यो वसुः । ४२५, १७३७
जो तेजोमय है, उसे मैं अग्नि मानता हूँ।
१२०. अग्निं नरो दीधितिभिररण्योः . . . . जनयत। १३७३
विद्वानों ने अरणि-मन्थन से अग्नि उत्पन्न की ।
१२१. अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः । १८२१
लोगों ने सुख के लिए अग्नि को अग्रणी बनाया ।
१२२. अग्निं हिन्वन्तु नो धियः । १५२७
हमारी बुद्धि अग्नि को प्रेरित करे ।
१२३. अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः । १८१३
ऐश्वर्य के दाता अग्नि को मैं होता (यज्ञकर्ता) मानता हूँ ।
१२४. अग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे । ९०७
अग्नि नवीन सद्‌गुण देने के लिए सुयोग्य है ।
१२५. अग्निमिन्धे विवस्वभिः । १९
मैं ज्वालाओं से अग्नि को प्रदीप्त करता हूँ ।
१२६. अग्निरस्मि जन्मना जातवेदाः । ६१३
मैं सर्वज्ञ अग्नि के तुल्य ज़न्म से ही तेजस्वी हूँ ।
१२७. अग्निरिन्द्राय पवते । १८२५
अग्नि इन्द्र (सूर्य) के लिए प्रकाशित होता है ।
१२८. अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । १५१९
अग्नि द्रष्टा, पवित्रकर्ता, पंचजनहितकर और पुरोहित है ।
१२९. अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः । १८३१
अग्नि तेजोमय है। तेज ही अग्नि है ।
१३०. अग्निर्महोनां दधाति रत्नम् । ४४९
अग्नि बलिष्ठों को रत्न देता है ।

१३१. अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् । १३९६
अग्नि वृत्रों (पापियों, कीटाणुओं) को नष्ट करता है ।

१३२. अग्निस्तुविश्रवस्तमः । १५५८
अग्नि महान् यशस्वी है ।

१३३. अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति । १८२२
हे अग्नि ! तेरी वीरतापूर्ण सुरक्षा से मनुष्य तर जाता है ।

१३४. अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता । ४४८
हे अग्नि ! तुम हमारे पड़ोसी और रक्षक हो ।

१३५. अग्ने त्वां कामये गिरा । ८, ११६६
हे अग्नि ! मैं तुम्हें अपनी स्तुति से चाहता हूँ ।

१३६. अग्ने मृड महाँ असि । २३
हे अग्नि ! तुम महान् हो । हमें सुख दो ।

१३७. अजस्रं ज्योतिर्हविरस्मि सर्वम् । ६१३
मैं अग्नि सदा ज्योतिरूप हूँ । मेरे लिए सब कुछ हव्य है ।

१३८. अतन्द्रो हव्यं वहसि । ४६
हे अग्नि ! तुम निरालस होकर हव्य ले जाते हो ।

१३९. अदर्शि गातुवित्तमः । ४७
हे अग्नि ! तुम मार्गवेत्ताओं में श्रेष्ठ हो ! मैंने तुम्हें देखा ।

१४०. अदाभ्यः पुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम् । १५५६
अग्नि अधृष्य है और मानवीय प्रजाओं का मार्गदर्शक है ।

१४१. अध स्म नस्त्रिवरूथः शिवो भव । १५६९
अग्नि त्रिविध रक्षा करता हुआ हमारे लिए सुखद हो ।

१४२. अरण्योर्निहितो जातवेदाः । ७९
अग्नि अरणियों में विद्यमान है ।

१४३. अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त । १४८४
चर-अचर तथा उदार दानी सभी तुम्हें नमस्कार करते हैं ।

१४४. असि होता मनुर्हितः । १३५०
हे अग्नि ! तुम यज्ञकर्ता हो और मनुष्यों के लिए हितकारी हो ।

१४५. अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् । ३
हे अग्नि ! तुम यज्ञ के पवित्रकर्ता हो ।

१४६. आदिद् देवेषु राजसि । ४६
हे अग्नि ! तुम देवों में प्रकाशमान हो ।

१४७. आ देवान् वक्षि यक्षि च । १४७५
हे अग्नि ! तुम देवों को लाते हो और यज्ञ करते हो ।

१४८. आरे बाधस्व दुच्छुनाम् । ६२७
हे अग्नि ! तुम विपत्तियों को दूर भगाओ ।

१४९. आर्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः । ४७, १५१५
आर्यों के वर्धक अग्नि को हमारी प्रार्थनाएँ प्राप्त हों ।

१५०. आ वाजैरुप नो गमत् । ९४८
अग्नि हमारे पास आवे और हमें शक्ति दे ।

१५१. आसुवोर्जमिषं च नः । ६२७
अग्नि हमें अन्न और बल दे ।

१५२. ईडिष्वा हि प्रतीव्यां यजस्व जातवेदसम् । १०३
शत्रुनाशक एवं सर्वज्ञ अग्नि की स्तुति करो और यज्ञ करो ।

१५३. उदग्निर्वृत्रहाजनि । १३८२ -
अग्नि वृत्रों (पापों, कीटाणुओं) का नाशक है ।

१५४. ऊर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो । १५४४
हे ऊर्जा के स्वामी अग्नि ! तुम अपनी चारों शक्तियों से मेरी रक्षा करो ।

१५५. घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् । ६१३
हे अग्नि ! घी तुम्हारा नेत्र है और तुम्हारे मुँह में अमृत है ।

१५६. जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविः । ९०७
सदा जागरूक अग्नि मनुष्यमात्र का रक्षक है ।

१५७. **जराबोध तद् विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय । १६६३**
हे स्तुतिश्रोता अग्नि ! प्रत्येक यजमान के घर में यज्ञार्थ प्रवेश करो ।

१५८. **जागृविं विभुं विश्पतिं नमसा नि षेदिरे । १५६८**
जागरूक, व्यापक एवं प्रजापालक अग्नि को बैठकर सब नमस्कार करते हैं ।

१५९. **तं गूर्धया स्वर्णरम् । १६८७**
तेजोमय नेता अग्नि की स्तुति करो ।

१६०. **तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन् सुप्रतिचक्षमवसे । १३७४**
विद्वानों ने दर्शनीय अग्नि को रक्षार्थ घर में स्थापित किया ।

१६१. **तेन जेष्म धनंधनम् । १५२७**
अग्नि के द्वारा हम प्रत्येक धन को जीतें ।

१६२. **त्मनाग्निं धीभिर्नमस्यत । १५१६**
स्वयं अग्नि को स्तुतिपूर्वक नमस्कार करो ।

१६३. **त्वं जामिर्जनानाम् अग्ने मित्रो असि प्रियः । १५३६**
हे अग्नि ! तुम लोगों के सम्बन्धी, मित्र और प्रिय हो ।

१६४. **त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय ।१५०५**
हे अग्नि ! तुम अग्नि के द्वारा हमारे ज्ञान और यज्ञ को बढ़ाओ ।

१६५. **त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने । १३०६**
हे अग्नि ! तुम वरुण और मित्र हो ।

१६६. **त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । १४७४**
हे अग्नि ! तुम यज्ञ के कर्ता और सबके हितकारी हो ।

१६७. **त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे । १५६८**
हे अग्नि ! तुम प्रत्येक युग में अमर दूत हो ।

१६८. **त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितमन्वविन्दन् । ९०८**
हे अग्नि (ईश) ! विद्वानों ने बुद्धिरूपी गुफा में विद्यमान तुमको पाया ।

१६९. त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः । ९०८
हे अग्नि ! तुमको शक्ति का पुत्र कहा गया है ।

१७०. त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः । ३८
हे आहुति दिए गये अग्नि ! तुम्हें विद्वान् प्रिय हों ।

१७१. त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे । १४८५
हे अग्नि ! सभी तेरी ओर अपना विचार ( ध्यान ) लगाते हैं ।

१७२. दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः । १३७४
वह अग्नि प्रसन्न रखने योग्य है और घर में सदा रहता है ।

१७३. देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम् । ५५
वह धनदाता अग्नि पूर्ण मधुधारा बहावे ।

१७४. द्युमद् वि भाति भरतेभ्यः शुचिः । ९०७
वह पवित्र अग्नि प्रजाजनों के लिए दिव्य प्रकाश देता है ।

१७५. द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः । १४८५
हे अग्नि ! ये तुम्हारे मित्र यजमान दो ( दम्पती ) से तीन (पुत्रयुक्त ) हो जाते हैं ।

१७६. धियो जिन्वसि सत्पते । ३४
हे सज्जनों के स्वामी अग्नि ! तुम बुद्धि को पुष्ट करते हो ।

१७७. धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः, धिये वाजाय हिन्वतु । १६६४
वह धूमकेतु अतितेजोमय अग्नि हमें बुद्धि और शक्ति दे ।

१७८. न किरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित् । १४१६
हे धर्षक अग्नि ! तुम्हारे किसी भक्त को कोई दबा नहीं सकता ।

१७९. न तत्ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनम् । ५३
हे अग्नि ! तुम्हारा अपने कर्तव्य से विमुख होना क्षम्य नहीं है ।

१८०. नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः । १६४८
हे देव अग्नि ! तुम्हें नमस्ते। प्रजा तेज के लिए तुम्हारी स्तुति करती है ।

१८१. नरोऽग्निः सुदीतये छर्दिः । ४९
हे मनुष्यो ! अग्नि तेजस्वी का रक्षक है ।

१८२. नरो हव्येभिरीडते सबाधे । ७०
मनुष्य विपत्ति में हवि से यज्ञ करते हैं ।

१८३. नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणाम् । ११४२
अग्नि यज्ञों का केन्द्र और ऐश्वर्य का साधन है ।

१८४. नि होता सत्सि बर्हिषि । १
हे होता अग्नि ! तुम यज्ञ में रहो ।

१८५. पाहि नो अग्न एकया । ३६, १५४४
हे अग्नि ! तुम अपनी एक शक्ति से हमारी रक्षा करो ।

१८६. पाहि विश्वस्माद् रक्षसो अराव्णः । १५४५
हे अग्नि ! तुम हमें सभी राक्षसों और शत्रुओं से बचाओ ।

१८७. पाह्युत द्वितीयया । ३६, १५४४
हे अग्नि ! तुम अपनी दूसरी शक्ति से हमारी रक्षा करो ।

१८८. पुनर्नः पाह्यंहसः । १८३२
हे अग्नि ! तुम हमें पापों से बचाओ ।

१८९. प्र केतुना बृहता यात्यग्निः । ७१
अग्नि अपनी विशाल ध्वजा के साथ आगे बढ़ता है ।

१९०. प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम्। ३५
हम सर्वज्ञ अमर अग्नि ( ईश ) को प्रिय मित्रवत् बुलावें ।

१९१. प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने । १०७
अत्युदार एवं सत्यपालक अग्नि के लिए मंत्रगान करो ।

१९२. प्रातरग्निः पुरुप्रियो विश स्तवेतातिथिः । ८५
प्रजा प्रातः अतिप्रिय एवं अतिथितुल्य अग्नि की स्तुति करे ।

१९३. भद्रो भद्रया सचमान आगात् । १५४८
भद्र अग्नि भद्र उषा के साथ आया ।

१९४. महो वृणते नान्यं त्वत् । ९८४
हे अग्नि ! तेरे अतिरिक्त और कोई तेजस्वी नहीं है ।

१९५. मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात् । १६३५
हे सुखों के वर्षक अग्नि ! तुम हमारे होओ ।

१९६. मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनम् अग्निम् । ९८४
अग्नि बुद्धि का दाता और यज्ञ का प्रसाधक है ।

१९७. यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवम् । १४१३
हे अग्नि ! पूज्य तुझ देव को हम वरण करते हैं ।

१९८. यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निम् । ९०९
अग्नि यज्ञ की ध्वजा है और प्रथम पुरोहित है ।

१९९. यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा . . . . स यन्ता शश्वतीरिषः । १४१५
हे अग्नि ! तुम युद्ध में जिसकी रक्षा करते हो, वह सदा समृद्ध होता है ।

२००. यस्माद् रेजन्त कृष्टयः चर्कृत्यानि कृण्वतः । १५१६
स्तुति करने वाले मनुष्य भी उस अग्नि से डरते हैं ।

२०१. यस्मिन् व्रतान्यादधुः । १५१५
यजमान अग्निसाक्षिक व्रत रखते हैं ।

२०२. यो विश्वा दयते वसु । १५८३
अग्नि समस्त ऐश्वर्य का दाता है ।

२०३. रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः । ६९
अग्नि भयंकर यज्ञकर्ता है और द्यावापृथिवी में सदा यज्ञ करता है।

२०४. रेवत् पावक दीदिहि । ३७
हे ऐश्वर्यशाली अग्नि ! तुम प्रकाशित होओ ।

२०५. वचोऽग्नये भरता बृहत् । ९८
अग्नि के लिए उत्कृष्ट स्तोत्र गाओ ।

२०६. वन्दध्या अग्निं नमोभिः । १७, १६३४
अग्नि की नमस्कार के द्वारा वन्दना करें ।

२०७. वाजमुक्थ्याँ दधासि दाशुषे कवे । १८१६
हे अग्नि ! तुम दानी को प्रशंसनीय शक्ति देते हो ।

२०८. वाजो अस्ति श्रवाय्यः । १४१६
हे अग्नि ! तुम्हारी शक्ति प्रशंसनीय है ।

२०९. विपां ज्योतींषि बिभ्रते । ९८
अग्नि ज्ञान की ज्योति धारण करता है ।

२१०. विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविम् । १५६७
अग्नि ज्ञानी, यज्ञकर्ता, महाधनी, अद्रोही और क्रान्तदर्शी है ।

२११. विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ । १४९८
हे तेजोमय अग्नि ! तुम समीप में ही समुद्र की लहरों की तरह धन बाँटते हो ।

२१२. शत्रुर्दासाय भियसं दधाति । १४८४
हे अग्नि ! तुम शत्रुरूप होकर नीच जनों को भयभीत करते हो ।

२१३. संवर्गं सं रयिं जय । १६५०
हे अग्नि ! तुम शत्रु के समस्त धन को बलात् हर लो ।

२१४. सखा सखिभ्य ईड्यः । १५३६
हे अग्नि ! तुम मित्रों के लिए मित्र और स्तुत्य हो ।

२१५. स जायसे मथ्यमानः सहो महत् । ९०८
हे अग्नि ! तुम महान् शक्ति हो और रगड़ से उत्पन्न होते हो ।

२१६. सद्यो दाशुषे क्षरसि । १४९८
हे अग्नि ! तुम शीघ्र ही दानी के लिए द्रवित होते हो ।

२१७. स नो रक्षिषद् दुरितादवद्यात् । १३०५
वह अग्नि हमें पापों और दुष्कर्मों से बचावे ।

२१८. स नो वेदो अमात्यमग्निः । १३८१
वह अग्नि हमारे लिए वेद है और मंत्रिवत् ज्ञानदाता है ।

२१९. सपर्यता यजतं पस्त्यानाम् । ६३
हे लोगो ! गृहस्वामी अग्नि की पूजा करो ।

२२०. स मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वान् । १३०५
वह अग्नि अपनी महिमा से सभी पापों पर विजय पाता है ।

२२१. समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे । १५६७
मैं प्रदीप्त अग्नि की समिधा और मंत्रों से स्तुति करता हूँ ।

२२२. सम्राजन्तमध्वराणाम् । १६३४
अग्नि यज्ञों का सम्राट् (स्वामी) है ।

२२३. स यक्षद् दैव्यं जनम् । १४०६
वह अग्नि दिव्य जनों तक यज्ञ को पहुँचावे ।

२२४. साह्वान् विश्वा अभियुजः । १५५८
वह अग्नि सभी आक्रमणकारियों को जीतता है ।

२२५. सुप्रीतो मनुषो विशे । ११४
वह अग्नि प्रसन्न होकर मनुष्यों के घर में रहता है ।

२२६. सो अग्निर्यो वसुर्गृणे । १७३९
अग्नि वह है, जो आश्रयदाता है। मैं उसकी स्तुति करता हूँ ।

२२७. हविरस्मि सर्वम् । ६१३
यह सारा संसार हव्य है ।

२२८. होता देवो अमर्त्यः । १४७७
अग्नि होता ( यज्ञकर्ता ) और अमर देवता है ।

२२९. होतारं रत्नधातमम् । ६०५
अग्नि होता (यज्ञकर्ता) और रत्नों का धारक है ।

२३०. होतारं विश्ववेदसम् । ३
अग्नि सर्वधन-युक्त है ।

## (ख) इन्द्र देवता

२३१. अथा ते सुम्नमीमहे । ११७०
हे इन्द्र ! हम तुमसे सुख चाहते हैं ।

२३२. अधराचो अहन् अहिम् । १८०२
हे इन्द्र ! तुमने वृत्र को नीचे पटककर मारा ।

२३३. अधिक्षमा विश्वरूपं यदस्य । ५८७
हे इन्द्र ! पृथिवी पर तुम्हारे नाना रूप हैं ।

२३४. अनु न जातमष्ट रोदसी । ८६२
हे इन्द्र ! द्यावापृथिवी तेरी समानता नहीं कर सकते हैं ।

२३५. अनु वावृत एक इत् । ३७२
वह इन्द्र अकेला ही सर्वत्र व्याप्त है ।

२३६. अपः प्रैरयत् सगरस्य बुध्नात् । ३३९
इन्द्र ने समुद्रतल से जल को उठाया ।

२३७. अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुः । ३१९
हे इन्द्र ! तुम अन्धकार हटाओ, आँखों को ज्योति दो ।

२३८. अभीके चिदु लोककृत् । १८०१
इन्द्र युद्ध में भी लोक-हितकारी है ।

२३९. अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र । १३८९
हे इन्द्र! तुम शत्रुरहित, स्वयं नेता और बन्धुरहित हो ।

२४०. अर्कमर्चन्तु कारवः । १५८, ७२२
स्तोतागण स्तुत्य इन्द्र की स्तुति करें ।

२४१. अर्चन्त्यर्कमर्किणः । १३४४
स्तुतिकर्ता स्तुत्य इन्द्र की स्तुति करते हैं ।

२४२. अलर्षिरातिं वसुदामुप स्तुहि । १३२०
धनदाता एवं दान के लिए तत्पर उस इन्द्र की स्तुति करो ।

२४३. अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे । १८०२
इन्द्र अजातशत्रु उत्पन्न हुआ है ।

२४४. असृग्रमिन्द्र ते गिरः । २०५
हे इन्द्र ! मैंने तेरे लिए स्तुतिवचन कहे ।

२४५. अस्तासि शत्रवे वधम् । १८०३
हे इन्द्र ! तुम शत्रु के लिए घातक अस्त्र फेंकते हो ।

२४६. अस्माँ अवन्तु ते धियः । १४२१
हे इन्द्र ! तुम्हारी सुमति हमारी रक्षा करे।

२४७. अस्माँ अव मघवन् . . . . चित्राभिरूतिभिः । ८६३
हे इन्द्र ! तुम अपनी विचित्र रक्षाओं से हमारी रक्षा करो ।

२४८. अस्माकमस्तु केवलः । १६२०
हे इन्द्र ! तुम केवल हमारे ही होकर रहो ।

२४९. अहन् अहिम् अन्वपस्ततर्द । ६१२
इन्द्र ने वृत्र को मारा और जलधारा बहाई ।

२५०. अहिं च वृत्रहावधीत् । १४५१
वृत्रनाशक इन्द्र ने वृत्र को मारा ।

२५१. आ तू न इन्द्र वृत्रहन् अस्माकमर्धमा गहि । १८१
हे वृत्रहन्ता इन्द्र ! तुम हमारे निवास-स्थान पर आवो ।

२५२. आ त्वाद्य सबर्दुघां हुवे गायत्रवेपसम् । २९५
हे इन्द्र ! कामधेनुरूप और स्तोत्र-प्रेरक तुमको मैं पुकारता हूँ ।

२५३. आदित् पितेव हूयसे । १३९०
हे इन्द्र ! तुम पिता के तुल्य बुलाए जाते हो ।

२५४. आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे । १४२१
हे इन्द्र ! तुम आमोद स्थलों पर मित्रवत् हमारी वृद्धि के लिए होओ ।

२५५. आ भुवदूती सदावृधः सखा । १६९
सदा वृद्धिशील एवं मित्र वह इन्द्र सुरक्षा के साथ हमें प्राप्त हो ।

२५६. आमासु पक्वमैरयः । १४३१
हे इन्द्र (ईश) ! तुमने कच्चे हृदयों में भी परिपक्व ज्ञान दिया है ।

२५७. आ शन्तम शन्तमाभिरभिष्टिभिः । २८२
हे सुखद इन्द्र ! तुम सुखद सहायताओं से हमें प्राप्त हो ।

२५८. आ सूर्यं रोहयो दिवि । १४३१
हे इन्द्र (ईश) ! तुमने सूर्य को द्युलोक में स्थापित किया ।

२५९. आ स्वापे स्वापिभिः । २८२
हे सुन्दर मित्र इन्द्र ! श्रेष्ठ मित्रों के साथ आवो ।

२६०. इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे । २३६
हम इन्द्र की वाणी से स्तुति करते हैं ।

२६१. इन्द्रं जजनुश्च राजसे । ३७०
योद्धाओं ने इन्द्र को राजा बनाया ।

२६२. इन्द्रं धेनुं सुदुघाम् । २९५
इन्द्र सरलता से दुहने योग्य कामधेनु है ।

२६३. इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा । २३८
बहुजन-आहूत इन्द्र को वाणी से प्रणाम करता हूँ ।

२६४. इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे । १३०
हम इन्द्र को महायुद्धों एवं छोटे युद्धों में आमन्त्रित करते हैं ।

२६५. इन्द्रं वाणीरनूषत । १९८, ७९६
हमारी वाणी ने इन्द्र की स्तुति की ।

२६६. इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् समुद्रव्यचसं गिरः । ३४३
हमारी समस्त वाणी ने समुद्रवत् व्याप्त इन्द्र का गौरव बढ़ाया ।

२६७. इन्द्रं विश्वासाहं नरं शचिष्ठं विश्ववेदसम् । ३५७
इन्द्र विश्वविजयी, नेता, परमशक्ति शाली और सर्वधनसंपन्न है ।

२६८. इन्द्रं वृत्राय हन्तवे । ४९४
वृत्र (पापों) को नष्ट करने के लिए इन्द्र को पुकारते हैं ।

२६९. इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः । १६२०
जनहित के लिए इन्द्र को सब ओर से हम आमंत्रित करते हैं ।

२७०. इन्द्रं सबाध ऊतये . . . . हुवे । ६८७
संकटों में रक्षा के लिए हम इन्द्र को पुकारते हैं ।

२७१. इन्द्रः स नो युवा सखा । १२७
वह नित्ययुवा इन्द्र हमारा मित्र है ।

२७२. इन्द्रः सूर्यमरोचयत् । १५८८
इन्द्र (ईश) ने सूर्य को प्रकाश दिया ।

२७३. इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः । २२६
इन्द्र स्तुतियों से प्रसन्न होता है और शक्तियों का अधिपति है ।

२७४. इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः । २८२
हे इन्द्र ! दृढ़ संकल्पवाली सुरक्षाओं से हमारे समीप आवो ।

२७५. इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः । २१०
हे इन्द्र ! प्रातःकाल हमें प्राप्त होओ ।

२७६. इन्द्रमभि प्र गायत । १५५, १६४, ७१३
हे मनुष्यो ! इन्द्र का गुणगान करो ।

२७७. इन्द्रमर्केभिरर्किणः । ७९६
स्तुतिकर्ता स्तुतियों से इन्द्र की उपासना करते हैं ।

२७८. इन्द्रमर्च यथा विदे । १६८, ८११, १४८९
तत्त्वज्ञ इन्द्र की पूजा करो ।

२७९. इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते । २४२
सोमरस तैयार होने पर केवल शक्तिशाली इन्द्र की स्तुति करो ।

२८०. इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च । ७९८
हे इन्द्र ! महायुद्धों में हमारी रक्षा करो ।

२८१. इन्द्र सोमं पिबा इमम् । १९१
हे इन्द्र ! इस सोमरस का पान करो ।

२८२. इन्द्रस्तुराषाड् मित्रो न जघान वृत्रं यतिर्न । ९५४
महाविजयी इन्द्र ने सूर्य और संन्यासी के तुल्य वृत्र (पापों) को नष्ट किया ।

२८३. इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचम् । ६१२
मैं इन्द्र के पराक्रमों का वर्णन करता हूँ ।

२८४. इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि च ब्रवीतन । ९५१
इन्द्र की अवश्य पूजा करो और उसके लिए स्तुतिवचन कहो ।

२८५. इन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः । १७९४
विद्वानों ने इन्द्र के लिए स्तोत्र बनाए ।

२८६. इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत । १५६
हरे अश्व वाले इन्द्र (सूर्य) के लिए मनोहर स्तुतिगान करो ।

२८७. इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत । ४४६
वृत्रनाशक ज्ञानी इन्द्र के लिए मन्त्रगान करो ।

२८८. इन्द्राय शूषमर्चत । १८०१
इन्द्र की शक्तिशाली गीत से पूजा करो ।

२८९. इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् । १०२५
ज्ञानी एवं महान् इन्द्र के लिए बृहत् नामक साममंत्र गाओ ।

२९०. इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिरे । १५८८
इन्द्र ( ईश ) में सारा संसार निहित है ।

२९१. इन्द्रेहि मत्स्यन्धसः । १८०
हे इन्द्र ! आवो और हमारे सोमरस से आनन्दित होओ ।

२९२. इन्द्र ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्रः । १८३१
इन्द्र ( सूर्य ) ज्योतिर्मय है, ज्योति ही इन्द्र ( सूर्य ) है ।

२९३. इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राणि . . . . जघान नवतीर्नव । १७९,९१३
इन्द्र ने दधीचि यति की अस्थियों से ९९ वृत्रों (पापों) को मारा ।

२९४. इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद् दिवि । ७९९
इन्द्र ( ईश ) ने दीर्घकाल तक प्रकाश के लिए सूर्य को द्युलोक में रखा ।

२९५. इन्द्रो दृढा चिदारुजः । १७१९
इन्द्र स्थिर वस्तुओं को भी नष्ट कर देता है ।

२९६. इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथत् । १५८८
इन्द्र ( ईश ) ने अपनी शक्ति से द्यावापृथिवी को फैलाया ।

२९७. इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनाम् । ५८७
इन्द्र ( ईश्वर ) संसार का और मनुष्यों का राजा है ।

२९८. इन्द्रो वज्री हिरण्ययः । ५९७, ७९७
इन्द्र वज्रधारी और तेजोमय है ।

२९९. इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री । ३५९, १२५०
इन्द्र वज्रधारी और समस्त कर्मों का आश्रय है ।

३००. इन्द्रो विश्वस्य राजति । ४५६
इन्द्र ( ईश्वर ) सारे संसार का राजा है ।

३०१. इह वा सन् उप श्रुधि । २८४
हे इन्द्र ! तुम यहाँ रहते हुए हमारी बात सुनो ।

३०२. इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु । १५८९
विद्वान् इन्द्र इस युद्ध में हमारा रक्षक हो ।

३०३. ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशम् । २३३
इन्द्र संसार का स्वामी और प्रकाश का द्रष्टा है ।

३०४. ईशानमिन्द्र तस्थुषः । २३३
हे इन्द्र ! तुम स्थावर के भी स्वामी हो ।

३०५. ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ।३८९, १३४१
इन्द्र स्वामी है और अजेय है ।

३०६. उग्रं तत् पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग । १३४२
इन्द्र यजमान को उग्र शक्ति देता है ।

३०७. उत् त्वा मन्दन्तु सोमाः । १९४
हे इन्द्र ! सोमरस तुझे आनन्दित करे ।

३०८. एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य । ३९३
हे सदाविजयी, अगोपनीय, प्रिय इन्द्र ! तुम हमारे पास आवो ।

३०९. ऐभिर्ददे वृष्ण्या पौंस्यानि । १७८४
इन सोमरसों के द्वारा इन्द्र को शक्तिवर्धक पौरुष प्राप्त हुआ ।

३१०. ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत . . . रोदसी ।१८२
द्यावापृथिवी के संचालन से इन्द्र का तेज प्रकट हुआ ।

३११. ओजिष्ठः स बले हितः । १२२३
वह इन्द्र सबसे अधिक तेजस्वी है । वह शक्ति के कार्य करता है ।

३१२. कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते । १५७
विद्वान् स्तोत्रों से इन्द्र की स्तुति करते हैं ।

३१३. क्व स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः । १४३
वह सदायुवा, सुखवर्षक, विशाल गर्दनवाला, अजेय इन्द्र कहाँ रहता है ?

३१४. गायन्ति त्वा गायत्रिणः । १३४४
हे इन्द्र ! सामगानकर्ता तेरा गुणगान करते हैं ।

३१५. गिर्वणः पाहि नः सुतम् । १९५
हे स्तोत्रों के स्वामी इन्द्र ! तुम हमारे सोमरस का पान करो ।

३१६. गोदा इद् रेवतो मदः । १०८८
उस धनी इन्द्र की प्रसन्नता हमें पशुधन देती है ।

३१७. जगृह्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवः । ३१७
हे इन्द्र ! धन के इच्छुक हम तेरा दाहिना हाथ पकड़ते हैं ।

३१८. ज्येष्ठं तद् दधिषे सहः । १७२२
हे इन्द्र ! तुम श्रेष्ठ शक्ति धारण करने वाले हो ।

३१९. तं त्वा धर्तारमोण्योः . . . . हिन्वे वाजेषु वाजिनम् । ८०४
द्यावा पृथिवी के धर्ता तुझ बलवान् इन्द्र को हम युद्ध में भेजते हैं।

३२०. तं त्वा स्तुवन्ति कवयः । ६२३
हे इन्द्र ! कवि तुम्हारी स्तुति करते हैं ।

३२१. तदिन्द्रो अर्थं चेतति, यूथेन वृष्णिरेजति । १३४५
वह परमात्मा मनुष्य के भावों को देखता है और सुखसमूह के साथ आता है ।

३२२. तद् विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम् । १४३०
वह इन्द्र भूत और भविष्य सबका नियन्ता है ।

३२३. तद् वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने । ११५
तुम सोमरस तैयार होने पर बहुस्तुत वीर इन्द्र का गुणगान करो ।

३२४. तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रम् । ४६०
मैं उग्र धनवान् उस इन्द्र को पुकारता हूँ ।

३२५. तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । ११९, १२२२
हम महान् वृत्र (पापी) को मारने के लिए इन्द्र को बलवान् बनाते हैं ।

३२६. तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे । १००२
हम महान् और छोटे युद्धों में रक्षार्थ उस इन्द्र को बुलाते हैं ।

३२७. तरणिं वो जनानाम् । २०४
वह इन्द्र लोगों का तारक है ।

३२८. तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः । १६४६
हे इन्द्र ! द्यावा-पृथिवी तेरी शक्ति और यश का गुणगान करते हैं ।

३२९. तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्य । ८१४
हे स्तुत्य इन्द्र ! तुम्हारा यश आदर्श है ।

३३०. तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः । १७९४
विद्वान् ईश्वरीय नियमों को नहीं तोड़ते ।

३३१. तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम् । ७१९
इन्द्र अतिकर्मठ, अतिदाता और अतिधनी है ।

३३२. तुविमात्रमवोभिः । ७२९
हे इन्द्र ! तुम रक्षा के द्वारा महान् हो ।

३३३. तुवीमघः संमिश्लो वीर्याय कम् । १४५९
वह इन्द्र महाधनी है और महान् शक्ति से युक्त है ।

३३४. त्रातारमिन्द्रम् अवितारमिन्द्रम् । ३३३
वह इन्द्र (ईश्वर) रक्षक और पालक है ।

३३५. त्वं दाता प्रथमो राधसाम् । १४९३
हे इन्द्र ! तुम धनदाताओं में अग्रणी हो ।

३३६. त्वं ववृष इन्दुं मदाय युज्याय सोमम् । १४७१
हे इन्द्र ! तुमने आह्लादक सोमरस विशिष्ट आनन्द के लिए बनाया है ।

३३७. त्वं सूर्यमरोचयः । १०२६
हे इन्द्र (ईश) ! तुमने सूर्य को प्रकाशित किया है ।

३३८. त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो । ११७०
हे शतक्रतु इन्द्र ! तुम हमारे माता और पिता हो ।

३३९. त्वं हिरण्ययुर्वसो । ७१८
हे इन्द्र ! तुम सुवर्ण के इच्छुक हो ।

३४०. त्वं हि शूरः सनिता । १४३४
हे इन्द्र ! तुम शूरवीर और दानी हो ।

३४१. त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः । १२०
हे इन्द्र ! तुम बल, शक्ति और ओज से उत्पन्न हुए हो ।

३४२. त्वमिन्द्राभिभूरसि । १०२६
हे इन्द्र ! तुम सबको तिरस्कृत करने वाले हो ।

३४३. त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः । ८०९
हे इन्द्र ! स्तुतिकर्ता शक्तिलाभ के लिए तुम्हें ही पुकारते हैं ।

३४४. दाता जरित्र उक्थ्यम् । ६८८
हे इन्द्र ! तुम स्तुतिकर्ता को प्रशंसनीय धन देते हो ।

३४५. देवानामिदवो महत् । १३८
देवों का यह संरक्षण महनीय है ।

३४६. देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे । १०२७
हे इन्द्र ! देवता तेरी मित्रता के लिए प्रयत्नशील रहते हैं ।

३४७. द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः । १२२३
वह इन्द्र तेजोमय, यशस्वी और सोम्य है ।

३४८. द्यौर्न प्रथिना श्रवः । १६६
उस इन्द्र का यश द्युलोक की तरह फैला हुआ है ।

३४९. धर्ता दिवः पवते । १२२८
वह इन्द्र द्युलोक का धर्ता और पवित्र करने वाला है ।

३५०. धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते । १८३६
हे इन्द्र ! परिश्रमी यजमान के लिए तुम्हारी वाणी कामधेनु है ।

३५१. न कि इन्द्र त्वदुत्तरम् । २०३
हे इन्द्र ! तुमसे बढ़कर कोई नहीं है ।

३५२. न किष्ट्वद् रथीतरः । ९५०
हे इन्द्र ! तुमसे बढ़कर कोई महारथी नहीं है ।

३५३. न किष्ट्वा नि यमद् । १६९७
हे इन्द्र ! तुम्हारा कोई नियन्ता नहीं है ।

३५४. न किष्ट्वानु मज्मना । ९५०
हे इन्द्र ! गौरव में कोई तुम्हारे समान नहीं है ।

३५५. न की राया नैवथा न भन्दना । १५११
हे इन्द्र ! ऐश्वर्य में और कान्ति में कोई तुम्हारे समान नहीं है ।

३५६. न क्येवं यथा त्वम् । २०३
हे इन्द्र ! कोई तुम्हारे जैसा नहीं है ।

३५७. न जज्ञे वीरतरस्त्वत् । १५११
हे इन्द्र ! तुमसे बढ़कर और कोई वीर उत्पन्न नहीं हुआ है ।

३५८. न ज्यायो अस्ति वृत्रहन् । २०३
हे वृत्रहन्ता इन्द्र ! तुमसे बढ़कर कोई नहीं है ।

३५९. न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डिता । १७२३
हे इन्द्र ! तुम्हारे अतिरिक्त और कोई सुखदाता नहीं है ।

३६०. न त्वामिन्द्राति रिच्यते । १९७
हे इन्द्र ! कोई तुमसे बढ़कर नहीं है ।

३६१. न त्वा वज्रिन् सहस्रं सूर्याः । ८६२
हे वज्रधारी इन्द्र ! सहस्रों सूर्य तुम्हारे बराबर नहीं हैं ।

३६२. न देवो वृतः शूर इन्द्रः । १९६
शूरवीर इन्द्र देव को कोई रोक नहीं सकता है ।

३६३. न यं दुध्रा वरन्ते न स्थिराः । ६८८
उस इन्द्र को न दुर्जन असुर और न स्थिर देव रोक सकते हैं ।

३६४. नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा । १४५१
इन्द्र ने बाहुबल से शत्रुओं के ९९ नगर नष्ट किये ।

३६५. न वि दस्यन्त्यूतयः । ८२९
इन्द्र के रक्षात्मक उपाय कभी असफल नहीं होते ।

३६६. न हि त्वदन्यद् मघवन्न आप्यं
वस्यो अस्ति पिता च नः । १७९७
हे इन्द्र ! तुम्हारे अतिरिक्त हमारा और कोई मित्र नहीं है और न कोई प्रिय पिता ।

३६७. पिबा सोममृतूँरनु । २२९
हे इन्द्र ! ऋतुओं के अनुकूल सोमपान करो ।

३६८. पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत । १२५०
इन्द्र पुरों का नाशक, युवक, कवि और अपरिमित शक्ति वाला है ।

३६९. पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम् । ७४१
इन्द्र धनवानों में श्रेष्ठ और ऐश्वर्य का स्वामी है ।

३७०. पुरूवसुर्हि मघवन् बभूविथ । ३०९
हे इन्द्र ! तुम महाधनी हो ।

३७१. पुरूवसोऽभि प्र नोनुनवुर्गिरः । १४६
हे महाधनी इन्द्र ! हम तुम्हें वाणी से प्रणाम करते हैं ।

३७२. पूर्धि चक्षुः । ३१९
हे इन्द्र ! तुम हमारे नेत्रों को ज्योति से पूर्ण करो ।

३७३. पूर्वीरिन्द्रस्य रातयः । ८२९
इन्द्र का ऐश्वर्य श्रेष्ठ है ।

३७४. प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते । २२४
ज्ञानी एवं महान् देव इन्द्र के लिए ये स्तुतिवचन हैं ।

३७५. प्रभङ्गी शूरो मघवा । १४५९
इन्द्र शत्रुभंजक और शूर है ।

३७६. प्र राधांसि चोदयते महित्वना । १५०९
इन्द्र अपनी महिमा से ऐश्वर्य को प्रेरित करता है ( देता है ) ।

३७७. बिभेद वृष्णिना, वज्रेण शतपर्वणा । १६५२
इन्द्र ने शक्ति शाली और सौ पर्व वाले वज्र से शत्रु को नष्ट किया ।

३७८. बोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम् । १७९८
हे इन्द्र ! स्तुतिकर्ता विद्वान् की स्तुति सुनो ।

३७९. ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे । ३८८, १०२५
इन्द्र ज्ञानदाता, विद्वान् और प्रशंसनीय है ।

३८०. ब्रह्मा कस्तं सपर्यति । १४२
कौन ब्रह्मा उस इन्द्र की पूजा करता है ?

३८१. ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे । १३४४
हे शतक्रतु इन्द्र ! विद्वानों ने तुमको ध्वज के तुल्य उठाया ।

३८२. ब्रह्मेन्द्राय वोचत । १६७७
इन्द्र के लिए स्तुतिवचन कहो ।

३८३. भद्रा इन्द्रस्य रातयः । १३२०
इन्द्र का दान प्रशंसनीय है ।

३८४. भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयम् । १४२२
हे बलवान् इन्द्र ! हम तुम्हारी कृपादृष्टि में हों ।

३८५. भ्यसाते शुष्मात् पृथिवी चिदद्रिवः । ३७१
हे वज्रधारी इन्द्र ! तुम्हारी शक्ति से द्यावापृथिवी काँपते हैं ।

३८६. मंहिष्ठं चर्षणीनाम् । १५५
वह इन्द्र मनुष्यों के लिए उदार दानी है ।

३८७. मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति । २३५
वह महाधनी इन्द्र हजारों का दान करता है ।

३८८. महाँ इन्द्रो य ओजसा । १३०७
वह इन्द्र तेज से महान् है ।

३८९. महोनां दाता वाजानां नृतुः । ७१५
वह विश्व को नचाने वाला इन्द्र महान् शक्तियों का दाता है ।

३९०. मा त्वा केचिन्नि येमुरिन्न पाशिनः । १७१८
हे इन्द्र ! कोई भी बाँधने वाले तुझे न बाँध सके ।

३९१. मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन् । ७३२
हे इन्द्र ! तुझे कोई मूर्ख और हँसने वाले दबा न सकें ।

३९२. मा न इन्द्र पीयत्नवे मा शर्धते परा दाः । १८०६
हे इन्द्र ! हमें निन्दक और आक्रमणकारी के हाथ न देना ।

३९३. मा नो महाधने परा वर्क् । १६५०
हे इन्द्र ! तुम हमें महायुद्ध में अकेला न छोड़ना ।

३९४. मा नो अति ख्य आ गहि । १०८९
हे इन्द्र ! तुम हमें न छोड़ना। हमारे पास आवो ।

३९५. मुमुग्ध्यस्मान् निधयेव बद्धान् । ३१९
हे इन्द्र ! पाश से बद्ध के तुल्य हम लोगों को मुक्त करो ।

३९६. यं विप्रासो वाजयन्ते स इन्द्रः । ३३७
जिसको विद्वान् शक्ति शाली बनाते हैं, वह इन्द्र है ।

३९७. य एक इद् विदयते वसु मर्ताय दाशुषे । १३४१
वह अकेला इन्द्र ही दानी मनुष्यों को धन देता है ।

३९८. यत् सानोः सान्वारुहो भूर्यस्पष्ट कर्त्वम् । १३४५
इन्द्र (परमात्मा) के लिए ही साधक पर्वत की एक चोटी से दूसरी चोटी पर चढ़ते हैं और अनेक कर्म करते हैं ।

३९९. यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् । १८३४
हे इन्द्र ! मैं तुम्हारी तरह धन का एकमात्र स्वामी बनूं ।

४००. यद् हंसि वृत्रमोजसा शचीपते । ३९१
हे बुद्धि के स्वामी इन्द्र ! तुम अपनी शक्ति से वृत्र को मारते हो ।

४०१. यस्मिन् विश्वा अधि श्रियः । ७२३
इन्द्र में ही सारी संपत्तियां निहित हैं ।

४०२. युधेदापित्वमिच्छसे । १३८९
इन्द्र योद्धा से ही मित्रता चाहता है ।

४०३. येन ज्योतिरजनयन् ऋतावृधः । २५८

उस इन्द्र से ही विद्वानों ने अक्षय ज्योति उत्पन्न की ।

४०४. येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि । ९२८

हे हरे घोड़े वाले इन्द्र ! तुम सोमरस की शक्ति से वृत्रों को मारते हो ।

४०५. येभिरौक्षद् वृत्रहत्याय वज्री । १७८४

सोमरस से वज्रधारी इन्द्र वृत्रनाश के लिए सशक्त हुआ ।

४०६. यो अस्य कामं विधतो न रोषति । १३२०

जो उसकी इच्छा पूरी करते हैं, उन पर इन्द्र क्रोध नहीं करता ।

४०७. वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतारः । २३०

हे इन्द्र ! हम तुम्हारी स्तुति करने वाले हैं ।

४०८. वसु नकिष्टदा मिनाति ते । २९६

हे इन्द्र ! तुम्हारे द्वारा दिए धन को कोई नष्ट नहीं कर सकता ।

४०९. वाजेवाजे हवामहे, सखाय इन्द्रमूतये । १६३

हे मित्रो ! प्रत्येक युद्ध में हम रक्षार्थ इन्द्र को पुकारते हैं ।

४१०. वि गोभिरद्रिमैरयत् । ७९९

इन्द्र (सूर्य) ने किरणों से पर्वत (मेघों) को गतिशील किया ।

४११. विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम् । ७२९

हम जानते हैं कि इन्द्र अतिकर्मठ, उदारदाता और महाधनी है ।

४१२. विभ्राजं ज्योतिषा स्वरगच्छः । १०२७

हे इन्द्र (सूर्य) ! ज्योति से प्रकाशित तुम द्युलोक में गए ।

४१३. विश्वं पुष्यसि वार्यम् । १८०२

हे इन्द्र ! तुम सभी उत्तम वस्तुओं को पुष्ट करते हो ।

४१४. विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि । १९२६

हे इन्द्र ! तुम विश्वदेवमय, महान् और विश्वकर्मा हो ।

४१५. विश्वाः पृतना अभिभूतरम् । ९३०
हे इन्द्र ! तुम सभी शत्रुसेनाओं को तिरस्कृत करते हो ।

४१६. विश्वासाहं शतक्रतुम् । १५५, ७१३
हे इन्द्र ! तुम शतक्रतु और सर्व-विजयी हो ।

४१७. विष्वक् तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् । ३३९
उस इन्द्र ने द्यावापृथिवी का चारों ओर से रोका ।

४१८. वृत्रस्य दोधतः शिरो बिभेद वृष्णिना । १६५२
इन्द्र ने उग्र वृत्र का शिर शक्तिशाली वज्र से काटा ।

४१९. शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रम् । ३२९
हम प्रसन्नता से धनवान इन्द्र का आह्वान करते हैं ।

४२०. श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम् । १४५०
इन्द्र महाधनी, सुखवर्षक और पराक्रम के काम करने वाला है ।

४२१. श्रुतो युवा स इन्द्रः । ४४५
इन्द्र सदा-युवक के रूप में विख्यात है ।

४२२. सङ्गे समत्सु वृत्रहा । १८०१
वह इन्द्र संघर्षों और युद्धों में वृत्रों (पापियों) का नाशक है ।

४२३. सदा व इन्द्रश्चर्कृषत् । १९६
इन्द्र सदा तुम्हारी रक्षा करता है ।

४२४. स न इन्द्रः शिवः सखा । १४५२
वह इन्द्र हमारा हितकर मित्र है ।

४२५. समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । १६५१
सारी प्रजायें उसके क्रोध के आगे झुक जाती हैं ।

४२६. सर्वं तदिन्द्र ते वशे । १२६
हे इन्द्र ! सब कुछ तेरे वश में है ।

४२७. स वाजेषु प्र नोऽविषत् । १००२
वह इन्द्र युद्धों में हमारी रक्षा करे ।

४२८. सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः । १२५२
इन्द्र का दान सहस्रों या उससे भी अधिक रूपों में है ।

४२९. सहावान् इन्द्र सानसिः पृतनाषाडमर्त्यः । १४३३
हे इन्द्र ! तुम बलवान्, धनदाता, शत्रुजेता और अमर हो ।

४३०. सहावान् दस्युमव्रतमोषः । १४३४
हे इन्द्र ! बलवान् तुम व्रतहीन दासों को भून देते हो ।

४३१. स हि स्थिरो विचर्षणिः । २००
इन्द्र अमर और कर्मठ है ।

४३२. सुन्वते भूरि ते वसु । १००३
हे इन्द्र ! तुम्हारा धन परिश्रमी के लिए है ।

४३३. सुरूपकृत्नुमूतये . . . . जुहूमसि द्यविद्यवि । १६०, १०८७
हम सुन्दर कर्म करने वाले इन्द्र को प्रतिदिन रक्षार्थ बुलाते हैं ।

४३४. सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा । ३१६
हे इन्द्र ! सोमरस निकालकर हम तेरी स्तुति करते हैं ।

४३५. सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् । १६८, १४८९
हे इन्द्र ! तुम सत्य के पुत्र और सज्जनों के स्वामी हो ।

४३६. सोमकामं हि ते मनः । १२३४
हे इन्द्र ! तुम्हारा मन सोमरस का इच्छुक है ।

४३७. सोमा इन्द्रममन्दिषुः । १६७८
सोमरस ने इन्द्र का मन प्रसन्न किया ।

४३८. हवामहे इन्द्रं धनस्य सातये । १५८७
हम धन-प्राप्ति के लिए इन्द्र का आह्वान करते हैं ।

४३९. हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रम् । ३३३
मैं बहुतों के द्वारा आहूत, शक्तिशाली इन्द्र को बुलाता हूँ ।

## (ग) सोम देवता

४४०. अजनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः । ५४२, १२५५
सोम (ईश्वर) ने सूर्य को प्रकाश दिया ।

४४१. अजीजनो हि पवमान सूर्यम् । १३६५
हे पवित्र सोम (ईश्वर) ! तुमने सूर्य को उत्पन्न किया ।

४४२. अदधादिन्द्रे पवमान ओजः । ५४२, १२५५
सोम ने इन्द्र को तेज दिया ।

४४३. अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः । १६९०
वह सोम विद्वानों के द्वारा स्तुत्य है ।

४४४. अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः । १२१३
सोम अदाता शत्रुओं को नष्ट करता हुआ पवित्र करता है ।

४४५. अपसेधन् दुरिता सोम नो मृड । १३१८
हे सोम ! दुर्गुणों को दूर करते हुए हमें सुखी रखो ।

४४६. अभि प्रियाणि पवते चनोहितः । ७००
वह कृपालु सोम प्रिय वस्तुओं को पवित्र करता है ।

४४७. अभि व्रतानि पवते पुनानः । १०२१
वह पवित्र करने वाला सोम व्रतों को पवित्र करता है ।

४४८. अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति । ५४६, ८१८
यह सोम पोषक, ऐश्वर्यरूप और समृद्ध है। यह पवित्र करता हुआ बहता है ।

४४९. आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः । १०४५
यह सोम यज्ञ की अग्रगण्य आत्मा है ।

४५०. आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति । ८६१
हे सोम ! स्वच्छ किए जाते हुए तुम सकुशल हमें पवित्र करो ।

४५१. आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदसि । ५११, ६७५
हे सोम ! तुम रत्नधारक हो। तुम सत्य के मूल में रहते हो ।

४५२. इन्दवः स्वर्विदः । ६९४
सोम प्रकाशमय है ।

४५३. इन्दुं देवा अयासिषुः । ४८७, १३३५
देवगण सोम की शरण में गए ।

४५४. इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मतिः । ४८१
सोम चेतन, प्रिय और कवियों का बुद्धिरूप है । वह पवित्र करता है ।

४५५. इन्दुः सत्राजिदस्तृतः । १३२४
सोम पूर्णविजयी और अजेय है ।

४५६. इन्दुरिन्द्राय धीयते । ४८९
सोमरस इन्द्र के लिए रखा जाता है ।

४५७. इन्दुर्हिन्वानो अज्यते । १०९९
प्रेरणा दिए जाने पर सोम (आत्मा से) मिल जाता है ।

४५८. उत्सो देवो हिरण्ययः । ५११
सोम ऐश्वर्य का स्वर्णिम स्रोत है ।

४५९. एभिर्वर्धास इन्दुभिः । ७
हे अग्नि ! तुम इस सोमरस से बढ़ते हो ।

४६०. एष दिवं वि धावति । १२६२
यह सोम द्युलोक में विचरण करता है ।

४६१. एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयते । १२५६
सोम (आत्मा) अमर देवता है और पक्षी की तरह उड़ता है ।

४६२. एष देवो विपा कृतोऽतिह्वरांसि धावति । १२६१
सोम ज्ञान के द्वारा कुटिल मार्गों को पार करता हुआ जाता है ।

४६३. एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः। १२८०
बलवान् सोम सर्वज्ञ और मन का स्वामी है। यह लोगों द्वारा प्रेरित होता है।

४६४. कविमिव प्रशंस्यम्। १२४५
सोम कवि के तुल्य प्रशंसनीय है।

४६५. जघ्निर्वृत्रममित्रियं सस्निर्वाजं दिवे दिवे। ८१६
सोम प्रतिदिन शत्रुरूप वृत्र (पापों) को मारता है और शक्ति देता है।

४६६. जनयन् प्रजा भुवनस्य गोपाः। १२५३
सोम संसार का रक्षक है और प्रजा का जन्मदाता है।

४६७. जनाय यातयन्निषः। ८९९
सोम मनुष्यों को अन्न देता है।

४६८. जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य। ५२७, ९४३
सोम (ईश्वर) अग्नि और सूर्य का जनक है।

४६९. जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः। ५२७, ९४३
सोम (ईश्वर) द्युलोक और पृथिवी का जनक है।

४७०. जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः। ५२७, ९४३
सोम (ईश्वर) इन्द्र और विष्णु का जनक है।

४७१. जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम्। ५१४
सोम जागरूक है और मधुमय कोश की ओर जाता है।

४७२. तवाहं सोम रारण सख्ये। ५१६
हे सोम (ईश्वर)! मैं तुम्हारी मित्रता में प्रसन्न हूँ।

४७३. तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे। ७७७
हे क्रान्तदर्शी सोम (ईश)! तेरी महिमा के लिए ये सारे लोक हैं।

४७४. त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ। ६०४
हे सोम (ईश)! तुमने प्रकाश से अन्धकार को दूर किया।

४७५. त्वं द्यां च महिव्रत पृथिवीं चाति जभ्रिषे । १०१८
हे महाव्रती सोम (ईश) ! तुम द्यावापृथिवी को धारण करते हो ।

४७६. त्वं सोमासि धारयुः । १३२३
हे सोम (ईश) ! तुम (संसार के) धारक हो ।

४७७. त्वमपो अजनयस्त्वं गाः । ६०४
हे सोम (ईश) तुमने पृथिवी और जल को उत्पन्न किया ।

४७८. त्वमातनोरुर्वन्तरिक्षम् । ६०४
हे सोम (ईश) ! तुमने विशाल अन्तरिक्ष को फैलाया ।

४७९. त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वाः . . . . अजनयः । ६०४
हे सोम (ईश) ! तुमने सारी ओषधियों को उत्पन्न किया है ।

४८०. दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः । १२४३
हे सोम ! तुम द्युलोक के धर्ता, शक्तिशाली और अमृतरूप हो ।

४८१. दुहान ऊधर्दिव्यं मधु । ६७६
हे सोम ! तुम अपने बांक (स्तन) से दिव्य मधु क्षरित करते हो ।

४८२. देवान् मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम । १२५४
हे देव सोम ! तुम द्यावापृथिवी और देवों को आनन्दित करते हो ।

४८३. देवावीरघशंसहा । ८१५, ९६७, १२९१
हे सोम ! तुम देवप्रिय और पापी के नाशक हो ।

४८४. देवेभ्यः सोम मत्सरः । ५२१
हे सोम ! तुम देवों को आनन्दित करने वाले हो ।

४८५. देवेभ्यो अनुकामकृत् । १४४७
हे सोम ! तुम देवों के इच्छानुसार काम करने वाले हो ।

४८६. धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसः । ५५८
यह क्रियाशील सोमरस द्युलोक का धारक है और पवित्र करता है ।

४८७. ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः । ८८७
सोम (ईश) निश्चल है । इसकी ध्वजाएँ चारों ओर फैली हैं ।

४८८. नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे । १३३१
सोमरस कुशल मनुष्य और आसनस्थ वीर को दिया जाता है ।

४८९. पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि । ८८८
सोम स्वामी है और सारे संसार का राजा है ।

४९०. पतिर्विश्वस्य भूमनः । ५४६, ८१८
सोम समस्त संसार का स्वामी है ।

४९१. पवस्व देव आयुषक् । ४८३
हे देव सोम ! तुम जीवनशक्ति के साथ पवित्र करो ।

४९२. पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै । १२४२
हे सोम ! तुम द्यावापृथिवी और देवों के लिए हमें पवित्र करो ।

४९३. पवस्व सोम महान् समुद्रः । १२४१
हे सोम ! तुम महान् समुद्र हो। तुम पवित्र करो ।

४९४. पिता देवानां जनिता सुदक्षः । ६७८
वह सोम अतिदक्ष है। वह देवों का पिता और उत्पादक है ।

४९५. पिता देवानां विश्वाभि धाम । १२४१
हे सोम ! तुम देवों के पिता हो। सारे स्थानों को पवित्र करो ।

४९६. पुनानः सोम जागृविः । ५१९
हे सोम ! तुम सदा जागरूक और पवित्रकर्ता हो ।

४९७. प्रभोष्टे सतः परि यन्ति केतवः । ८८८
हे सोम (ईश) ! तुम स्वामी हो। तुम्हारा ज्ञान सर्वत्र फैला है ।

४९८. प्र हिन्वानो जनिता रोदस्योः । ५३६
हे सोम ! तुम प्रेरक हो और द्यावापृथिवी के उत्पादक हो ।

४९९. प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् । १२४४
हे सोम ! तुम अतिप्रिय अतिथि और प्रिय मित्र के तुल्य हो, मैं तुम्हारी स्तुति करता हूँ ।

५००. मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयांसि च । ५२२
सोम इन्द्रियरूपी घोड़ों को आनन्द देता है, बुद्धि और प्रेम देता है ।

५०१. मत्सि वायुमिष्टये राधसे नः । १२५४
हे सोम ! तुम हमारे इष्ट सुख और धन के लिए वायु को प्रसन्न करते हो ।

५०२. मधु क्षरन् । ८२२
सोम मधुरता प्रवाहित करता है ।

५०३. मधुमान् इन्द्र सोमः । ५३१
हे इन्द्र ! यह सोम तुम्हारे लिए मधुर है ।

५०४. युवं हि स्थः स्वःपती इन्द्रश्च सोम गोपती । १००१
हे इन्द्र और सोम ! तुम दोनों इन्द्रियों और प्रकाश के स्वामी हो ।

५०५. रक्षांसि . . . . अपजङ्घनत् । १४३९
सोम राक्षसों को नष्ट करता है ।

५०६. रत्नधा दयते वार्याणि । ५२८
सोम रत्नों का धारक है और अभीष्ट धन देता है ।

५०७. विघ्नन्तो दुरिता पुरु । ८३१
ये सोम बड़े पापों को भी नष्ट करते हैं ।

५०८. विश्वा वसु हस्तयोरादधानः । ५३६
सोम के दोनों हाथों में समस्त ऐश्वर्य है ।

५०९. विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः । ६७८
सोम द्युलोक का आश्रय और पृथिवी का धारक है ।

५१०. व्यख्यद् रोदसी उभे । ५४६, ८१८
सोम द्यावापृथिवी को देखता है ।

५११. शुचिः पावक उच्यते सोमः । ९६७
सोम पवित्र और शुद्ध करने वाला कहा गया है ।

५१२. सं सूर्येण दिद्युते । १०४२
सोमरस सूर्य के प्रकाश से चमका ।

५१३. स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे । १४८६
सोमरस ने इन्द्र को महान् कर्म करने के लिए शक्ति दी ।

५१४. सखायो मदाय पुनानमभि गायत । १०९८
हे मित्रो ! तुम आनन्द के लिए पवित्रकर्ता सोम का गुणगान करो ।

५१५. स वर्धिता वर्धनः पूयमानः । १३५९
स्वच्छ किया हुआ सोमरस शक्तिप्रद और वृद्धिकारक है ।

५१६. सहस्रदा शतदाः भूरिदावा । ५३१
वह सोम सैकड़ों, सहस्रों और अनेक अभीष्टों का दाता है ।

५१७. सुते सचा विश्वे पिबन्तु कामिनः । २४१
सभी इच्छुक मरुत् देवता साथ ही सोमरस पीएँ ।

५१८. सोमं यन्ति मतयो वावशानाः । ५२५, ८५९
जिज्ञासु बुद्धियाँ सोम (ईश) के पास जाती हैं ।

५१९. सोमं वीराय शूराय । १२३, १६५७
सोमरस शूर-वीरों के लिए है ।

५२०. सोमः पवते जनिता मतीनाम् । ५२७, ९४३
सोमरस पवित्र करता है और बुद्धिवर्धक है ।

५२१. सोम उ ष्वाणः सोतृभिः । ५१५
यज्ञकर्ताओं द्वारा सोमरस निकाला जाता है ।

५२२. सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजाभ्यः । १२४२
हे सोम ! ( ईश ) तुम द्युलोक पृथिवी और प्रजाओं के लिए सुखद होओ ।

५२३. सोमाय गाथमर्चत । १४४४
सोम (ईश) की स्तोत्रों से पूजा करो ।

५२४. सोमासः कृण्वते पथः । ८१९
सोमरस यजमान के लिये मार्ग बनाता है ।

५२५. सोमो य उत्तमं हविः । १३१३
सोमरस उत्तम हवि है ।

५२६. स्वायुधः पवते देव इन्दुः । ६७८
सोम देवता शस्त्रधारी है और पवित्र करता है ।

५२७. हरिं क्रीडन्तमभ्यनूषत । ११५३
क्रीडा करते हुए सोम की यजमानों ने स्तुति की ।

## (घ) सूर्य देवता

५२८. अमित्रहा वृत्रहा । १४५४
सूर्य शत्रुओं और वृत्र (पापी, कीटाणु) को नष्ट करता है।

५२९. अस्तारमेषि सूर्य । १२५
हे सूर्य ! तुम दानी एवं पराक्रमी को प्राप्त होते हो ।

५३०. इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमम् । १४५५
सूर्य सर्वश्रेष्ठ और उत्तम प्रकाशों का प्रकाशक है ।

५३१. उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । ३१
उस सर्वज्ञ देव सूर्य को उसकी किरणें सर्वत्र ले जाती हैं ।

५३२. उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम् । १४५५
उस सूर्य का अक्षय ओज और पराक्रम चारों ओर फैलता है ।

५३३. कविक्रतुमर्चामि सत्यसवम् । ४६४
मैं क्रान्तदर्शी और सदा प्रेरणा देने वाले सूर्य की उपासना करता हूँ ।

५३४. ज्योतिष्कृदसि सूर्य । ६३५
हे सूर्य ! तुम प्रकाश करने वाले हो ।

५३५. दस्युहन्तमं ज्योतिर्जज्ञे असुरहा सपत्नहा । १४५४
दस्यु, शत्रु और असुरों का नाशक, श्रेष्ठ ज्योतिरूप सूर्य उदय हुआ ।

५३६. प्रत्यङ् उदेषि मानुषान्, प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे । ६३६
हे सूर्य ! तुम मनुष्यों और संसार के सम्मुख प्रकाश के लिए उदय होते हो ।

५३७. बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि । १७८९
हे सूर्य ! तुम वस्तुतः अपने यश से महान् हो ।

५३८. बण्महाँ असि सूर्य । २७६, १७८८
हे सूर्य ! तुम वस्तुतः महान् हो ।

५३९. महस्ते सतो महिमा पनिष्टम । १७८८
हे सूर्य ! हम तुझ महान् की महिमा गाते हैं ।

५४०. मह्ना देव महाँ असि । २७६, १७८८
हे सूर्य देव ! तुम अपनी महिमा से महान् हो ।

५४१. मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितः । १७८९
हे सूर्य ! तुम अपनी महिमा से देवों के शक्तिशाली पुरोहित हो ।

५४२. विभु ज्योतिरदाभ्यम् । १७८९
हे सूर्य ! तुम अधृष्य एवं व्यापक ज्योति हो ।

५४३. विश्वजिद् धनजिदुच्यते बृहत् । १४५५
हे सूर्य ! तुम महान् विश्वविजेता और धन-जेता कहे जाते हो ।

५४४. विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृशे । १४५५
संसार का प्रकाशक, स्वयं प्रकाशमान, महान् सूर्य प्रकाश देता है ।

५४५. सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । ६४०
हे देव सूर्य ! सात किरणरूपी घोड़े तेरे रथ को ढोते हैं ।

५४६. सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः । १८३१
सूर्य ज्योतिरूप है। ज्योति ही सूर्य है ।

## (ङ) वरुण देवता

५४७. आदिद् वन्देत वरुणं विपा गिरा । २८८
ज्ञानयुक्त वाणी से वरुण देव की वन्दना करो ।

५४८. इमं मे वरुण श्रुधी हवम् अद्या च मृडय । १५८५
हे वरुण ! हमारी यह प्रार्थना सुनो और हमें सुख दो ।

५४९. त्वामवस्युरा चके । १५८५
हे वरुण ! सुरक्षा के लिए मैं तुम्हें पुकारता हूँ ।

५५०. धर्तारं विव्रतानाम् । २८८
हे वरुण ! तुम व्रतहीनों (पथच्युतों) के नियन्ता हो ।

## (च) मित्र-वरुण देवता

५५१. अर्षा मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा । ८५७
हे सोम ! तुम मित्र और वरुण के नियमानुसार चलो ।

५५२. ऋतस्य ज्योतिषस्पती, ता मित्रावरुणा हुवे । ७९४
मित्र और वरुण सत्य और प्रकाश के स्वामी हैं। इन्हें बुलाता हूँ ।

५५३. ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा । ८४८
मित्र और वरुण सत्य से ऋततत्त्व के वर्धक हैं और ऋत के ज्ञाता हैं ।

५५४. ऋतेन यावृतावृधौ । ७९४
मित्र-वरुण सत्य से ऋततत्त्व के वर्धक हैं ।

५५५. क्रतुं बृहन्तमाशाथे । ८४८
मित्र-वरुण सभी महान् कर्मों में व्याप्त हैं ।

५५६. ता सम्राजा घृतासुती । ९१२
मित्र-वरुण सम्राट् हैं और घृत की आहुति वाले हैं ।

५५७. दक्षं दधाते अपसम् । ८४९
मित्र-वरुण ज्ञानयुक्त कर्म करने वाले हैं ।

५५८. पातं नो मित्रा पायुभिः । ९८७
मित्र-वरुण अपने संरक्षण से हमारी रक्षा करें ।

५५९. मध्वा रजांसि सुक्रतू । २२०
हे श्रेष्ठ कर्म करने वाले मित्र-वरुण ! लोकों को मधु से सींचो ।

५६०. मह्ना दक्षस्य राजथः । ६६४
मित्र-वरुण अपने ज्ञान की महिमा से सुशोभित हैं ।

५६१. मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । ८४७
मैं पवित्र-हृदय मित्र और शत्रुनाशक वरुण का आह्वान करता हूँ।

## (छ) अश्विनौ देवता

५६२. अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू । ३०४
मैं शक्तिशाली अश्विनी का रक्षार्थ आह्वान करता हूँ ।

५६३. आ नो रत्नानि बिभ्रतावश्विना गच्छतं युवम् । १७४५
रत्नों को धारण करने वाले दोनों अश्विनी हमारे पास आवें ।

५६४. ज्योतिर्जनाय चक्रथुः । १७३६
अश्विनी जनमात्र के लिए प्रकाश करते हैं ।

५६५. न संस्कृतं प्र मिमीतः । १७५३
अश्विनी सुसंस्कृत व्यक्ति को हानि नहीं पहुँचाते हैं ।

५६६. युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा । ७५४
हे नायक अश्विनी ! तुम लोगों को बहुविध भोजन देते हो ।

५६७. विशं विशं हि गच्छथः । ३०४
हे अश्विनी ! तुम प्रत्येक प्रजाजन के पास जाते हो ।

५६८. स्तुषे वामश्विना बृहत् । १७८
हे अश्विनी ! मैं तुम दोनों की बहुत स्तुति करता हूँ ।

## (ज) विष्णु देवता

**५६९. अतो धर्माणि धारयन् । १६७०**
वह विष्णु सभी धर्मों (शाश्वत नियमों) को धारण करता है ।

**५७०. इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । २२२, १६६९**
विष्णु ने पराक्रम किया और तीन स्थानों पर अपने पैर रखे ।

**५७१. इन्द्रस्य युज्यः सखा । १६७१**
विष्णु (ईश) इन्द्र (जीव) का परम मित्र है ।

**५७२. तद् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । १६७३**
उस विष्णु को ज्ञानी, भक्त और जागरूक ही हृदय में प्रकाशित करते हैं ।

**५७३. तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । १६७२**
विष्णु (ईश) के परमपद को ज्ञानी जन ही देख पाते हैं ।

**५७४. त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । १६७०**
इन्द्रियरक्षक और अधृष्य विष्णु ने तीन पैरों से पराक्रम किया ।

**५७५. प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे । ४६२**
हमारी स्तुतियाँ महान् विष्णु को प्राप्त हों ।

**५७६. वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे । १६२७**
हे विष्णु ! हमारी स्तुतियुक्त वाणियाँ तेरा गुण-वर्धन करें ।

**५७७. विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । १६७१**
विष्णु के कर्मों को देखो, इनके द्वारा वह मनुष्यों के कर्मों को देखता है ।

## (झ) उषा देवता

**५७८. अथा नो विश्वा सौभगान्या वह । १७३३**
हे उषा ! हमें सभी प्रकार का सौभाग्य दो ।

५७९. **अपो मही वृणुते चक्षुषा तमः । ३०३, ७५१**
यह महान् उषा हमारे नेत्रों से अंधकार दूर करती है ।

५८०. **इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् । १७४९**
यह प्रकाशों में सर्वश्रेष्ठ प्रकाश उषा प्रकट हुई ।

५८१. **इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे । १७५७**
उषा सत्कर्मी और दानी को अन्न (समृद्धि) देती है ।

५८२. **उत सखाऽस्यश्विनोः उत माता गवामसि । १७२७**
हे उषा ! तुम अश्विनी की मित्र और गायों की माता हो ।

५८३. **उतोषो वस्व ईशिषे । १७२७**
हे उषा ! तुम ऐश्वर्य की स्वामिनी हो ।

५८४. **उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः । १७८**
द्युलोक की प्रिय अपूर्व उषा प्रकट होती है ।

५८५. **ज्योतिष्कृणोति सूनरी । ३०३, ७५१**
यह सुन्दरी उषा प्रकाश फैलाती है।

५८६. **तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे । १७५१**
रात्रि और उषा देवनिर्धारित मार्ग पर क्रमशः चलती हैं ।

५८७. **द्यावा वर्णं चरत आमिनाने । १७५०**
रात्रि और उषा एक दूसरे के वर्ण (रंग, प्रकाश-अन्धकार) को नष्ट करती हुई आकाश में घूमती हैं ।

५८८. **न मेथेते न तस्थतुः सुमेके । १७५१**
सुदृढ़ रात्रि-उषा न रुकती हैं और न परस्पर हानि पहुँचाती हैं ।

५८९. **महे नो अद्य बोधयोषो राये । ४२१, १७४०**
हे उषा ! हमें महान् समृद्धि के लिए प्रबुद्ध करो ।

५९०. **यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि । ४२१, १७४०**
हे उषा ! तुमने हमें महान् यश के लिए प्रबुद्ध किया ।

५९१. **रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति । १७३२**
हे उदार उषा ! तुम हमारे लिए समृद्धिशाली होकर प्रकाशित हो ।

५९२. **सखा भूदश्विनोरुषाः । १७२६**
उषा अश्विनी देवों की मित्र है ।

५९३. **समानबन्धू अमृते अनूची । १७५०**
रात्रि–उषा ये सगोत्र, अमर और आगे-पीछे चलने वाली हैं ।

५९४. **समानो अध्वा स्वस्रोरनन्तः । १७५१**
रात्रि और उषा, इन दोनों बहिनों का अनन्त एक ही मार्ग है ।

## (ञ) अदिति देवता

५९५. **अदितिरूत्यागमत् । १०२**
अदिति देवी संरक्षण के साथ हमारे पास आवे ।

५९६. **सा शन्ताता मयस्करदप स्रिधः । १०२**
वह अदिति देवी शत्रुओं को नष्ट करके शान्तियुक्त सुख दे ।

## (ट) सरस्वती देवता

५९७. **पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । १८९**
सरस्वती अपनी शक्तियों से शक्तिशालिनी और पवित्रकर्ता है ।

५९८. **सप्तस्वसा सुजुष्टा सरस्वती । १४६१**
विद्वानों से सेवित सरस्वती सात बहिनों (५ ज्ञानेन्द्रिय, मन, बुद्धि) वाली है ।

## (ठ) द्यावापृथिवी देवता

५९९. **अजरे भूरिरेतसा । ३७८**
द्यावापृथिवी अमर और महाशक्तिशाली हैं ।

६००. **उर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा । ३७८**
द्यावापृथिवी बहुत विस्तृत मधुदात्री और सुरूप हैं ।

६०१. ते नो मुञ्चतमंहसः । ६२२
द्यावापृथिवी हमें पापों से मुक्त करें ।

६०२. द्यावापृथिवी भवतं स्योने । ६२२
द्यावापृथिवी हमारे लिए सुखद हों ।

६०३. द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते । ३७८
द्यावापृथिवी वरुण के नियम से रुके हुए हैं ।

६०४. मन्ये वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ । ६२२
मैं द्यावापृथिवी को उत्तम पोषक मानता हूँ ।

६०५. ये अप्रथेथाम् अमितमभि योजनम् । ६२२
द्यावापृथिवी अनन्त मीलों तक फैले हुए हैं ।

## (ड) सविता देवता

६०६. प्रासावीद् देवः सविता जगत् पृथक् । १७५८
देव सविता जगत् के प्रत्येक अणु को प्रेरणा देता है ।

६०७. स्तुहि देवं सवितारम् । १७७
देव सविता की स्तुति करो ।

## (ढ) इन्द्राग्नी देवता

६०८. इन्द्राग्नी न मर्धतः । ८५३
इन्द्र और अग्नि कभी प्रमाद नहीं करते हैं ।

६०९. उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे । ८५४
हम उग्र और शत्रुनाशक इन्द्र और अग्नि का आह्वान करते हैं ।

६१०. तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च । १५७८
इन्द्राग्नी का सहवास और प्रेम शक्तिवर्धक है ।

६११. युवोरप्तूर्यं हितम् । १५७८
इन्द्राग्नी में प्रेरकत्व विद्यमान है ।

६१२. **हथो वृत्राण्यार्या हथो दासानि सत्पती । ८५५**
इन्द्राग्नी आर्य हैं और सज्जनों के रक्षक हैं। ये पापी और नीचों के नाशक हैं ।

## (ण) रात्रि-उषा देवता

६१३. **अभूद् भद्रा निवेशनी विश्वस्य जगती रात्री । ६०८**
रात्रि सारे संसार को सुखद विश्राम देने वाली है ।

६१४. **नक्तोषासा समनसा विरूपे । १७५१**
रात्रि और उषा सहृदय और विभिन्न रूप वाली हैं ।

# (३) आचारशिक्षा

## (क) सत्य

६१५. **ऊह्याथे सनाद् ऋतम् । १५९७**
द्यावापृथिवी सदा ऋत को धारण करते हैं ।

६१६. **ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते । १४६६**
मित्र-वरुण ऋत को ऋत से मिलाते हुए शक्ति वर्धक ज्ञान देते हैं ।

६१७. **ऋतस्य जिह्वा, पवते मधु प्रियम् । ७०१**
सत्य वचन प्रिय मधुरता देता है ।

६१८. **कदा नः सूनृतावतः करः । ४१६**
हे इन्द्र ! तुम हमें कब सत्यवादी करोगे ?

६१९. **चारूणि चक्रे यद् ऋतैरवर्धत । ५६०, १४२३**
सत्य से वृद्धि हुई और उससे श्रेष्ठ कर्म किए ।

६२०. **तरत् समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत् । ८५७**
राजा सोम महान् सत्यरूप है। वह सत्य की तरंगों से समुद्र पार करता है ।

६२१. दिवो धरुणे सत्यमर्पितम् । १४५४
द्युलोक के धारक सूर्य में सत्य भरा हुआ है ।

६२२. प्र देव्येतु सूनृता । ५६
सत्यवाणीरूपी देवी हमें प्राप्त हो ।

६२३. प्र यन्ति धीतयः, ऋतस्य पथ्या अनु । १५७७
इन्द्राग्नी की कृपा से बुद्धि सत्य के मार्ग पर चलती है ।

६२४. प्र हिन्वान ऋतं बृहत् । ८५७
महान् सत्य को प्रेरित करते हुए आगे बढ़ो ।

६२५. योनावृतस्य सीदत । ११९५
सत्य की निष्ठा में रहो ।

६२६. सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा संसृजामसि । ६२४
सत्यरूपी ब्रह्म का जो तेज है, उससे मुझे युक्त करो ।

६२७. सत्ये विधर्मन् वाजी पवस्व । १२४३
हे शक्तिशाली सोम ! तुम सत्यरूपी धर्म में रहकर हमें पवित्र करो ।

६२८. सद्माभि सत्यो अध्वरः । ११३०
यज्ञ सत्यरूप है । वह प्रत्येक घर में प्रवेश करे ।

## (ख) सद्गुण

६२९. अग्ने पवस्व स्वपा । १५२०
हे श्रेष्ठ कर्म वाले अग्नि ! हमें पवित्र करो ।

६३०. आ नो भर सुवितम् । ३१६
हे इन्द्र ! हमें सद्गुण दो ।

६३१. उत्तिष्ठन् ओजसा सह । ९८८
अपनी तेजस्विता से उठो ।

६३२. उरुकृद् उरु णस्कृधि । १६४९
हे महान् कर्म करने वाले अग्नि ! हमें महान् बनाओ ।

६३३. चारुं सुकृत्ययेमहे । ८३६
हम श्रेष्ठ सोम को सत्कर्मों से प्राप्त करते हैं ।

६३४. तरत् स मन्दी धावति । १०५७
प्रसन्नचित्त व्यक्ति तैरता हुआ सा चलता है ।

६३५. त्वां रिहन्ति धीतयो हरिं पवित्रे अद्रुहः । १०१७
पवित्र स्थान पर द्रोहरहित बुद्धि हरि का रसास्वाद करती है ।

६३६. न कि देवा इनीमसि । १७६
हे देवो ! हम कभी त्रुटि न करें ।

६३७. न क्या योपयामसि । १७६
हे देवो ! हम कभी प्रमाद न करें ।

६३८. पुरो अग्निं धिया दधे । ४६१
मैं ज्ञानपूर्वक अग्नि को अपना पुरोहित बनाता हूँ ।

६३९. भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । १८७४
हे देवो! हम कान से शुभ बातें सुनें ।

६४०. भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । १८७४
हे पूज्य देवो ! हम आखों से शुभ वस्तुएँ देखें ।

६४१. मन्त्रश्रुत्यं चरामसि । १७६
हम मन्त्रों (वेदोक्त विधि) के अनुसार चलें ।

६४२. सखायो मा रिषण्यत । २४२
हे मित्रो ! तुम कभी किसी को हानि न पहुँचाओ ।

६४३. सुकृत्यया महान् सन् अभ्यवर्धथाः । ५०७
तुम सत्कर्मों से महान् बनकर सदा बढ़ते रहो ।

## (ग) दुर्गुण-त्याग

६४४. अतीहि मन्युषाविणम् । २२३
क्रोध के उत्तेजक से दूर रहो ।

६४५. अद्रुहा देवौ वर्धेते । १४६६
द्रोहरहित (मित्र और वरुण) देव वृद्धि को प्राप्त होते हैं ।

६४६. अपामीवामप स्रिधम्, अप सेधत दुर्मतिम् । ३९७
हे आदित्यो ! तुम हमारे रोगों, त्रुटियों और कुमति को दूर करो ।

६४७. आ गन्ता मा रिषण्यत । ४०१
हे मरुतो ! आवो और हमें हानि न पहुँचावो ।

६४८. इन्दो परि बाधो अप द्वयुम् । १६१३
हे सोम ! तुम कपटी को रोको और दूर भगावो ।

६४९. इन्द्राग्नी माभिशस्तये । ९१८
हे इन्द्र और अग्नि ! तुम हमें निन्दा का पात्र मत बनावो ।

६५०. तना त्मना सह्यामा त्वोताः । ३१६
हे इन्द्र ! तेरे द्वारा रक्षित हम अपनी शक्ति से विजयी हों ।

६५१. न पापत्वाय रंसिषम् । ३१०, १७९६
मेरा मन पापकर्मों में न लगे ।

६५२. परा दुःष्वप्न्यं सुव । १४१
हे इन्द्र ! मेरे कुस्वप्नों को दूर करो ।

६५३. प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि । १४५७
हे शूर इन्द्र ! तेरी सहायता से हम दुर्गम नदियों को पार कर जाएँ ।

६५४. मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनः । ५६१
हे सोम ! कपटी तेरा रसपान कर आनन्दित न हों ।

६५५. मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो
माशिवासो अवक्रमुः । १४५७
हे इन्द्र ! अपरिचित, हिंसक, दुर्जन और अशुभचिन्तक जन हमें न दबा सकें ।

६५६. मा पापत्वाय नो नरा । ९१८
हे नेता इन्द्राग्नी ! हमें पापकर्मों में न जाने दो ।

६५७. मा नो रीरधतं निदे । ९१८
हे इन्द्राग्नी ! हमें निन्दा का पात्र मन बनाओ ।

६५८. माप स्थात समन्यवः । ४०१
तुम क्रोधयुक्त होकर यहाँ मत रहो ।

६५९. मा हृणीयथाः । २२७
तुम क्रुद्ध न हो ।

६६०. विश्वा द्वेषांसि तरति सयुग्वभिः । १५९०
मित्रों के सहयोग से व्यक्ति सभी प्रकार के शत्रुओं को जीत लेता है।

## (घ) पुरुषार्थ

६६१. अपो वसिष्ट सुक्रतुः । १०३९
श्रेष्ठ कर्म करने वाला कर्मों का सहारा लेता है ।

६६२. आ घ त्वावान् त्मना युक्त । १०८५
हे इन्द्र ! तुम आत्मिक शक्ति से युक्त हो ।

६६३. आ पप्राथ महित्वना । १७७२
वह इन्द्र अपनी शक्ति से सर्वत्र व्याप्त हुआ ।

६६४. आ याह्युप नः सुतं वाजेभिः । २२७
हे इन्द्र ! तुम अपने पराक्रम से हमारे यज्ञ में आवो ।

६६५. आ वाजं वाजिनो अग्मन् । ४३५
पुरुषार्थी लोग ही ऐश्वर्य प्राप्त करते हैं ।

६६६. आ वाजं वाज्यक्रमीत्। ६५५
पुरुषार्थी ने ऐश्वर्य पाया ।

६६७. आविर्मर्या: । ४३५
हे मनुष्यो ! अपने पुरुषार्थ को प्रकट करो ।

६६८. आशुरर्ष बृहन्मते । ८९८
हे विशाल मति वाले ! तुम शीघ्र प्रगति करो ।

६६९. इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति । ७२१
देवता पुरुषार्थी को चाहते हैं, आलसी को नहीं ।

६७०. इन्द्रासि सुन्वतो वृधः । १२४८
हे इन्द्र ! तुम पुरुषार्थी के सहायक हो ।

६७१. उत्ते शुष्मास ईरते । १२०५
हे सोम ! तुम्हारी शक्तियां प्रेरणा देती हैं ।

६७२. ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते । ३६९
ऋग्वेद और सामवेद कर्मों की प्रेरणा देते हैं ।

६७३. क्रत्वा महाँ अनुष्वधम् । ४२३
हे इन्द्र ! तुम अपने कर्मों से महान् हो ।

६७४. तत्रादृदिष्ट पौंस्यम् । १३१
इन्द्र ने पुरुषार्थ का आश्रय लिया ।

६७५. तरत् स मन्दी धावति । ५००
प्रसन्नचित्त व्यक्ति तैरता हुआ सा चलता है ।

६७६. ते नो धत्त सुवीर्यम् । ११७९
वे देव हमें पुरुषार्थ दें ।

६७७. त्वं ह्येहि चेरवे । २४०
हे इन्द्र ! तुम पुरुषार्थी के पास आवो ।

६७८. त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो । ३७३
हे महाधनी इन्द्र ! हम तेरा नाम लेकर पुरुषार्थ करते हैं ।

६७९. देव विवाससि, बृहदग्ने सुवीर्यम् । ६६२
हे देव अग्नि ! तुम हमें श्रेष्ठ पराक्रम देना चाहते हो ।

६८०. न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद् रयिम् । ४४१
पुरुषार्थ-हीन न प्रयत्न करता है और न धन पाता है ।

६८१. पुरुमेधाश्चित् तकवे नरं धात् । ११०४
मेधावी सोम ने मनुष्य को पुरुषार्थ के लिए बनाया है ।

६८२. प्राचीमनु प्रदिशं याति चेकितत् । १५९१
विद्वान् व्यक्ति सदा उन्नति की दिशा में जाता है ।

६८३. भुरण्यन्तं जनाँ अनु । ६३७
हे सूर्य ! तुम कर्मठ लोगों के अनुकूल हो ।

६८४. मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भवो वाजानां पते । ८२६
हे शक्तिशाली इन्द्र ! तुम ब्रह्मा के तुल्य आलसी न बनो ।

६८५. यन्ति प्रमादमतन्द्राः । ७२१
कर्मठ व्यक्ति विशेष आनन्द प्राप्त करते हैं ।

६८६. वेनः क्रतुभिरानजे । ३५५
विद्वान् व्यक्ति कर्म से चमकता है ।

६८७. शं पदं मघं रयीषिणः । ४४१
धन के इच्छुक व्यक्ति धन और सुखद स्थान पाते हैं ।

६८८. स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे । ४५७
सोमरस ने महान् कर्म करने के लिए प्रेरणा दी ।

६८९. सना दक्षमुत क्रतुम् । १०४९
हे सोम ! हमें सदा दक्षता और कर्मठता दो ।

६९०. स नो रास्व सुवीर्यम् । ११७१
हे इन्द्र ! हमें श्रेष्ठ पराक्रम दो ।

६९१. सस्नी वाजेषु कर्मसु । १०७३
हे शुद्ध इन्द्राग्नी ! तुम युद्धों में और सभी कार्यों में आगे रहते हो ।

६९२. सुतस्य पेयात् क्रत्वे दक्षाय । १३६९
इन्द्र ज्ञान और कर्म के लिए सोमरस पीए ।

६९३. सुपर्णो अव्यथी भरत् । ८३८
अथक परिश्रमी विद्वान् ही सोम को पाता है ।

६९४. सुषुवांसमुपेरय । २२३
निरन्तर परिश्रमी को प्रेरणा दो ।

६९५. सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते । १३९
हे ज्ञानाधिपति ! पुरुषार्थी को यशस्वी करो ।

६९६. स्वर्गान् अर्वन्तो जयत । ४३५
कर्मठ व्यक्ति ही स्वर्ग को जीतते हैं ।

६९७. हिन्वति सूरमुस्रयः । ९०४
उषा सूर्य को प्रेरणा देती है ।

६९८. हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते । ५६४
सुवर्ण साफ करने वाले सुनार जल में से सोने का अंश निकालते हैं ।

## (ङ) सुमति

६९९. अग्निनाग्निः समिध्यते । ८४४
ज्ञानरूपी अग्नि से ज्ञानाग्नि दीप्त की जाती है ।

७००. अग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे । ७६
हे अग्नि ! वह सुमति हमें प्राप्त हो ।

७०१. अतो मतिं जनयत स्वधाभिः । ५३०
अपने पुरुषार्थ से सुमति उत्पन्न करो ।

७०२. अयं दक्षाय साधनोऽयं शर्धाय वीतये । ११००
यह सोमरस ज्ञानवृद्धि का साधन है । यह अधृष्यता और आनन्द के लिए है ।

७०३. अहं सूर्य इवाजनि । १५२
मैं मेधाशक्ति से सूर्य के तुल्य हो गया ।

७०४. अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह । १५२
मैंने पिता परमात्मा से ऋतंभरा प्रज्ञा प्राप्त की ।

७०५. आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे । ११३७
हे सोम ! हम तेरे सुखद और धन-प्रापक ज्ञान का वरण करते हैं ।

७०६. इन्द्र क्रतुं न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा । १४५६
हे इन्द्र (ईश) ! आप हमें ज्ञान दें, जैसे पिता पुत्रों को ।

७०७. इन्द्रो विदे तमु स्तुहि । ६४५
इन्द्र (ईश) ज्ञान के लिए है, उसकी स्तुति करो ।

७०८. ईशाना पिप्यतं धियः । १००१
हे स्वामी इन्द्र और सोम ! हमारी बुद्धि को बढ़ाओ ।

७०९. उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत । १५९३
हे पूषन् ! हमें गाय, अश्व और बल देने वाली बुद्धि दो ।

७१०. उद् वावृषस्व मघवन् गविष्टये । २४०
हे इन्द्र ! ज्ञान-प्राप्ति के लिए हमारे ऊपर अनुग्रह करो ।

७११. उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु । १३७१
सोमरस से बुद्धि बढ़ती है और माधुर्य आता है ।

७१२. एष धिया यात्यण्व्या । १२६६
यह सोम सूक्ष्म बुद्धि से अग्रसर होता है ।

७१३. केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । १४७०
अज्ञानियों को दान दो और कुरूप को सुरूप बनाओ ।

७१४. क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् । ४३४
ज्ञान मंगलकारी और हृदयस्पर्शी हो ।

७१५. जीवा ज्योतिरशीमहि । १४५६
हे इन्द्र ! हम प्राणी ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करें ।

७१६. जीवातवे प्रतरां साधया धियः । १०६५
उच्च जीवन के लिए श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्त करो ।

७१७. देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः । १०९९
सोम देवप्रिय रस है। इसका बुद्धि से परिष्कार होता है ।

७१८. देवेषु धिय आनजे । ३५५
इन्द्र ने देवों को शुद्ध बुद्धि दी ।

७१९. धिया चक्रे वरेण्यः । १४७९
श्रेष्ठ सोम ने बुद्धि से सब कार्य किया ।

७२०. धियो यो नः प्रचोदयात् । १४६२
परमात्मा हमारी बुद्धि को सत्कर्मों में प्रेरित करे ।

७२१. न क्या योपयामसि । १७६
हम कभी ज्ञानार्जन में प्रमाद न करें ।

७२२. नूनं भूषत श्रुते । २७२
ज्ञान में अपना मन अवश्य लगावो ।

७२३. पवस्व सोम महे दक्षाय । ४३०
हे सोम ! महान् चतुरता के लिए हमें पवित्र करो ।

७२४. प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् । ३२८, १७९३
हे देवो ! उत्कृष्ट ज्ञान के लिए हमें सुमति दो ।

७२५. प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः । ५६
उच्चकोटि का ज्ञानी हमारे पास आवे ।

७२६. मतयः स्वर्युवः सध्रीचीः । ३७५
बुद्धि प्रकाश देती है और एक लक्ष्य की ओर ले जाती है ।

७२७. महे वाजाय श्रवसे धियं दधुः । १५०६
महान् शक्ति और यश के लिए देवों ने बुद्धि दी है ।

७२८. मेधामाशासत श्रिये । १०१
ऐश्वर्य के लिए सुमति की कामना करो ।

७२९. यत्ते धीतिं सुमतिमावृणीमहे । १५६९
हे अग्नि (ईश) ! हम तुम्हारी धारणामयी बुद्धि चाहते हैं ।
७३०. रत्नधामभि प्रियं मतिम् । ४६४
हे सविता ! बुद्धि प्रिय और रत्नदात्री है ।
७३१. वचस्तच्चिन्न ओहसे । १८३
हमारा वचन (ज्ञान) दूसरों तक पहुँचाने के लिए है ।
७३२. शचीभिर्नः शचीवसू दिवा नक्तं दिशस्यतम् । २८७
ज्ञानरूपी धन वाले अश्विनी हमें दिनरात ज्ञान का दान दें ।
७३३. शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि । २५९, १४५६
हे इन्द्र ! आज हमें ज्ञान दो ।
७३४. शिक्षा शचीवः शचीभिः । १८०६
हे ज्ञानयुक्त इन्द्र ! हमें ज्ञान से प्रबुद्ध करो ।
७३५. शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे । १८३५
हे शचीपति इन्द्र ! हम इस ज्ञानी को ज्ञान और दान दें ।
७३६. शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः । ४८८
देवता ज्ञानी को बुद्धि देकर प्रशंसनीय बनाते हैं ।
७३७. सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । १७१
मेधा सभापति है, इन्द्र को प्रिय है और अद्भुत कार्य करती है।
७३८. सनिं मेधामयासिषम् । १७१
मैं सुखदात्री मेधाशक्ति प्राप्त करूँ ।
७३९. सनिषन्तु नो धियः । ५५५
हमारी बुद्धि ठीक विवेचन करे ।
७४०. सुमतिर्भवा नः सहस्राप्साः पृतनाषाट् । १४७३
हमें सहस्रों रूप वाली, शत्रुसेनाविजयिनी, सुमति प्राप्त हो ।
७४१. साधया धियः । १०६६
बुद्धि प्राप्त करो ।

## (च) श्रद्धा

७४२. वाजी वाजं सिषासति । २८०
बलवान् बल-प्राप्ति की कामना करता है ।

७४३. श्रत्ते दधामि प्रथमाय मन्यवे । ३७१
इन्द्र (ईश) के उत्कृष्ट प्रताप के प्रति मेरी श्रद्धा है ।

७४४. श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि । २८०
हे इन्द्र (ईश) अन्तिम दिन उद्धार के लिए मेरी तुझपर श्रद्धा है ।

## (छ) दान, दाता

७४५. अपघ्नन्तो अराव्णः । ११९५
अदाता (कृपण) को नष्ट करें ।

७४६. अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः । ५१०
सोम शत्रुओं और कृपणों को नष्ट करता हुआ पवित्र करता है ।

७४७. अप श्वानमराधसम् । ५५३, १३८६१
कृपणरूपी कुत्ते को दूर रखो ।

७४८. अरक्षद् दाशुषे गयम् । १३८०
अग्नि दाता के लिए धन सुरक्षित रखता है ।

७४९. कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत् । १३३४
कब इन्द्र कृपण व्यक्ति को पैर से तृणवत् रोंद देगा ?

७५०. त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄन् पाहि । १२४६
हे नित्ययुवा अग्नि ! तुम दानी लोगों की रक्षा करो ।

७५१. ददाति दाशुषे वसूनि चोदद् राधः । ५८७
इन्द्र दाता को धन देता है और ऐश्वर्य की वृद्धि करता है ।

७५२. दधद् रत्नानि दाशुषे । १२५७
सोम दाता को रत्न देता है ।

७५३. घत्तं रत्नानि दाशुषे । ३०६
अश्विनी दाता को बहुमूल्य धन दें ।

७५४. नकिर्हि दानं परि मर्धिषत्वे यद्यद् यामि तदा भर । १५८०
हे इन्द्र ! तुम्हारा दान अमोघ है । मैं जो चाहता हूँ, वह दो ।

७५५. न त्वा शतं च न ह्रुतो राधो दित्सन्तमामिनन् ।१२१५
हे सोम ! तुम्हारे धन-दान को सैकड़ों विघ्न भी नहीं रोक सकते हैं ।

७५६. नेन्द्र सश्चसि दाशुषे । ३००
हे इन्द्र ! तुम दाता के लिए कोई विघ्न नहीं होने देते ।

७५७. पदा पणीनराधसो नि बाधस्व । १३५५
हे इन्द्र ! तुम अदाता कृपणों को पैर से रगड़ दो ।

७५८. पृणन् इत् पृणते मयः । २८५
दाता को सदा सुख मिलता है ।

७५९. भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः । ३०९
हे श्रेष्ठ इन्द्र ! तुम छोटों और निर्बलो को भरो (धन दो) ।

७६०. भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते । ३००
हे इन्द्र (ईश) ! तेरा दान निरन्तर प्रवाहित है ।

७६१. मनो दानाय चोदयन् । १३२०
इन्द्र (ईश) मनुष्यों को दान के लिए प्रेरित करता है ।

७६२. य एक इद् विदयते वसु मर्ताय दाशुषे । ३८९
वह एक ईश्वर ही दानी मनुष्यों को धन पहुँचाता है ।

७६३. रायो दानाय चोदय । १५०५
अपने ऐश्वर्य को दान में लगाओ ।

७६४. विदा भगं वसुत्तये । २४०
हे परमात्मन् ! दानी को ऐश्वर्य दो ।

७६५. वि रत्नधा दयते वार्याणि । १४०८
वह ईश रत्नधारक है। वह अभीष्ट धन देता है ।

७६६. विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर । ४३७
हे सब ओर से देने वाले ईश ! हमें सब ओर से ऐश्वर्य दो ।

७६७. वृषणं कृणुतैकमिन्माम् । ५९१
मुझ अकेले को महादानी बनाओ ।

## (ज) यश

७६८. अभि द्युम्नं बृहद् यश इषस्पते दिदीहि । ५७९
हे अन्नपति सोम ! तुम देवभक्त को तेज और महान् यश दो ।

७६९. अभ्यर्ष बृहद् यशो मघवद्भ्यो ध्रुवं रयिम् । ९७१
हे सोम ! तुम उदार दानियों को महान् यश और स्थायी ऐश्वर्य दो ।

७७०. अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद् यशः । ५७६
हे सोम ! तुम स्तुतिकर्ताओं को वीरतायुक्त यश दो ।

७७१. अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः । ९९, १५६१
हे सर्वज्ञ अग्नि (ईश) ! हमें महान् यश दो ।

७७२. अस्मे धेहि श्रवो बृहत् । १७८१
हे अग्नि (ईश) ! हमें महान् यश दो ।

७७३. अस्मे श्रवांसि धारय । ५०१
हे सोम ! हमें यश दो ।

७७४. आ वंसते मघवा वीरवद् यशः । ८७९
उदार अग्नि भक्त को वीरतायुक्त यश देता है ।

७७५. इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ओजिष्ठं पुपुरि श्रवः । ५८६
हे इन्द्र (ईश) ! हमें श्रेष्ठ, तेजोमय और प्रचुर यश दीजिए ।

७७६. इन्द्र त्वादातमिद् यशः । १९५
हे इन्द्र ! मुझे प्राप्त सारा यश तेरा दिया हुआ ही है ।

७७७. उग्रं शर्म महि श्रवः । ६७२
हे सोम ! तुम्हारा श्रेष्ठ सुख और महान् यश हमें प्राप्त हो ।

७७८. उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रम् । ३३०
हे मनुष्यो ! यश की इच्छा से इन्द्र (ईश) के लिए मन्त्रोच्चारण करो ।

७७९. कृधी नो यशसो जने । ४७९, ७७८
हे सोम ! हमें मनुष्यों में यशस्वी बनाओ ।

७८०. भद्रा उत प्रशस्तयः । ११९, १५५९
हमारा यश शुभ हो ।

७८१. यशो भगस्य विन्दतु । ६११
ऐश्वर्य के देव भग का यश मुझे प्राप्त हो ।

७८२. यशो मा द्यावापृथिवी । ६११
द्युलोक और पृथिवी मुझे यश दें ।

७८३. यशो मा प्रतिमुच्यताम् । ६११
मुझे यश प्राप्त हो ।

७८४. यशो मेन्द्राबृहस्पती । ६११
इन्द्र और बृहस्पति मुझे यश दें ।

७८५. रास्वेन्दो वीरवद् यशः । १२१४
हे सोम ! हमें वीरतायुक्त यश दो ।

७८६. स नः सोम श्रवो विदः । ९७०
हे सोम ! हमें यश दो ।

७८७. सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः । १०४७
हे पवित्रकर्ता सोम ! तुम विजेता हो, हमें महान् यश दो ।

## (झ) माधुर्य

७८८. इन्दो इन्द्रियं मधोः पवस्व धारया । १०४६
हे सोम ! तुम अपनी मधुर धारा से हमारी इन्द्रियों को पवित्र करो ।

७८९. उग्रं वचो अपावधीः । ३५३
हे इन्द्र ! तुमने कठोर वचन का तिरस्कार किया ।

७९०. मधावा धावतां मधु । १४४५
हे सोम ! मधुर में मधुर को मिलाओ ।

७९१. मधुजिह्वं हविष्कृतम् । १३४९
मैं मधुरभाषी और यज्ञकर्ता को यज्ञ में बुलाता हूँ ।

७९२. मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचम् । ६१०
मैं तुम्हें कटुवचन न बोलूँ ।

७९३. सु मधु मधुनाभि योधीः । १४८५
हे सोम ! मधुर को मधुर से मिला दो ।

७९४. सुरभि नो मुखा करत् । ३५८
वह इन्द्र हमारे मुख माधुर्य से युक्त करे ।

७९५. स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृज । १४८५
हे सोम ! अत्यन्त स्वादिष्ट को भी स्वादिष्ट से मिला दो ।

## (ञ) जागरूकता

७९६. अग्निर्जागार तमयं सोम आह । १८२७
अग्नि सदा जागरूक है, उससे सोम बात करता है ।

७९७. अग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति । १८२७
अग्नि जागरूक है, उसके पास ही साममन्त्र जाते हैं ।

७९८. अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते । १८२७
अग्नि जागरूक है, उसको ही ऋचाएँ चाहती हैं ।

७९९. जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् । ७६७
हे जागरूक सोम ! तुम मधुमय कोश प्राप्त करो ।

८००. तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः । १८२६, १८२७
सोम जागरूक के साथ मित्रता करके प्रसन्नचित्त होता है ।

८०१. यो जागार तमयं सोम आह । १८२६
जो जागरूक है, उससे सोम बात करता है ।

८०२. यो जागार तमु सामानि यन्ति । १८२६
जो जागरूक है, उसको ही सामवेद के मन्त्र चाहते हैं ।

८०३. यो जागार तमृचः कामयन्ते । १८२६
जो जागरूक है, उसको ही ऋग्वेद के मन्त्र चाहते हैं ।

## (ट) स्वावलम्बन

८०४. स्वयं यजस्व तन्वं स्वा हि ते । १५८९
तुम अपने शरीर को स्वयं पुष्ट करो । वह तुम्हारा ही है ।

८०५. स्वेन दक्षेण राजथः । १५९७
द्यावापृथिवी अपनी शक्ति से प्रकाशित हैं ।

## (ठ) तप

८०६. अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते । ५६५, ८७५
अपरिपक्व और तपस्याहीन व्यक्ति परमात्मा को नहीं पा सकता ।

८०७. आदित्य व्रते वयं तवानागसो अदितये स्याम । ५८९
हे सूर्य ! तेरे व्रत में रहते हुए हम अखंड शक्ति के लिए निष्पाप हों ।

८०८. तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे । ८७६
तपोमय सोम का पवित्र रूप द्युलोक में व्याप्त है ।

८०९. वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसः । ८७३
समस्त तेज का स्वामी बृहस्पति धनादि देना चाहता है ।

८१०. शृतास इद् वहन्तः सं तदाशत । ५६५, ८७५
परिपक्व संयमी ही नियमपालन करते हुए ईश्वर को पाते हैं ।

## (ड) संयम

८११. इषे पवस्व संयतम् । ९०६
हे सोम ! संयमी को अन्नादि के लिए पवित्र करो ।

८१२. पाहि गा अन्धसो मद इन्द्राय । २८९
आत्मशक्ति के लिए, अन्न की शक्ति के द्वारा, इन्द्रियों को संयम में रखो ।

८१३. वशी हि शक्रः । ६४८
इन्द्र संयमी है ।

८१४. शूरो यो गोषु गच्छति । ६४९
जो इन्द्रियों को वश में रखता है, वह शूरवीर है ।

## (ढ) सन्मार्ग

८१५. असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः । ११२८
शोभायुक्त सोम धर्मानुसार सत्य के मार्ग से जाता है ।

८१६. चिकित्वो अभि नो नय । ६४५
हे ज्ञानवान् इन्द्र ! हमको सन्मार्ग से ले चलो ।

८१७. तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर्विश्वा तरेम दुरिता । १६८३
हे इन्द्र ! तेरे बताये सन्मार्ग से हम, विद्वानों के साथ, सारे पापों को पार कर जाएँ ।

## (ण) सुख

८१८. भवा नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे । ७४८
हे इन्द्र ! तुम हमारे सुख और वृद्धि के लिए घनिष्ठ मित्र होओ ।

८१९. शतं यस्य सुभुवः साकमीरते । ३७७
उस इन्द्र के सैकड़ों सुख उसके साथ चलते हैं ।

८२०. स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय । २१३
हे इन्द्र ! तुम स्तुतिकर्ताओं को सुख दो ।

## (त) शुद्धता

८२१. इन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना । १४०२
हम पवित्र इन्द्र की पवित्र सामवेद के मन्त्रों से स्तुति करते हैं ।

८२२. इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः । १४०३
हे इन्द्र ! तुम अपने पवित्र संरक्षण से हमारे पास आवो ।

८२३. इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे । १४०४
हे इन्द्र! तुम पवित्र हो । हम पवित्र दाताओं को शुद्ध ऐश्वर्य दो ।

८२४. इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । ५०५
हे विद्वानों के द्वारा परिष्कृत सोम ! तुम हमें अन्नादि के लिए पवित्र करो ।

८२५. परिष्कृण्वन् अनिष्कृतम् । ८९९
हे सोम ! तुम अपवित्र को पवित्र करते हो ।

८२६. पवस्व देववीतय इन्दो । ५७१
हे सोम ! देवप्रियता के लिए हमें पवित्र करो ।

८२७. पवित्रं सोम गच्छसि । ९७४
हे सोम ! तुम पवित्र के ही पास जाते हो ।

८२८. शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय । ५७४
हे सोम ! तुम गायों में पवित्र दूध रखो ।

८२९. शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु । १४०२
वह आशीर्वाददाता इन्द्र पवित्र स्तुतियों से आनन्दित हो ।

८३०. शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसम् । १४०२
वह इन्द्र पवित्र स्तुतियों से प्रसन्न होता है ।

८३१. शुद्धो ममद्धि सोम्य । १४०३
हे शुद्ध एवं सोम्य इन्द्र ! तुम प्रसन्न होओ ।

८३२. शुद्धो रयिं वि धारय । १४०३
हे पवित्र इन्द्र ! तुम हमें एश्वर्य दो ।

८३३. शुद्धो वाजं सिषाससि । १४०४
हे पवित्र इन्द्र ! तुम हमें शक्ति एवं धन देना चाहते हो ।

८३४. शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे । १४०४
हे पवित्र इन्द्र ! तुम वृत्रों (पापों) को नष्ट करते हो ।

## (थ) आस्तिक, नास्तिक

८३५. अदेवं कं चिदत्रिणम्, साह्वान् । १६१३
हे सोम ! तुम नास्तिक एवं शोषक व्यक्ति को तिरस्कृत करो ।

८३६. अव ब्रह्मद्विषो जहि । १९४, १३५४
हे इन्द्र ! तुम ब्रह्मद्वेषियों (नास्तिकों) को नष्ट करो ।

८३७. न सीमदेव आप तदिषं दीर्घायो मर्त्यः । २६८
हे दीर्घायु ( अमर ) इन्द्र ! नास्तिक को उत्तम धन नहीं मिलता है ।

८३८. नुदस्वादेवयुं जनम् । ४९२
हे सोम ! तुम नास्तिक लोगों को भी धर्मार्थ प्रेरित करो ।

८३९. मा कीं ब्रह्मद्विषं वनः । ७३२
हे इन्द्र ! तुम ब्रह्मद्वेषियों का साथ न दो ।

## ( द ) स्वस्ति

८४०. स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । १८७५
सर्वज्ञ पूषा (ईश्वर) हमारा कल्याण करे ।

८४१. स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । १८७५
महायशस्वी इन्द्र हमारे लिए कल्याणकारी हो ।

८४२. स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः । १८७५
अक्षत आयुधवाला ताक्ष्र्य (गरुड) हमारा कल्याण करे ।

८४३. स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु । १८७५
बृहस्पति हमारा कल्याण करे ।

## (४) नीति-शिक्षा

### (क) नीति

८४४. आदित्यासो युयोतना नो अंहसः । ३९७
सूर्य हमें पापों से मुक्त करे ।

८४५. इत एत उदारुहन् दिवः पृष्ठान्या रुहन् । ९२
इन लोगों ने उन्नति की और ये आकाश तक पहुँच गए ।

८४६. ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान् । २१८
विद्वान् मित्र और वरुण हमें सरलता के मार्ग से ले जाते हैं ।

८४७. त्वं मायिनं मृगं तव त्यन्माययावधीः । ४१२
हे इन्द्र ! तुमने मायावी को माया से ही मारा ।

८४८. न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते । ८६८
धनदाता की निन्दा उचित नहीं है ।

८४९. पवस्व सोम महे दक्षाय । १३३२
हे सोम ! हमें महान् दक्षता के लिए पवित्र करो ।

८५०. ब्रह्माण इन्द्रं . . . . अर्केरवर्धयन् अहये हन्तवा उ । ४३९
वृत्र को मारने के लिए विद्वानों ने मन्त्रों से इन्द्र को पुष्ट किया ।

८५१. मायाविनो ममिरे अस्य मायया । ५९६
मायावी लोग सोम की माया से हार मान गए ।

८५२. यो अभिरक्षति त्मना । ६२८
अग्नि स्वयं अपनी रक्षा करता है ।

## (ख) मित्रता

८५३. अग्ने मित्रो न पत्यसे । ८४
हे अग्नि (ईश) ! तुम्हारी मित्रवत् स्तुति की जाती है ।

८५४. अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव । १०६४
हे अग्नि (ईश) ! हम तुम्हारी मित्रता में कभी दुःखी न रहें ।

८५५. अनु यं विश्वे मदन्त्यूमाः । १४८३
सभी मित्र उस (अग्नि, मित्र) का समर्थन करते हैं ।

८५६. आ त्वा सखायः सख्या ववृत्युः । ३४०
हे इन्द्र! सभी मित्र मित्रतापूर्वक तेरे पास पहुँचते हैं ।

८५७. आपिं नक्षामहे वृधे । १५४५
हम वृद्धि (उन्नति) के लिए मित्र को पावें ।

८५८. आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि । १७२१
हे इन्द्र ! तुम प्रातःकाल हमारी मित्रता हेतु शीघ्र आवो ।

८५९. आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे । २३९
हे इन्द्र ! तुम सहयोग के कामों में वृद्धि हेतु हमें मित्र समझना ।

८६०. आ भुवदूती सदावृधः सखा । ६८२
इन्द्र रक्षा के द्वारा सदावृद्धिकारी मित्र हुआ ।

८६१. तवेदं सख्यमस्तृतम् । २२९
हे इन्द्र ! तुम्हारी मित्रता अक्षय है ।

८६२. त्वामिद्ध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् । ७०९
हे इन्द्र ! हम मित्रगण दानी एवं रक्षक तुमको ही अपना मानते हैं ।

८६३. नमः सखिभ्यः पूर्वसद्भ्यो नमः साकंनिषेभ्यः । १८२८
सहयोगी एवं सामने विद्यमान सभी मित्रों को नमस्कार ।

८६४. मरुत्वन्तं सख्याय हुवेमहि । ३८०
हम मरुत्-देवों से युक्त इन्द्र को मित्रता के लिए बुलाते हैं ।

८६५. मित्रमिव प्रियम् । ५
अग्नि मित्रवत् प्रिय है ।

८६६. मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः । ५४८
मित्र परितुष्ट, निर्दोष, उदार और प्रकाशदाता (मार्गदर्शक) होते हैं ।

८६७. यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः । ८८
मनुष्य कल्याण के लिए अग्नि को मित्रवत् सामने रखते हैं ।

८६८. रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । १०८४
इन्द्र की मित्रता में हमें ऐश्वर्ययुक्त महान् शक्ति प्राप्त हो ।

८६९. सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम् । ५५७, ११५२
मित्र मित्र की बात नहीं टालता ।

८७०. सखा सुशेवो अद्वयुः । ६४९
मित्र सरलता से सेव्य और कपटरहित होता है ।

८७१. सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव । १६१२
हे वीर सोम ! तुम मित्र के तुल्य हमारी श्रीवृद्धि के लिए होवो ।

## (ग) अभय

८७२. इन्द्रो . . . . महद् भयमभी षदप चुच्यवत् । २००
इन्द्र हमारे महान् भय को सर्वथा नष्ट कर दे ।

८७३. मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव । १६०५
हे भयंकर इन्द्र ! हम तुम्हारी मित्रता में न डरें, न खिन्न हों ।

८७४. यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि । २७४
हे इन्द्र! हम जिससे डरते हों, उससे हमें निर्भय करो ।

८७५. स्तवा अबिभ्युषा हृदा । १७१५
हे सोम ! मैं निर्भय हृदय से तुम्हारी स्तुति करता हूँ ।

## (घ) पाप, पापी

८७६. अग्ने रक्षा णो अंहसः । २४
हे अग्नि (ईश) ! आप हमें पापों से बचाइए ।

८७७. अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम् । १०५
हे अग्नि ! उस पापी शत्रु और दुष्ट चोर को हमसे दूर रखो ।

८७८. अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि । ३११
हे इन्द्र ! तुम अकीर्ति-नाशक, भयकारी और पापियों के नाशक हो ।

८७९. उतास्मान् पात्वंहसः । १३८१
हे अग्नि ! तुम पापों से हमें बचाओ ।

८८०. त्वं तूर्य तरुष्यतः । ३११
हे इन्द्र ! तुम आक्रामकों को नष्ट करो ।

८८१. पीयन्ति ते सुराश्वः । १३९०
हे इन्द्र! मदिरा से मत्त व्यक्ति तेरी निन्दा करते हैं ।

८८२. मर्त्यादघायोः पाहि । १६३६
हे अग्नि (ईश) ! हमें पापी मनुष्यों से बचाओ ।

८८३. सहावान् दस्युमव्रतमोषः । १४३४
हे बलिष्ठ इन्द्र ! तुम अकर्मण्य नीच को भस्म कर देते हो ।

## (ङ) सज्जन

८८४. दूरादिहेव यत् सतोऽरुणप्सुरशिश्वितत् । २१९
सूर्य ने सज्जनों को दूर से ही आनन्दित किया ।

८८५. सोमासो गोभिरञ्जते । ११२१
सोम्य व्यक्ति वाणी से प्रकाशित होते हैं ।

## (च) कल्याण

८८६. देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम् । १४१
हे सविता देव ! हमें प्रजायुक्त सौभाग्य दो ।

८८७. भद्रं भद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो । १७३
हे इन्द्र ! हमें अतिशुभ अन्न और बल दो ।

८८८. भद्रा उत प्रशस्तयः । १११
हे अग्नि ! हमारा यश शुभ हो ।

८८९. भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः । १११
हे अग्नि ! हमारा ऐश्वर्य शुभ हो, पवित्र यज्ञ सौभाग्यकारी हो ।

८९०. भद्रो नो अग्निराहुतः । १११
हे अग्नि ! हमारा यज्ञ शुभ हो ।

## (५) राजनीति-शास्त्र

## (क) राजा, राजधर्म

८९१. अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठः । १५३१
हे अग्नि (राजा) ! तुम प्रजा के प्रिय और श्रेष्ठ ध्वज हो ।

८९२. अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते । १६१६
अग्रणी और कर्मठ राजा की स्तुति होती है ।

८९३. अवक्रक्षिणं वृषभं यथा जुवम् । १३६१
राजा वेगशाली और साँड़ की तरह आक्रामक हो ।

८९४. अषाढः साह्वान् पृतनासु शत्रून् । १४०९
राजा अजेय और युद्धों में शत्रुओं को जीतने वाला हो ।

८९५. अषाढमुग्रं पृतनासु सासहिम् । ११५६
राजा अजेय, भयंकर और युद्धों में जीतने वाला हो।

८९६. आयुर्दधद् यज्ञपतावविह्रुतम् । १४५३
राजा यज्ञकर्ता को अक्षत आयु दे ।

८९७. इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे । ६४७
धन की प्राप्ति के लिए इन्द्र (राजा) का आह्वान् करते हैं ।

८९८. इन्द्र प्र ते सुम्ना नो अश्नवन् । १४१२
हे इन्द्र (राजा) ! तेरे अनुग्रह हमें प्राप्त हों ।

८९९. इन्धे राजा समर्यो नमोभिः । ७०
युद्ध-प्रिय इन्द्र (राजा) स्तुतियों से प्रदीप्त होता है ।

९००. इभो राजेव सुव्रतः । १७६३
राजा सत्कर्मशील और हाथी की तरह निर्भय हो ।

९०१. ईशान इमा भुवनानि ईयसे । ९५७
हे सोम! तुम राजा के तुल्य सारे संसार में विचरण करते हो ।

९०२. ईशानमस्य जगतः । २३३
हे इन्द्र (राजा) ! तुम चर जगत् के स्वामी हो ।

९०३. ईशानमिन्द्र तस्थुषः । २३३
हे इन्द्र (राजा) ! तुम अचर (स्थावर) जगत् के स्वामी हो ।

९०४. ईशे हि शक्रस्तमूतये हवामहे । ६४६
इन्द्र(राजा) स्वामी है। हम रक्षार्थ उसे पुकारते हैं ।

९०५. उप शिक्षापतस्थुषः । ७६१
हे राजा! तुम कुमार्गगामियों को ठीक मार्ग पर लाओ ।

९०६. उरुगव्यूतिरभयानि कृण्वन् । १४१०
हे राजा! तुम्हारा क्षेत्र महान् हो और तुम लोगों को अभय दो ।

९०७. ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे । १३९५
सत्यनिष्ठ राजा सत्य से ही बढ़ता है ।

९०८. एक इत् पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः । १४११
इन्द्र (राजा) अकेला ही अजेय होता है और वह प्रजा का आश्रय है ।

९०९. कविं सम्राजमतिथिं जनानाम् । ११४०
अग्नि (राजा) क्रान्तदर्शी, सम्राट् और जनता का अतिथि है ।

९१०. गां न चर्षणीसहम् । १३६१
इन्द्र (राजा) वृषभ का तुल्य प्रजा का शासक है ।

९११. चमूषत् . . . . आयुधानि बिभ्रत् । ११७७
सोम (राजा) सेना के साथ रहता है और शस्त्र धारण करता है ।

९१२. जेतारम् अपराजितम् । ६४७
इन्द्र (राजा) विजयी और अजेय है ।

९१३. तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम् । ८८०
हे इन्द्र (राजा) ! सुखवर्षक और शत्रुविजयी तेरे आनन्द की हम स्तुति करते हैं ।

९१४. तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः । ९५७
हे सोम (राजा) ! प्रजा तेरे नियमों में रहे ।

९१५. त्वं राजा जनानाम् । १३५६
हे इन्द्र (राजा) ! तुम मनुष्यों के राजा हो ।

९१६. त्वं राजेव सुव्रतः । ९७२
हे सोम ! तुम राजा के तुल्य नियमों के पालक हो ।

९१७. त्वं वृत्राणि हंसि । १४११
हे इन्द्र (राजा) ! तुम वृत्रों (पापियों) को नष्ट करते हो ।

९१८. त्वं हि क्षैतवद् यशः । ८४
हे अग्नि ! तुम राजा के तुल्य यशस्वी हो ।

९१९. त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः । १४११
हे इन्द्र (राजा) ! तुम यशस्वी, ऋजुगामी और शक्ति के स्वामी हो ।

९२०. त्वामभि प्र नोनुमो जेतारमपराजितम् । ८२८
हे इन्द्र (राजा) ! हम तुम्हें प्रणाम करते हैं । तुम विजयी और अजेय हो ।

९२१. द्यावः क्षामीरनोनवुः । ११५६
हे इन्द्र (राजा) ! द्युलोक और पृथिवी तुम्हें प्रणाम करते हैं ।

९२२. द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे । १३६४
हे सोम (राजा) ! तुम ऋण उतारने वाले के तुल्य शत्रुओं को मारने जाते हो ।

९२३. परि वृत्राणि सक्षणिः । १३६४
हे सोम (राजा) ! तुम वृत्रों (शत्रुओं) को जीतने वाले हो ।

९२४. पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये।१३६४
हे सोम (राजा) ! तुम धनप्राप्ति के लिए युद्ध में शीघ्र जाओ ।

९२५. पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति । ११३२
सोम शत्रुओं पर ऐसे ही अधिकार करता है, जैसे राजा प्रजा पर ।

९२६. पवमानो रथीतमः । १३११
सोम राजा उत्तम महारथी है ।

९२७. प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति । ६२८, १४५३
सूर्यवत् राजा प्रजा का पालन करता है और सर्वथा यशस्वी होता है ।

९२८. प्रभो जनस्य वृत्रहन् । ६४९
हे प्रभु इन्द्र (राजा) ! तुम जनता के शत्रुओं को मारने वाले हो ।

९२९. प्रियो नो अस्तु विश्पतिः । १६१९
प्रजा का पालक अग्नि(राजा) हमारा प्रिय हो ।

९३०. भवा समत्सु नो वृधे । २८६
हे इन्द्र (राजा) ! तुम युद्धों में हमारी शक्तिवृद्धि करो ।

९३१. भियसमा धेहि शत्रवे । ७६१
हे सोम (राजा) ! तुम शत्रुओं को भयभीत कर दो ।

९३२. भुवो वाजानां पतिः । ६४४
हे इन्द्र (राजा) ! तुम पृथिवी और ऐश्वर्य के स्वामी हो ।

९३३. मंहिष्ठमुभयाविनम् । १३६१
हे इन्द्र (राजा) ! तुम अति उदार हो और संधि-विग्रह दोनों कार्य करते हो ।

९३४. महाँ देवो न सूर्यः । ९३४
इन्द्र (राजा) सूर्य के तुल्य महान् है



९३५. महो राजान ईशते । १३५३
आदित्य विशाल क्षेत्र के राजा और स्वामी हैं ।

९३६. यः पञ्च चर्षणीरभि । ८२०
सोम (राजा) पाँचों प्रजा (४ वर्ण और निषाद) का अधिपति है ।

९३७. यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि । २७४
हे इन्द्र (राजा) ! हम जिससे भयभीत हों, उससे हमें निर्भय करो ।

९३८. याता रथेभिरध्रिगुः । २७३, ९३३
वह इन्द्र (राजा) रथ पर बैठकर चलता है और अधृष्य है ।

९३९. यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य । ९७८
वह सोम (राजा) सदा जीतता है, अजेय है और शत्रुओं को सब ओर से मारता है ।

९४०. यो राजा चर्षणीनाम् । ९३३
वह इन्द्र प्रजा का राजा है ।

९४१. राजा देव ऋतं बृहत् । १३९५
वह सोम राजा है, देवता है और महान् सत्य है ।

९४२. राजानो न प्रशस्तिभिः । ११२१
राजा स्तुतियों से प्रसन्न होते हैं ।

९४३. राजा मेधाभिरीयते । ८३३
राजा अपनी बुद्धि से कार्य करता है।

९४४. रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् । ८२७
राजा रथियों में महारथी, सज्जनों का पालक और शक्तिशाली होता है ।

९४५. लोककृत्नुम् . . . . हरिश्रियम् । ३८३
राजा लोकहितकारी और विशाल श्री से संपन्न होता है ।

९४६. वज्रिन् ऋञ्जसे यः शविष्ठः शूराणाम् । ६४४
हे वज्रधारी इन्द्र ! तुम सर्वश्रेष्ठ शूरवीर के पास जाते हो ।

९४७. वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा । ५४०
राजा लोगों को सुविधा देता है और अपने क्षेत्र का राजा होता है ।

९४८. विचक्षणो राजा देवः समुद्र्यः । ८५८
सोम ज्ञानी है, राजा है और समुद्री देवता है ।

९४९. विद्वेषणं संवननम् उभयंकरम् । १३६१
राजा संधि और विग्रह दोनों कार्य करता है ।

९५०. विश्वासां तरुता पृतनानाम् । २७३, ९३३
राजा सारी सेना को पार लगाता है ।

९५१. शं गवे शं जनाय शमर्वते । ६५३
सोम (राजा) मनुष्यों, गाय और घोड़ों के लिए सुखकर हो ।

९५२. शं राजन् ओषधीभ्यः । ६५३
हे राजन् ! तुम वृक्ष-वनस्पतियों के लिए शुभ होओ ।

९५३. शक्रो राये वाजाय । ६४३
इन्द्र (राजा) ऐश्वर्य और शक्ति के लिए है ।

९५४. शविष्ठ वज्रिन् ऋञ्जसे । ६४३
हे अतिबली वज्रधारी इन्द्र ! तुम मार्गनिर्देशन करते हो ।

९५५. शूरग्रामः सर्ववीरः सहावान् जेता । १४०९
सोम राजा बलवान् विजयी है, उसकी सारी प्रजा शूर और वीर है ।

९५६. सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते । ८२८
हे बलशाली इन्द्र ! तुझ शक्तिशाली की मित्रता में हम कभी भयभीत न हों ।

९५७. सत्रा विश्वानि पौंस्या । २६२
हे इन्द्र (राजा) ! प्रजा में सदा सभी प्रकार का पुरुषार्थ भरो ।

९५८. स नः स्वर्षदति द्विषः । ६४६
वह इन्द्र (राजा) हमें शत्रुओं से बचाकर प्रकाश दे ।

९५९. स पवस्व सहस्रजित् । ९७८
वह सोम (राजा) सहस्रों को जीतने वाला है । वह हमें पवित्र करे ।

९६०. समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । १३७
उस इन्द्र (राजा) के क्रोध के सामने सारी प्रजायें सिर झुकाती हैं ।

९६१. सम्राजं चर्षणीनाम् । १०९०
इन्द्र सारी प्रजाओं का सम्राट् है ।

९६२. सम्राडेको विराजति । १७१०
अग्नि अद्वितीय सम्राट् के तुल्य विराजमान है ।

९६३. सहस्रमन्यो तुविनृम्ण सत्पते । २८६
वह इन्द्र सज्जनों का रक्षक, महाधनी और हजारगुने साहस वाला है ।

९६४. सोमं राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे । ९१
हम राजा सोम, वरुण और अग्नि का आह्वान करते हैं ।

९६५. सोमश्चमूषु सीदति । ९७३
राजा सोम सेनाओं के साथ रहता है ।

९६६. स्तोत्रं राजसु गायत । २५५
राजाओं के लिए स्तोत्र गावो ।

९६७. स्वानैर्याति कविक्रतुः । ९३५
वह महान् कर्म करने वाला राजा सोम उद्घोष के साथ चलता है ।

९६८. हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिम् । ५४०
वह राजा सोम राक्षसों को मारता है और शत्रुओं को जीतता है ।

९६९. हन्ति शत्रुमभीत्य । ९७८
वह राजा सोम चारों ओर से शत्रुओं को मारता है ।

९७०. हस्तेन वज्रः प्रति धायि दर्शतः । ९३४
उस दर्शनीय राजा इन्द्र ने हाथों में वज्र धारण किया ।

## (ख) राजा-प्रजा

९७१. पञ्चक्षितीनां द्युम्नमा भर । २६२
हे इन्द्र (राजा) ! पाँचों प्रकार की प्रजा को ऐश्वर्य दो ।

९७२. यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु । २६२
हे इन्द्र (राजा) ! मानवीय प्रजाओं को ओज और धन दो ।

९७३. यो राजा चर्षणीनाम् । २७३
वह इन्द्र (राजा) प्रजा का राजा है ।

९७४. विशं विशं हि गच्छथः । ७५३
हे राजा अश्विनी ! तुम प्रत्येक प्रजा जन के पास जाते हो ।

## (ग) राष्ट्र, राज्यशासन

९७५. अग्निं दूतं वृणीमहे । ३, ७९०
हम अग्नि को दूत के रूप में वरण करते हैं ।

९७६. अर्चन्ननु स्वराज्यम् । ४१०
तुम स्वराज्य की अर्चना करो ।

९७७. उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये । १३५३
आदित्य और अदिति सार्वभौम राजा हैं । इनके नियम कोई तोड़ नहीं सकता ।

९७८. उत स्वराजो अश्विना । १७४
अश्विनी सार्वभौम राजा हैं ।

९७९. कविं सम्राजमतिथिं जनानाम् । ६७
अग्नि कवि, सम्राट् और मनुष्यमात्र का अतिथि है ।

९८०. तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसा धिषणे निष्टतक्षतुः । १२३४
इन्द्र बलवान् स्वतंत्र राजा है । द्यावापृथिवी ने उसे अपने तेज से बनाया है ।

९८१. प्र सम्राजं चर्षणीनाम् । १४४
वह इन्द्र प्रजा का सम्राट् है ।

९८२. प्र सम्राजमसुरस्य प्रशस्तम् । ७८
अग्नि प्राणशक्ति-संपन्नों का श्रेष्ठ सम्राट् है ।

९८३. ब्रह्म चकार वर्धनम् । ४१०
इन्द्र ने ब्रह्म (ज्ञानियों) को उन्नत किया ।

९८४. मदामसि महे समर्यराज्ये । ४३२
हम महान् वैश्य (या जनतंत्र) राज्य में प्रसन्न रहें ।

९८५. वस्वीरनु स्वराज्यम् । १००६
स्वराज्य समृद्धि की ओर ले जाता है ।

९८६. विश्वस्य दूतममृतम् । ७४९
अग्नि संसार का अमर दूत है ।

९८७. विश्वा द्वेषांसि तरति सयुग्वभिः । ४६३
राजा सोम अपने सहयोगियों के द्वारा सारे शत्रुओं को जीतता है ।

९८८. व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये । १००७
प्रजा ने प्राथमिकता पाने के लिए राजा के सभी नियमों का पालन किया ।

९८९. शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये । १६०८
विप्रराज्य में यज्ञ पर विशेष बल होता है ।

९९०. सम्राजं चर्षणीनाम् । ३७९
इन्द्र प्रजा का सम्राट् है ।

९९१. सम्राजन्तमध्वराणाम् । १७
अग्नि यज्ञों का राजा है ।

९९२. स वाजेषु प्र नोऽविषत् ।४११
वह इन्द्र (राजा) युद्धों में हमारी रक्षा करे ।

## (घ) सभा, संसद्

९९३. चन्द्रैर्याति सभामुप । २७७
इन्द्र (राजा) का मित्र सुवर्णालंकारों से युक्त होकर सभा में जाता है ।

९९४. ध्रुवे सदसि सीदतु । ९२५
इन्द्र (राजा) स्थायी राजासन पर बैठे ।

९९५. भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसदि । ६६, १०६४
इस राजा की संसद् में हमारी बुद्धि शुभ विचार से युक्त हो ।

९९६. यदिन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि । २९८
हे इन्द्र (राजा) ! तुम नियमभंग करने वाले को दण्डित करो और उसे सभा से बहिष्कृत करो ।

९९७. यशसाऽस्याः संसदोऽहं प्रवदिता स्याम् । ६११
मैं इस संसद् का यशस्वी वक्ता होऊँ ।

९९८. रणन्ति सप्त संसदः । ७२३
सातों संसद् (संसद् के ७ उपविभाग) आनन्द से काम करते हैं ।

## (ङ) सेना

९९९. अन्धा अमित्रा भवताशीर्षाणोऽहय इव । १८७१
शत्रु सिर कटे साँपों की तरह अन्धे हो जाएँ ।

१०००. अमित्रसेनां मघवन् अस्मों शत्रूयतीमभि ।
उभौ तामिन्द्र वृत्रहन् अग्निश्च दहतं प्रति । १८६५
हे वृत्रहा इन्द्र ! तुम और अग्नि दोनों मिलकर हमारे ऊपर आक्रमण करने वाली शत्रुसेना को भस्मसात् कर दो ।

१००१. असौ या सेना मरुतः परेषाम्
अभ्येति न ओजसा स्पर्धमाना । १८६०
हे मरुतो (तेजस्वी सैनिको) ! शक्ति-परीक्षण करती हुई यह जो शत्रुसेना हमारी ओर आ रही है, उसे तामस अस्त्र से अन्धा कर दो ।

१००२. आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम् । १८५७
सूर्य और मरुत् देवों की शक्ति भयंकर है ।

१००३. कंकाः सुपर्णा अनु यन्त्वेनान् । १८६४
मृत शत्रुसेना पर गिद्ध और बाज टूट पड़ें ।

१००४. गृध्राणामन्नम् असावस्तु सेना । १८६४
यह मृत शत्रुसेना गिद्धों के लिए भोज्य हो ।

१००५. घोषो देवानां जयतामुदस्थात् । १८५७
विजयी देवों की जय-ध्वनि गूँजी ।

१००६. तेषां वो अग्निनुन्नाम् इन्द्रो हन्तु वरंवरम् । १८७१
अग्निबाण से दग्ध शत्रुसेना के सैनिकों में से प्रमुखों को इन्द्र (राजा) मार डाले ।

१००७. देवसेनानामभिभञ्जतीनां
जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् । १८५६
विजयिनी और शत्रुमर्दक देवसेना के आगे-आगे मरुत् देव (सशस्त्र योद्धा) चलें ।

१००८. ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे । ३४२
हे शतक्रतु इन्द्र! विद्वानों ने तुझको ध्वज की तरह उठाया ।

१००९. भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत् । ५९०
हम युद्ध में सदा विजयलाभ करें ।

१०१०. महामनसां भुवनच्यवानाम् । १८५७
देवगण महामनस्वी और संसार को हिला देने वाले हैं ।

१०११. मैषां मोच्यघहारश्च नेन्द्र । १८६४
हे इन्द्र ! शत्रुसेना के किसी पापी को न छोड़ना ।

१०१२. वयांस्येनान् अनुसंयन्तु सर्वान् । १८६४
मृत शत्रु-सैनिकों पर गिद्ध आदि पक्षी टूट पड़ें ।

## (च) सेनापति

१०१३. अदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः । १८५५
अनन्त उत्साह वाला इन्द्र अत्यन्त निर्दयी वीर है ।

१०१४. अनाधृष्यौ सुप्रतीकावसह्यौ । १८६९
इन्द्र (सेनापति) की भुजाएँ अधृष्य, सुन्दर और असह्य हैं ।

१०१५. अनुत्तश्चर्षणीधृतिः । २४८
इन्द्र अजेय और प्रजा का आश्रय है ।

१०१६. अपारं वृषभं सुवज्रम् । ३३५
इन्द्र अपार शक्ति वाला, सुखवर्षक और वज्रधारी है ।

१०१७. अभि गोत्राणि सहसा गाहमानः । १८५५
इन्द्र अपनी शक्ति से शत्रुओं की रक्षापंक्ति को तोड़ देता है ।

१०१८. अभिवीरो अभिसत्वा सहोजाः । १८५३
इन्द्र शक्ति का पुत्र है । वह वीरों और पराक्रमियों से घिरा हुआ है ।

१०१९. अस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु । १८५५
इन्द्र (सेनापति) युद्धों में हमारी सेना की रक्षा करे ।

१०२०. अस्माकम् एध्यविता रथानाम् । १८५२
हे इन्द्र ! तुम हमारे रथों की रक्षा करना ।

१०२१. आशुं जेतारं हेतारम् । २८३
इन्द्र क्षिप्रकारी, विजयी और प्रेरक है ।

१०२२. आशुः शिशानो वृषभो न भीमः । १८४९
इन्द्र क्षिप्रकारी, अस्त्रों को तीक्ष्णकर्ता और साँड़ के तुल्य भयंकर है

१०२३. इन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् । १८५४
हे मित्रो ! इन्द्र का अनुसरण करते हुए पराक्रम करो ।

१०२४. इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा । १८५६
इन्द्र देवसेना का नेता है और बृहस्पति उसका दाहिना अंग है ।

१०२५. इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ युवानौ । १८६९
इन्द्र की भुजाएँ अनुभवी और युवाशक्ति-युक्त हैं ।

१०२६. इन्द्रो वज्री हिरण्ययः । २८९
इन्द्र वज्रधारी और स्वर्णिम आभा वाला है ।

१०२७. इमं सजाता अनु वीरयध्वम् । १८५४
हे बन्धुओ ! इस इन्द्र का अनुसरण करो और शौर्य-प्रदर्शन करो ।

१०२८. उग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता । १८५१
वह इन्द्र भयंकर धनुर्धर और व्यवस्थित बाण फेंकने वाला है ।

१०२९. उत्सत्वनां मामकानां मनांसि । १८५८
हे इन्द्र ! हमारे उत्साही मन को हर्षित करो ।

१०३०. उद्धर्षय मघवन् आयुधानि । १८५८
हे इन्द्र ! हमारे शस्त्रास्त्रों को प्रदीप्त करो ।

१०३१. उद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः । १८५८
हे इन्द्र ! हमारे विजयी रथों की ध्वनि फैले ।

१०३२. उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो
नि या वज्रं मिमिक्षतुः । १४५९
हे शतक्रतु इन्द्र ! तुम्हारी दोनों भुजायें शक्तिशाली हैं । ये वज्र को संभालती हैं ।

१०३३. उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु ।१८७०
हे सेनापति ! वरुण तुम्हारा अधिक से अधिक भला करे ।

१०३४. कं हनः कं वसौ दधः । ४१४

हे सेनापति ! तुमने किसको मारा और किसको धन दिया ?

१०३५. गृणीमसि वृषणं पृत्सु सासहिम् । ३८३

सुखवर्षक और सेनाओं पर विजय पाने वाले इन्द्र की हम स्तुति करते हैं ।

१०३६. गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुम् । १८५४

इन्द्र रक्षापंक्ति का भेदक, भूमिजेता और वज्र-तुल्य बाहु वाला है।

१०३७. घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । १८४९

इन्द्र भयंकर प्रहारक और शत्रुजनों को क्षुब्ध करने वाला है ।

१०३८. जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु । १८७०

हे इन्द्र ! तेरी विजय पर देवता प्रसन्न हों ।

१०३९. जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा । १८५४

इन्द्र युद्ध में विजेता है और अपनी शक्ति से शत्रुनाशक है ।

१०४०. जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् । १८५३

हे भूमिजेता इन्द्र ! तुम इस विजयशील रथ पर बैठो ।

१०४१. तदिन्द्रेण जयत तत् सहध्वम् । १८५०

हे सैनिको ! इन्द्र के साथ युद्ध जीतो और शत्रुसेना को हराओ ।

१०४२. तव तन्न ऊतये । २७४

हे इन्द्र ! तुम्हारा बल हमारी रक्षा के लिए है ।

१०४३. तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्सु । १४०९

सोम तीक्ष्ण शस्त्रधारी और युद्धों में चतुर बाणचालक है ।

१०४४. त्वं वृत्राणि हंसि । २४८

हे इन्द्र! तुम शत्रुओं को मारते हो ।

१०४५. त्वमिन्द्र यशा असि, ऋजीषी शवसस्पतिः । २४८

हे इन्द्र ! तुम यशस्वी, ऋजुमार्गगामी और शक्ति के स्वामी हो ।

१०४६. दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्यः । १८५५
इन्द्र अदम्य, शत्रुसेनाजेता और अजेय है ।

१०४७. न ते वज्रो नि यंसते । ४१३
हे इन्द्र! तुम्हारा वज्र कहीं रुकता नहीं है ।

१०४८. न त्वा वज्रिन् सहस्रं सूर्याः । २७८
हे वज्रधारी इन्द्र ! सैकड़ों सूर्य भी तेरे बराबर नहीं हैं ।

१०४९. प्रभञ्जन् सेनाः प्रमृणो युधा जयन् । १८५२
इन्द्र शत्रुनाशक हैं । वह शत्रुसेनाओं को नष्ट करता हुआ युद्ध में जीतता है ।

१०५०. प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन् एति । ५३३
सोम सेनापति और वीर है । वह विजय की इच्छा से रथों के आगे चलता है ।

१०५१. प्रहेतारम् अप्रहितम् । २८३
वह इन्द्र प्रहारकर्ता है, कोई उस पर प्रहार नहीं कर सकता ।

१०५२. बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः । १८५३
इन्द्र शत्रुसेना के बल का ज्ञाता, अनुभवी और श्रेष्ठ वीर है ।

१०५३. बृहस्पते परि दीया रथेन । १८५२
हे बृहस्पति ! अपने रथ से इधर आवो ।

१०५४. भद्रान् कृण्वन् इन्द्रहवान् । ५३३
वह सोम इन्द्र को पुकारने वालों का कल्याण करता है ।

१०५५. मर्माणि ते वर्मणा छादयामि । १८७०
मैं योद्धा के मर्मस्थलों को कवच से ढकता हूँ ।

१०५६. य उग्रः सन् अनिष्टृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः । १६९८
वह इन्द्र भयंकर, अजेय, अविचल और युद्ध के लिए कटिबद्ध है।

१०५७. यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणम् । ३३४
दाहिने हाथ में वज्रधारी इन्द्र के लिए हम यज्ञ करते हैं ।

१०५८. या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वां असुरेभ्यः । २५४
हे तेजोमय इन्द्र ! तुमने असुरों का भोज्य-धन हरण किया ।

१०५९. याभ्यां जितमसुराणां सहो महत् । १८६९
हे इन्द्र! तुमने अपनी भुजाओं से असुरों की महान् शक्ति जीत ली।

१०६०. युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी । ४१४
हे इन्द्र ! तुम अपने मदवर्षक घोड़ों को जोतो ।

१०६१. युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना । १८५०
इन्द्र युद्धकर्ता, अजेय और हराने वाला है ।

१०६२. युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा । १८५०
हे सैनिको ! तुम इषुधारी और बली इन्द्र के साथ रहकर जीतो ।

१०६३. रक्षोहाऽमित्राँ अपबाधमानः । १८५२
वह बृहस्पति राक्षसों का नाशक और शत्रुओं का जेता है ।

१०६४. रथीतममतूर्तं तुग्रियावृधम् । २८३
वह इन्द्र श्रेष्ठ महारथी, अविजित और शक्तिशाली का वर्धक है ।

१०६५. वज्रिणं भृष्टिमन्तं पुरुधस्मानम् । ३२७
इन्द्र वज्रधारी, तीक्ष्ण शस्त्रधारी और असंख्यों का नाशक है ।

१०६६. वि द्विषो वि मृधो जहि । २७४
हे इन्द्र ! तुम हमारे द्वेषियों और शत्रुओं को नष्ट करो ।

१०६७. विश्वगूर्तम् ऋभ्वसम् अधृष्टं धृष्णुमोजसा । २४३
इन्द्र सबका स्तुत्य, निपुण, अधृष्य और अपने तेज से धर्षक है ।

१०६८. वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुः । २५७
वह शतक्रतु इन्द्र वृत्र का हन्ता है ।

१०६९. शतं पुरो रुरुक्षणिम् । ८३७
वह सोम सैकड़ों नगरों का नाशक है ।

१०७०. शतं सेना अजयत् साकमिन्द्रः । १८४९
इन्द्र ने सैकड़ों सेनाओं को एक साथ जीता ।

१०७१. संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना । १८५०

इन्द्र गरजने वाला, विजयी और सदा जागरूक है ।

१०७२. संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः । १८४९

इन्द्र अद्वितीय वीर है । वह गरजने वाला और सदा जागरूक है ।

१०७३. संसृष्टजित् सोमपा बाहुशर्धी । १८५१

इन्द्र शत्रु-विजेता, सोमपायी और बाहुबली है ।

१०७४. संस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन । १८५१

वह इन्द्र अपने गणों के द्वारा योद्धाओं को एकत्र कर लेता है ।

१०७५. स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी । १८५१

वह इन्द्र (सेनापति) हाथों में बाण वाले और तूणीरधारी सैनिकों के द्वारा शत्रुओं को वश में करता है ।

१०७६. सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते । ५३३

सोम (सेनापति) अपने मित्रों को सद्यः वस्त्रादि देता है ।

१०७७. सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रम् । ३३५

इन्द्र (सेनापति)सदा शत्रुनाशक, धर्षक और उग्र स्वभाव वाला है।

१०७८. सनितोत वाजं दाता मघानि । ३३५

इन्द्र (सेनापति) शक्तिदाता और धनदाता है ।

१०७९. सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः । १८५३

इन्द्र (सेनापति) बलवान्, शक्तिशाली, विजेता और भयंकर है ।

१०८०. सेनाभिर्भयमानो वि राधसा । ३३४

इन्द्र (सेनापति) अपनी सेना और समृद्धि से भयावह है ।

१०८१. सोमस्त्वा राजाऽमृतेनानु वस्ताम् । १८७०

सोम राजा तुम्हें अमरत्व से आच्छादित करे ।

१०८२. हनो वृत्रं जया अपः । ४१३
हे इन्द्र (सेनापति) ! तुम वृत्र (शत्रु) को मारो और जल पर अधिकार करो ।

१०८३. हन्ता यो वृत्रम् । ३३५
वह इन्द्र (सेनापति) वृत्रों (शत्रुओं) को मारने वाला है ।

१०८४. हर्षते अस्य सेना । ५३३
सोम (सेनापति) की सेना उसके पराक्रम से प्रसन्न होती है ।

## (छ) युद्ध

१०८५. अथेमा विश्वाः पृतना जयासि । ३२४
हे इन्द्र ! तुम सारी शत्रुसेना को जीतते हो ।

१०८६. इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते । ३१८
सशस्त्र युद्ध में योद्धा इन्द्र को पुकारते हैं ।

१०८७. इन्द्रं समीके वनिनो हवामहे । २४९
युद्ध में विजय के इच्छुक हम इन्द्र को पुकारते हैं ।

१०८८. एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं तनूषु धेहि नः । २३१
हे इन्द्र ! तुम प्रत्येक युद्ध में हमारे शरीर में महाशक्ति दो ।

१०८९. को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य । ३४१
कौन आज सत्य की धुरा में हमारी इन्द्रियों को लगा रहा है ?

१०९०. तत्र नो ब्रह्मणस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु । १८६६
उस युद्ध में ज्ञानाधिपति अदिति (ईश्वर) हमारा कल्याण करे ।

१०९१. त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः । ३११
हे इन्द्र ! तुम युद्धों में सभी शत्रुओं को नष्ट करते हो ।

१०९२. मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्तु । ३२४
हे इन्द्र ! तेरी मरुतों (मरने के लिए उद्यत सैनिकों) से मित्रता हो ।

१०९३. यत्र बाणाः संपतन्ति कुमारा विशिखा इव । १८६६
युद्ध में बाण शिखारहित बालकों की तरह उड़ते हुए आते हैं ।

१०९४. सत्राजिदुग्र पौंस्यम् । २३१
हे भयंकर इन्द्र ! तुम्हारा पराक्रम सदा विजयशील है ।

१०९५. सप्तिमाशुमिवाजिषु । १५२७
युद्धों में तीव्रगति वाले घोडों को लगाया जाता है ।

१०९६. समत्सु त्वा हवामहे । ११६७
हे अग्नि ! युद्धों में हम तुम्हें पुकारते हैं ।

## (ज) योद्धा

१०९७. अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत । ४१५
प्रिय योद्धाओं ने अच्छा भोजन किया, आनन्दित हुए और युद्ध के लिए तैयार हुए ।

१०९८. अभि त्वा शूर नोनुमः । २३३
हे शूर वीर इन्द्र ! हम तुम्हें प्रणाम करते हैं ।

१०९९. अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम् । १०५३
हे श्रेष्ठ आयुधधारी सोम ! तुम हमारे ऊपर दुगुना धन बरसो ।

११००. अभ्यर्षानपच्युतो वाजिन् समत्सु सासहिः । १०५४
हे अजेय, शक्ति शाली और युद्धों में विजेता इन्द्र! तुम हमें ऐश्वर्य दो ।

११०१. अयुद्ध इद् युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः । १३४०
अजेय योद्धा पराक्रमी शूरवीरों वाली अपनी सेना को आगे ले जाता है ।

११०२. असि दभ्रस्य चिद् वृधः । १००३
हे इन्द्र ! तुम निर्बल में भी शक्ति फूंकने वाले हो ।

११०३. असि भूरि परादद्दिः । १००३
हे इन्द्र ! तुम बहुत ऐश्वर्य देने वाले हो ।

११०४. असि हि वीर सेन्यः । १००३
तुम सशस्त्र युद्ध करने वाले वीर हो ।

११०५. अस्माँ उ देवा अवता हवेषु । १८५९
देवता युद्धों में हमारी रक्षा करें ।

११०६. अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु । १८५९
हमारे वीर योद्धा सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हों ।

११०७. आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध । ७८६
हे आयुधारी सोम ! प्रसन्न मन होकर तुम हमें महाशक्ति दो ।

११०८. आ शिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । ३९०
हे मित्रो ! हम वज्रधारी इन्द्र की विजय के लिए प्रार्थना करते हैं ।

११०९. उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ । १८६२
हे योद्धाओ ! तुम्हारी भुजायें भयंकर हों, जिससे तुम अजेय हो सको ।

१११०. एवा ते राध्यं मनः । २३२
हे योद्धा ! तुम्हारा मन स्तुत्य है ।

११११. एवा हि वीरस्तवते सदावृधः । ३८५
दूसरों की सहायता करने वाले वीर की सदा प्रशंसा होती है ।

१११२. एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः । २३२, ८२४
हे इन्द्र ! तुम वीरप्रेमी, शूरवीर और दृढ़निश्चयी हो ।

१११३. एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः । १२५८
यह शूरवीर योद्धाओं के साथ जाता हुआ समस्त ऐश्वर्य पा जाता है ।

१११४. कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् । ३८७
वह इन्द्र अकेला ही सारी शत्रुसेनाओं को जीतता है ।

११९५. त्वं नो वीर वीर्याय चोदय । १५०६
हे वीर सोम ! तुम हमें पराक्रम के लिए प्रेरित करो ।

१११६. त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित् । ९५५
हे सोम ! तुम महान् वीर और सर्वज्ञ हो ।

१११७. नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे । १६७९
दक्षता युक्त व्यक्ति को और आसनस्थ वीर को सोम रस दिया जाता है ।

१११८. निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः । १७५५
योद्धा युद्ध के लिए अपने शस्त्रों को सुसज्जित करते हैं ।

१११९. प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु । १८६२
हे योद्धाओ ! तुम आगे बढ़ो, जीतो । ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे ।

११२०. भूरि शस्त्रं पृथुः स्वरुः ।१३३९
तुम्हारे पास विविध शस्त्र और विशाल खड्ग हों ।

११२१. मा त्वा केचिन्नि येमुरिन्न पाशिनः । २४६
कोई भी बाँधने वाले तुझे न बाँध सकें ।

११२२. यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि । २५३
हे शूरवीर ! तुझ यशस्वी और धन दिलाने वाले का हम अनुसरण करते हैं ।

११२३. युजं वाजेषु चोदय । ८०५
अपने साथी को युद्ध के लिए प्रेरित करो ।

११२४. युध्मं सन्तमनर्वाणम् । १६४३
तुम अजेय योद्धा हो ।

११२५. रथीतमं रथीनाम् । ३४३
तुम रथ वालों में महारथी हो ।

११२६. वज्रं हिन्वन्ति सायकम् । १००६
ये शत्रुनाशक वज्र (अस्त्र) चलाते हैं ।

११२७. वज्रिं चित्रं हवामहे । ४०८
हम दर्शनीय वज्रधारी इन्द्र को रक्षार्थ पुकारते हैं ।

११२८. शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून् । ३४१
ये योद्धा पराक्रमी, तेजस्वी और अजेय शक्ति वाले हैं ।

११२९. शूर आजति सत्वभिः । १३४०
शूरवीर योद्धाओं के साथ आगे बढ़ता है ।

११३०. शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः । १२२९
वह सोम शूरवीरों के तुल्य दोनों हाथों में शस्त्र धारण करता है ।

११३१. शूरो रथेभिराशुभिः । १२६६
शूरवीर तीव्रगामी रथों से चलता है ।

११३२. स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम् । ३८७
हे मित्रो ! हम स्तुत्य नेता इन्द्र की स्तुति करते हैं ।

## (झ) शस्त्रास्त्र

११३३. अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् । १८६१
हमारे शत्रु तामस अस्त्र से घोर अंधकार में पड़ जाएँ ।

११३४. अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः । २११
हे इन्द्र ! तुमने समुद्रफेन से वृत्र का शिर काट दिया ।

११३५. अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैः । १८६१
हे तामस अस्त्र ! तुम जाओ और शत्रुओं के हृदय शोक से जला दो ।

११३६. अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती । १८६१
हे तामस अस्त्र ! तुम शत्रुओं के हृदय को भ्रान्त कर दो ।

११३७. अय आ देवयुं जनम् । २३
हे अग्नि ! तुम देवभक्त के पास रहते हो ।

११३८. अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते । १८६३
हे बाण ! तुम मंत्रशक्ति से युक्त होकर अपने लक्ष्य पर गिरो ।

११३९. आ बुन्दं वृत्रहा ददे । २१६
इन्द्र ने अपना बाण उठाया ।

११४०. इन्द्रं गच्छन् आयुधा संशिशानः । ५३६
राजा सोम अपने अस्त्र तीक्ष्ण करता हुआ इन्द्र के पास जाता है ।

११४१. गच्छामित्रान् प्र पद्यस्व मामीषां कं चनोच्छिषः । १८६३
हे बाण ! तुम शत्रुओं पर गिरो और किसी को जीवित न छोड़ो ।

११४२. गृहाणाऽङ्गान्यप्वे परेहि । १८६१
हे तामस अस्त्र ! तुम शत्रुओं के अंगों पर प्रभाव डालते हुए दूर तक जाओ ।

११४३. तां गूहत तमसापव्रतेन । १८६०
हे तामस अस्त्र ! तुम घोर अंधकार से शत्रुसेना को छिपा दो ।

११४४. दधे हस्तयोर्वज्रमायसम् । ४२३
इन्द्र ने दोनों हाथों में लोहनिर्मित वज्र (अस्त्र) धारण किया ।

११४५. घृष्णवे धनुष्टन्वन्ति पौंस्यम् । ५५१
सोमरस धनुष की तरह पराक्रमी में पुरुषार्थ भर देता है ।

११४६. ब्रह्म वर्म ममान्तरम्। १८७२
ज्ञान (आत्मबल) ही मेरा आन्तरिक कवच है ।

११४७. यथैतेषामन्यो अन्यं न जानात् । १८६०
तामस अस्त्र से शत्रुसेना के व्यक्ति एक-दूसरे को न जान सकें ।

११४८. या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे । ४८०
तुम्हारे पास शत्रुनाश के लिए भयंकर और तीक्ष्ण अस्त्र हैं ।

११४९. वज्रिं चित्रं हवामहे । ७०८
हम दर्शनीय वज्रधारी इन्द्र को रक्षार्थ बुलाते हैं ।

११५०. शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा । २५७
इन्द्र ने १०० पर्व (गाँठ) वाले वज्र से वृत्र को मारा ।

११५१. शतानीकेव प्र जिगाति घृष्णुया । ८१२
इन्द्र सौ सेनाओं से युक्त की तरह निःशंक जाता है ।

११५२. शर्म वर्म ममान्तरम् । १८७२
पुण्य ही मेरा आन्तरिक कवच है ।

११५३. सहो नः सोम पृत्सु धाः । ११८६
हे सोम ! तुम हमारी सेना में शक्ति भर दो ।

११५४. स्वायुधः सोतृभिः सोम सूयसे । १०३३
हे सोम ! तुम आयुधधारी हो। यजमान तुम्हारे लिए सोमरस निकालते हैं ।

११५५. हरिस्तुञ्जान आयुधा । १७६२
राजा सोम शस्त्रों को तेजी से घुमाता हुआ जाता है ।

## (ञ) शत्रुनाशन

११५६. अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः । ९२४
उस कर्मठ इन्द्र ने सभी शत्रुओं को पराजित किया ।

११५७. अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माँ अभिदासति । १०९२
जो हमसे शत्रुवत् व्यवहार करता है, उसे पैर से रौंद दो ।

११५८. अनु दह सहमूरान् क्रव्यादः । ८०
मांसाहारियों को समूल जला दो (नष्ट कर दो) ।

११५९. अपघ्नन् पवसे मृधः । १२३७
हे सोम ! तुम शत्रुओं को नष्ट करते हुए पवित्र करते हो ।

११६०. अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः । ६३३
राजा को देखकर चोर की तरह, सूर्य को देखकर नक्षत्र छिप जाते हैं ।

११६१. अप सोम मृधो जहि । १०४९
हे सोम ! तुम शत्रुओं को नष्ट करो ।

११६२. अपामित्रा अपाचितो अचेतः । ११०६
हे सोम ! तुम शत्रुओं को और नास्तिकों को यहाँ से हटा दो ।

११६३. अमैरमित्रमर्दय । ११, १६४८
हे अग्नि ! तुम अपनी शक्ति से शत्रुओं को नष्ट करो ।

११६४. अव यद् दानवान् हन् । ३१५
हे इन्द्र ! तुमने राक्षसों को मारा ।

११६५. अव स्म दुर्हणायतो मर्तस्य तनुहि स्थिरम् । १०९२
हे इन्द्र ! तुम दुर्भावना वाले मनुष्यकी स्थिर संपत्ति भी नष्ट कर दो ।

११६६. अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि । १६३७
हे इन्द्र ! तुम पिता हो, अमंगल के नाशक और पापियों के हन्ता हो ।

११६७. उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः । १७१४
हे वज्रधारी इन्द्र ! तेरी शक्ति, राक्षसों को नष्ट करती हुई, विकसित हुई ।

११६८. घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः । १७०१
हे सोम ! तुम शत्रुओं के नाशक हो ।

११६९. जहि विश्वा अप द्विषः । ११८४
हे सोम ! तुम सभी शत्रुओं को नष्ट करो ।

११७०. तपानो देव रक्षसः । ३९
हे अग्नि देव ! तुम राक्षसों (पापियों) को जलाने वाले हो ।

११७१. त्वं तूर्य तरुष्यतः । १६३७
हे इन्द्र ! तुम आक्रमणकारियों को दबोच लो ।

११७२. देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु । १८७२
सभी देवता पापी को नष्ट कर दें ।

११७३. द्विषो अंहो न तरति । ३६५
ईशकृपा से व्यक्ति, पापकर्मों की तरह, शत्रुओं को जीत लेता है ।

११७४. न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः । ८०
हे अग्नि ! पापी तुम्हें युद्धों में नहीं जीत पाते हैं ।

११७५. नि मायिनस्तपसा रक्षसो दह । १०६
हे अग्नि ! तुम अपनी ऊष्मा से मायावी राक्षसों को जला दो ।

११७६. परि बाधो जही मृधः । १३४
हे इन्द्र ! बाधा डालने वाले सभी शत्रुओं को मार डालो ।

११७७. परि वृत्राणि सक्षणिः । ४२८
हे इन्द्र ! तुम सभी पापियों को जीतने वाले हो ।

११७८. पवमान जही मृधः । १२१४
हे सोम ! तुम सभी शत्रुओं को मार डालो ।

११७९. पुनानो घ्नन् अप द्विषः । १२८६
सोम पवित्र करता है और शत्रुओं को नष्ट करता है ।

११८०. प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणाहि । ९५
हे अग्नि ! अपने तेज से पापियों का तेज नष्ट कर दो ।

११८१. भिन्धि विश्वा अप द्विषः । १३४, १०७०
हे इन्द्र ! तुम सभी शत्रुओं को मार डालो ।

११८२. मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय । १६८३
हे इन्द्र ! पापियों को नष्ट करने के कार्य में सहयोग के लिए धनवानों को प्रेरित करो ।

११८३. मन्युं जनस्य दूढ्यम् । ११३
हे अग्नि ! लोगों के दुर्भावपूर्ण क्रोध को हम जीतें ।

११८४. मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः । ८०
हे अग्नि ! कोई भी पापी तुम्हारे दिव्य अस्त्र से न बच सके ।

११८५. मायाविनो ममिरे अस्य मायया । ८७७
मायावी लोग सोम की माया से नप गए (हार गए) ।

११८६. यातुधानस्य रक्षसो बलं न्युब्जवीर्यम् । ९५
हे अग्नि ! पापी राक्षसों की शक्ति को अधोमुख करके नष्ट करो।

११८७. येना हंसि न्यत्रिणं तमीमहे । ३९४
हे इन्द्र ! जिस शक्ति से शोषकों को नष्ट करते हो, वह हमें दो ।

११८८. यो अस्माँ अभिदासति अधरं गमया तमः । १८६८
जो हम पर आक्रमण करता है, उसे घोर अंधकार में डाल दो ।

११८९. यो नः स्वोऽरणो यश्च निष्ट्यो जिघांसति । १८७२
जो अपना, पराया या बाहरी हमें मारना चाहता है, उसे नष्ट करो ।

११९०. रीषतः, तपिष्ठैरजरो दह । २४
हे अग्नि ! हिंसकों को खूब तपा कर जला दो ।

११९१. रुज यस्त्वा पृतन्यति । १७१६
जो तुम पर आक्रमण करता है, उस समूल नष्ट कर दो ।

११९२. वाजी वाजेषु धीयते । १४७८
बलवान् को बलप्रयोग के कार्यों में लगाया जाता है ।

११९३. विघ्नन् रक्षांसि देवयुः । १२९२
सोम देवभक्त है और वह राक्षसों (राक्षसी भावों) को नष्ट करता है ।

११९४. वि द्विषो वि मृधो जहि । १३२१
तुम अपने द्वेषियों और शत्रुओं को मार डालो ।

११९५. वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः । १८६८
हे इन्द्र ! तुम हमारे शत्रुओं को नष्ट करो और आक्रामकों को नीचा दिखावो ।

११९६. वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन् अमित्रस्याभिदासतः । १८६७
हे इन्द्र ! तुम आक्रामक शत्रु के क्रोध को नष्ट कर दो ।
११९७. वि रक्षो वि मृधो जहि । १८६७
तुम पापियों और शत्रुओं को मार डालो ।
११९८. वि वृत्रस्य हनू रुज । १८६७
तुम पापी की हनु (ठोड़ी) तोड़ दो ।
११९९. वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व । १८७३
तुम शत्रुओं को पीस दो और आक्रमकों को दूर भगावो ।
१२००. विश्वा अप द्विषो जहि । ४७९, ७७८
सभी शत्रुओं को मार डालो ।
१२०१. विश्वा यदजय स्पृधः । २११
सभी शत्रुओं को जीत लो ।
१२०२. विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे । १६३८
हे इन्द्र ! तुम्हारे क्रोध के सामने सारे शत्रु ढीले पड़ जाते हैं ।
१२०३. विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति । ११४
अग्नि सारे राक्षसों (दूषित कीटाणुओं) को नष्ट करता है ।
१२०४. वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि । १६३८
इन्द्र (जीवात्मा) वृत्र (पापों) को नष्ट कर देता है ।
१२०५. वृत्रेषु शत्रून् सहना कृधी नः । ६२५
हे इन्द्र ! हमें पापी शत्रुओं पर विजयी बनाइए ।
१२०६. स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति । १५६३
हे तीक्ष्ण दाढ़ वाले अग्नि ! तुम राक्षसों (कीटाणुओं) को जला दो ।
१२०७. सनादग्ने मृणसि यातुधानान् । ८०
हे अग्नि ! तुम सदा पापियों को नष्ट करते हो ।
१२०८. सासह्याम पृतन्यतः । ७७९
हम आक्रामकों पर विजय प्राप्त करें ।

१२०९. सासाहा सदने कं चिदत्रिणम् । ११३

हम अपने घर में सभी शोषकों पर विजय प्राप्त करें ।

१२१०. सासह्याम दस्यून् तनूभिः । ९८७

हम दस्युओं (पापी, चोरों) को अपने शारीरिक बल से जीतें ।

१२११. साह्वान् विश्वा अभि स्पृधः । ९६८

सोम सभी शत्रुओं को जीतने वाला है ।

१२१२. हथो विश्वा अप द्विषः । ८५५

इन्द्र और अग्नि सभी शत्रुओं को मार देते हैं ।

१२१३. हथो वृत्राण्यार्या । ८५५

इन्द्र और अग्नि आर्य हैं, ये पापियों को नष्ट कर डालते हैं ।

१२१४. हन्ता दस्योः । १२४९

इन्द्र दस्युओं (पापी, चोरों) का हन्ता है ।

१२१५. हन्ति वृत्राणि दाशुषे । ८१२

इन्द्र (राजा) दाता के लिए पापियों को नष्ट करता है ।

## (ट) सुरक्षा

१२१६. अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे । १०

हे अग्नि ! महान् सुरक्षा के लिए हमें प्रभामय तेज दो ।

१२१७. अग्ने हेडांसि दैव्या युयोधि नः । १६२४

हे अग्नि ! दैवी क्रोध को हमसे दूर रखो ।

१२१८. अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः । १४५८

हे इन्द्र ! तुम प्रतिदिन (आज भी और कल भी) हमारी रक्षा करना ।

१२१९. अवा नः पार्ये धने । १६४४

हे इन्द्र ! निर्णायक युद्ध में तुम हमारी सहायता करना ।

१२२०. अवा नो अग्न ऊतिभिः । १५२४
हे अग्नि ! तुम अपने संरक्षण से हमारी रक्षा करना ।

१२२१. अस्माँ अवन्तु ते धियः । २३९
हे इन्द्र ! तुम्हारी अनुग्रह-बुद्धि हमारी रक्षा करे ।

१२२२. इन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्ति भिः । ३७७
मैं सुन्दर स्तुतियों से इन्द्र को सुरक्षार्थ अपनी ओर आकृष्ट करूँ ।

१२२३. इन्द्रं सबाध ऊतये . . . . हुवे । २३७
मैं युद्ध में सुरक्षार्थ इन्द्र का आह्वान करता हूँ ।

१२२४. इन्द्र वाजेषु नोऽव । ५९८
हे इन्द्र ! युद्धों में हमारी रक्षा करना ।

१२२५. उत द्विषो मर्त्यस्य । ६
हे अग्नि ! तुम मनुष्यों के द्वेष से हमारी रक्षा करना ।

१२२६. ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठ । ५७
हे अग्नि ! तुम हमारी रक्षा के लिए उठकर खड़े हो जाओ ।

१२२७. ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये । १६०१
हे इन्द्र ! तुम हमारी रक्षा के लिए खड़े हो जाओ ।

१२२८. जरितॄन् सत्पते अह्ना दिवा नक्तं च रक्षिषः । १४५८
हे सज्जनों के पालक इन्द्र ! तुम भक्तों की दिन-रात रक्षा करना ।

१२२९. तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः । १०८
हे अग्नि ! तेरे वीरता-युक्त एवं पुरुषार्थ से युक्त संरक्षण से व्यक्ति तर जाता है ।

१२३०. त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः । ६
हे अग्नि ! तुम अपने तेज से हमें सभी शत्रुओं से बचाओ ।

१२३१. देवा अवो वरेण्यम् । ४८
हे देवो ! तुम्हारे उत्तम संरक्षण की याचना करता हूँ ।

**१२३२. परिष्वजन्त . . . . मघवानमूतये । ३७५**

हम परस्पर प्रेम युक्त होकर संरक्षण के लिए इन्द्र का आह्वान करते हैं ।

**१२३३. प्र स्म वाजेषु नोऽव । १५४५**

हे अग्नि ! तुम युद्धों में हमारी रक्षा करना ।

**१२३४. मामव परिधींरति ताँ इहि । ५१६**

हे सोम ! तुम आवो और मुझे शत्रुओं के घेरे से बाहर ले जाओ ।

**१२३५. युयोधि नोऽदेवानि हरांसि च । १६२४**

हे अग्नि ! तुम हमें नास्तिकों के कपटों से दूर रखो ।

**१२३६. यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । १३०६, १६२७**

हे देवो ! तुम सदा कल्याण करके हमारी रक्षा करना ।

**१२३७. रक्षा तोकमुत त्मना । १२४६**

हे अग्नि ! तुम स्वयं हमारे बालकों की रक्षा करना ।

**१२३८. रक्षा समस्य नो निदः । ७८०**

हे सोम ! सभी शत्रुओं से हमारी रक्षा करना ।

**१२३९. वहा भगत्तिमूतये । ८३५**

हे इन्द्र ! सुरक्षा के लिए हमें सौभाग्य का दान देना ।

**१२४०. सखाय इन्द्रमूतये । ४००**

हे मित्रो ! सुरक्षा के लिए मैं इन्द्र की स्तुति करता हूँ ।

**१२४१. सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये । ६२**

हे अग्नि ! हम मित्र-जन सुरक्षा के लिए तुझ देव को चुनते हैं ।

**१२४२. साधः कृण्वन्तमवसे । २१७**

वह इन्द्र संरक्षण के लिए हमारे अभीष्ट पूर्ण करता है ।

**१२४३. हवामहे सृप्रकरस्नमूतये । २१७**

हम सुरक्षा के लिए सुविस्तृत भुजा वाले इन्द्र का आह्वान करते हैं।

१२४४. हिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम् । ६९
सुरक्षा के लिए तेजोमय रूप वाले अग्नि को अपने अनुकूल बनाओ ।

## (६) अर्थशास्त्रीय

### (क) ऐश्वर्य, समृद्धि

१२४५. अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यम् । ८१
हे अग्नि ! तुम हमें ओजस्वी धन दो ।

१२४६. अग्निर्नो वंसते रयिम् । २२
अग्नि (ईश्वर) हमें ऐश्वर्य दे ।

१२४७. अग्ने स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तम् । १५२९
हे अग्नि (ईश्वर) ! हमें स्थायी और गाय आदि से युक्त प्रचुर धन दो ।

१२४८. अथा नो वस्यसस्कृधि । १०४७
हे सोम ! हमें प्रचुर धन वाला करो ।

१२४९. अभि येन द्रविणमश्नवामाभ्यार्षेयम् । १४२८
हम ऋषिजनोचित पवित्र धन प्राप्त करें ।

१२५०. अभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः । १४२८
हे सोम ! हमें पवित्र करते हुए सभी पार्थिव धन दीजिए ।

१२५१. अभी नो अर्ष दिव्या वसूनि । १४२८
हे सोम ! हमें दिव्य ऐश्वर्य प्रदान कीजिए ।

१२५२. अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम् । ५४९
हे सोम ! हमें, सहस्रों द्वारा प्रार्थित, अति उत्तम ऐश्वर्य दीजिए ।

१२५३. अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतदा । १०१
स्थिरचित्त अग्नि ने ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए दृढ़ निश्चय किया ।

१२५४. अया पवा पवस्वैना वसूनि । ११०४

हे सोम ! इस पवित्रता से हमारे धनों को पवित्र कीजिए ।

१२५५. अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः । ३१७

हे इन्द्र (ईश्वर) ! हमें शक्तिशाली और तेजस्वी ऐश्वर्य दीजिए ।

१२५६. अस्मभ्यं रोदसी रयिम् । ११३६

द्यावापृथिवी हमें ऐश्वर्य दें ।

१२५७. अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवः । १६१०

हमें ऐश्वर्य और वीरोचित बल प्राप्त हुआ है ।

१२५८. आ नो अग्ने रयिं भर सत्रासाहं वरेण्यम् । १५२५

हे अग्नि ! हमें सदा विजयशील और श्रेष्ठ धन दीजिए ।

१२५९. आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु । १४९९

हे अग्नि ! हमें सर्वोत्कृष्ट और मध्यम कोटि का ऐश्वर्य दो ।

१२६०. आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम् । ५०१

हे सोम ! हमें सहस्रों की संख्या में धन और उत्तम शक्ति दो ।

१२६१. आ भर रयिं वीरवतीमिषम् । ७८९

हे सोम ! हमें ऐश्वर्य और वीर पुत्रों से युक्त अन्नादि दो ।

१२६२. इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः । ४५३

हे इन्द्र ! तुमसे हमें ऐश्वर्य प्राप्त हो ।

१२६३. उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पते । १०२४

हे शक्ति के स्वामी अग्नि ! तुम हमारी स्तुतियों से प्रसन्न होकर हमें पूर्ण कर दो ।

१२६४. उद् वा सिञ्चध्वम् उप वा मृणध्वम् । १५१३

हे देवो ! तुम हमें धन से सींच दो और पूरा भर दो ।

१२६५. उस्रा वेद वसूनाम् । १०५८

उषा प्रशस्त धन का मार्ग जानती है ।

१२६६. ऋध्यामा त ओहैः । ४३४
हे अग्नि ! हम तेरी स्तुति से समृद्ध हों ।

१२६७. ऐन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् । १२९
हे इन्द्र ! हमें सुखद, वृद्धिशील और सदाविजयी ऐश्वर्य दो ।

१२६८. कृणुष्व राधो अद्रिवः । १९४
हे वज्रधारी इन्द्र ! हमें ऐश्वर्य दो ।

१२६९. चित्रं राधो अमर्त्य, आ दाशुषे . . . . वह । ४०
हे अमर अग्नि (ईश) ! तुम दाता को तेजस्वी धन दो ।

१२७०. तदग्ने द्युम्नमा भर । ११३
हे अग्नि ! वह उत्तम धन हमें दो ।

१२७१. ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम् । ११९२
सोम हमें सहस्रों की संख्या में धन और उत्तम पराक्रम दे ।

१२७२. तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम् । १२३६
हे सोम ! तुम प्रशंसनीय धन देते हो !

१२७३. त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वैरयद् रयिम् । १०१५
सोम ने यज्ञ की धारा से त्रिविध (आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक) ऐश्वर्य को उच्च शिखर पर पहुँचाया ।

१२७४. त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः । २३४
हे इन्द्र ! हम स्तुतिकर्ता धन और बल के लिए तुझे पुकारते हैं ।

१२७५. दधद् रत्नानि दाशुषे । ३०
हे अग्नि ! तुम दाता को धन देते हो ।

१२७६. दधद् रयिं मयि पोषम् । १५२०
हे अग्नि ! मुझे ऐश्वर्य और पुष्टिकारक अन्न दो ।

१२७७. दधाति रत्नं विधते सुवीर्यम् । १५१४
अग्नि स्तोता को धन और पराक्रम देता है ।

१२७८. दिव्यं पार्थिवं वसु, तन्नः पुनान आ भर । ९९९
हे सोम ! तुम, पवित्र करते हुए, हमें दिव्य और पार्थिव ऐश्वर्य दो ।

१२७९. द्युमत्तमो रयिं दाः । ११०८
हे अतितेजोमय अग्नि ! हमें ऐश्वर्य दो ।

१२८०. द्युम्नं पृथिव्या अधि । ११८६
हे सोम ! हमें पृथिवी पर ऐश्वर्य दो ।

१२८१. द्युम्नं सुदत्र मंहय । ३६६
हे उदार दानी इन्द्र ! हमें तेजोमय धन दो ।

१२८२. धारया रयिं सहस्रवर्चसम् । १२०३
हे सोम ! हमें सहस्रों तेजस्विता वाला ऐश्वर्य दो ।

१२८३. धृष्णवे धीयते धनम् । ४१४
साहसी को धन मिलता है ।

१२८४. न स्रेधन्तं रयिर्नशत् । ८६८
अवसर चूकने वाले को श्री नहीं मिलती ।

१२८५. नृम्णा दधान ओजसा । १२७१
मनुष्य अपनी तेजस्विता से ऐश्वर्य पाता है ।

१२८६. पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र । ४४४
हम अपना ऐश्वर्य बढ़ावें और प्रभुभक्ति करें ।

१२८७. प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर । ३५२
इस प्यासे विद्वान् को सभी प्रकार का ऐश्वर्य दो ।

१२८८. प्र यो राये निनीषति । ५८
यज्ञ मनुष्य को ऐश्वर्य की ओर ले जाता है ।

१२८९. प्र राधांसि चोदयते महित्वना । ३८६
वह इन्द्र अपनी महिमा से मनुष्य को ऐश्वर्य देता है ।

१२९०. प्र वो महे महे वृधे भरध्वम् । ३२८, १७९३
तुम लोग महान् वृद्धि के लिए धन-संग्रह करो ।

१२९१. भद्रा ते पूषन् इह रातिरस्तु । ७५
हे पुष्टिकर्ता ईश ! तुम्हारा ऐश्वर्य हमारे लिए शुभ हो ।

१२९२. भद्रा रातिः । १११, १५५९
हमारा ऐश्वर्य कल्याणकारी हो ।

१२९३. मघवद्भ्यो ध्रुवं रयिम् । ९७१
उदार दानियों को स्थायी ऐश्वर्य दो ।

१२९४. महिषीव त्वद्रयिः । ८६
हे अग्नि ! तुमसे ऐश्वर्य इसी प्रकार प्रवाहित हो, जैसे रानी ( लक्ष्मी ) से ।

१२९५. महीमिषं दधासि सानसिं रयिम् । १८२०
हे अग्नि ! तुम विशाल अन्नभंडार और विजयशील ऐश्वर्य देते हो ।

१२९६. महो नो राय आ भर । १२१४
हे सोम ! हमें महान् ऐश्वर्य दीजिए ।

१२९७. मार्डीकं धेहि जीवसे । १५२६
हे अग्नि ! हम पर अनुग्रह करो कि सुखपूर्वक जीवें ।

१२९८. यदिन्द्र यावतस्त्वम् एतावदहम् ईशीय । ३१०
हे इन्द्र ! जितने के तुम स्वामी हो, उतने का स्वामी मैं भी होऊँ ।

१२९९. यदिन्द्राहं यथा त्वम् ईशीय वस्व एक इत् । १२२
हे इन्द्र ! तुम्हारी तरह मैं भी ऐश्वर्य का एकमात्र स्वामी होऊँ ।

१३००. यद् वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत् पर्शाने पराभृतम् ।२०७, १०७२
हे इन्द्र ! जो दृढ़ पर्वतादि में, जो स्थिर भूमि में और जो गहरे समुद्रादि में धन विद्यमान है, वह मुझे प्राप्त हो ।

१३०१. यन्मन्यसे वरेण्यम् इन्द्र द्युक्षं तदा भर । ११७३
हे इन्द्र ! तुम जो सर्वोत्तम समझते हो, वह दिव्य धन हमें दो ।

१३०२. योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । ७४३

हम प्रत्येक सत्कर्म और प्रत्येक युद्ध में बली इन्द्र को पुकारते हैं ।

१३०३. यो रयिं वो रयिन्तमो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः । ३५१

हे इन्द्र ! तुम्हारा जो सर्वश्रेष्ठ धन और तेज है, वह हमें दो ।

१३०४. यो रायामानेता य इडानाम् । १०९६

वह सोम धन और अन्नादि का दाता है ।

१३०५. यो वसूनां यो रायामानेता । ५८२

वह सोम समृद्धि और ऐश्वर्य का दाता है ।

१३०६. यो विश्वा दयते वसु । ४४

वह अग्नि सभी प्रकार का ऐश्वर्य देता है ।

१३०७. रयिं नश्चित्रमाश्विनम् । १०५६

हे सोम ! हमें तेजोमय एवं अश्वादि से युक्त धन दीजिए ।

१३०८. रयिं पावक शंस्यम्, रास्वा च नः । ४३

हे अग्नि ! हमें प्रशंसनीय धन दो ।

१३०९. रयिं विश्वायुपोषसम् । १५२६

हे अग्नि ! हमें जीवन भर पुष्टिकारक ऐश्वर्य दो ।

१३१०. रयिरभ्ययद् राजानं सुक्रतो दिवः । ८३८

हे सत्कर्मी राजा सोम ! तुम्हें द्युलोक से धन प्राप्त हुआ ।

१३११. राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर । ३४५, ११७२

हे धनदाता इन्द्र ! मुझे दोनें हाथों से धन दीजिए ।

१३१२. रायः समुद्रान् चतुरः . . . . आ पवस्व सहस्रिणः । ८७१

हे सोम ! सहस्रों धन से युक्त चारों समुद्रों का धन हमें दो ।

१३१३. राय ईशे स्वपत्यस्य । ६०

यह अग्नि सुसन्तानयुक्त ऐश्वर्य का स्वामी है ।

१३१४. राया हिरण्यया मतिः इयमवृकाय शवसे । १०६८

यह मेरी बुद्धि सुवर्णयुक्त धन और निश्छल शक्ति के लिए हो ।

१३१५. राये अग्ने महे त्वा दानाय समिधीमहि । ९३
हे अग्नि ! हम तुम्हें प्रदीप्त करते हैं कि तुम हमें महान् ऐश्वर्य दो।

१३१६. राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री । ४६०
वह वज्रधारी इन्द्र हमें ऐश्वर्य दे और हमारा मार्ग प्रशस्त करे ।

१३१७. वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा । १०३६
सोम दाता को दिव्य और पार्थिव ऐश्वर्य प्रदान करे ।

१३१८. वसु स्पार्हं तदा भर । १३४, २०७, १०७०
हे इन्द्र ! हमें स्पृहणीय धन दीजिए ।

१३१९. वसु स्पार्हमुत जेतोत दाता । १७८३
इन्द्र सर्वोत्तम धन को जीतने वाला और देने वाला है ।

१३२०. वसो राधांसि चोदय । ४१, १६२३
हे उदार अग्नि ! हमें ऐश्वर्य दो ।

१३२१. विदा भगं वसुत्तये । १५८१
हे इन्द्र ! तुम हमें ऐश्वर्य देने के लिए धन एकत्र करो ।

१३२२. विदा राये सुवीर्यम् । ६४४
तुम समृद्धि के लिए पुरुषार्थी बनो ।

१३२३. वि नो राये दुरो वृधि । ७८३
हे सोम ! हमारे लिए समृद्धि के द्वार खेल दो ।

१३२४. विभूतिरस्तु सूनृता । १६००
तुम्हारा ऐश्वर्य उदारतापूर्ण हो ।

१३२५. विश्वा च सोम सौभगा । १०४८
हे सोम ! हमें सभी सौभाग्य दो ।

१३२६. विश्वा दधे वार्याणि श्रवस्या । १७७६
अग्नि के पास सभी यश देने वाले धन हैं ।

१३२७. विश्वासु पृत्सु दुष्टरम् । १५२५
हे अग्नि ! हमें ऐसा धन दो, जो सभी युद्धों में अजेय हो ।

१३२८. शिक्षा ण इन्द्र राये । १६४४
हे इन्द्र ! हमें ऐश्वर्य के लिए शिक्षा दो ।

१३२९. सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः । ६०३
तुम्हारे अन्नादि और तुम्हारी शक्ति शुभ हो ।

१३३०. स घा नो योग आ भुवत् स राये । ७४२
वह इन्द्र हमारे प्रत्येक पुरुषार्थ और श्रीवृद्धि में सहायक हो ।

१३३१. स नो वसून्या भरात् । १९०
वह इन्द्र हमें ऐश्वर्य दे ।

१३३२. सह रय्या निवर्तस्वाग्ने । १८३३
हे अग्नि ! तुम ऐश्वर्य के साथ हमारे पास आवो ।

१३३३. सा नो अद्याभरद् वसुः । १७४२
वह उषा आज हमें ऐश्वर्य दे ।

१३३४. सुम्न आ धेहि नो वसो । ६४८
हे उदार इन्द्र ! तुम हमें सुखी रखो ।

१३३५. सुवाति सविता भगः । १३५१
सूर्य ऐश्वर्य का दाता है ।

१३३६. सुवीर्यं रयिं सोम रिरीहि णः । १४४९
हे सोम ! हमें वीरतायुक्त ऐश्वर्य दो ।

१३३७. सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि । ३४६, ८८३
हे इन्द्र ! हमें पराक्रमयुक्त तथा गाय आदि से युक्त ऐश्वर्य दो ।

१३३८. सोमं हिनोत महते धनाय । ५३५
महान् ऐश्वर्य के लिए सोम (ईश) को प्रसन्न करो ।

१३३९. सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय । ११८०
हे पवित्र सोम ! तुम ऐश्वर्य देने के लिए इन्द्र के हृदय को प्रेरित करो ।

१३४०. सोमस्पती रयीणाम् । ८७४
सोम ऐश्वर्य का स्वामी है ।

१३४१. सोमासो राये अक्रमुः । १११९
सोम ने ऐश्वर्य के लिये पराक्रम किया ।

१३४२. हवामह इन्द्रं धनस्य सातये । २४९
हम धन की प्राप्ति के लिये इन्द्र का आह्वान करते हैं ।

## (ख) धन, बल

१३४३. एष रुक्मिभिरीयते वाजी । १२७०
यह बलवान् सोम स्वर्णालंकृत लोगों के साथ चलता है ।

१३४४. दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यम् । १०३१
सोम (ईश) ने द्यावापृथिवी में गुप्त खजाना रखा है ।

१३४५. सं भक्तेन गमेमहि । ७५२
हम ऐश्वर्य से युक्त हों ।

१३४६. सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः । ११०९
हे अग्नि ! हम मित्रों के साथ सुख के लिये तुम्हारी प्रार्थना करते हैं ।

## (ग) अन्नादि

१३४७. इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः । २९३
इन्द्र के लिए दधि-मिश्रित सोमरस तैयार किये गये हैं ।

१३४८. पिबन्तो मदिरं मधु । ३५६
वे शक्तिवर्धक मधु (शहद) का सेवन करते हैं ।

## (७) समाजशास्त्रीय

### (क) गृहस्थ

१३४९. अयमग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभगस्य । ६०
यह अग्नि श्रेष्ठ पराक्रम और सौभाग्य का स्वामी है ।

१३५०. गृहपते महाँ असि । ३९
हे गृहपति ! तुम महान् हो ।

१३५१. त्वमग्ने गृहपतिः । ६१
हे अग्नि ! तुम गृह के स्वामी हो ।

१३५२. मा वां रातिरुपदसत् कदाचन । २८७
दम्पती का ऐश्वर्य कभी क्षीण न हो ।

१३५३. विश्वा च सोम सौभगा । ९७५
हे सोम ! हमें सभी सौभाग्य देना ।

१३५४. विश्वान्यभि सौभगा । ८३०
हमें सभी सौभाग्य प्राप्त हों ।

१३५५. सहस्रधारः पवते समुद्रः । ८७४
गृहस्थरूपी समुद्र सहस्रों धाराओं से पवित्र करता है ।

### (ख) ब्राह्मणादि

१३५६. अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतम् । १७५९
हे अश्विनी ! हमारे ब्राह्मणों को युद्धों में स्फूर्ति दो ।

१३५७. आ जागृविर्विप्रः । १३५७
ब्राह्मण सदा जागरूक रहे ।

१३५८. घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम् । १७५९
हे अश्विनी ! हमारे क्षत्रियों को घी और मधु से सिक्त रखो ।

१३५९. ऋभुर्धीर उशना काव्येन । ६७९
ब्राह्मण आविष्कारक, विद्वान् और काव्य रचना से कवि हो ।

१३६०. ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानाम् । ६७९
ब्राह्मण ऋषि (मंत्रद्रष्टा) और जनता का अग्रणी हो ।

१३६१. वयं घना शूरसाता भजेमहि । १७५९
हम क्षत्रिय लोग युद्धों में धन प्राप्त करें ।

१३६२. विप्रा ऋतस्य वाहसा । १३०९
ब्राह्मण सत्यधर्म के प्रचारक होते हैं ।

१३६३. सोमः पुनानो असदच्चमूषु । १३५७
राजा सोम, पवित्र करता हुआ, सेनाओं के मध्य में बैठा ।

१३६४. स्वभानवो विप्राः । ४१५
ब्राह्मण अपनी तेजस्विता से प्रकाशित होते हैं ।

## (ग) नारी

१३६५. अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः । १७५७
अपने कार्यों में कुशल नारियाँ पूज्य होती हैं ।

१३६६. देवी जनित्री अजीजनत् । १०९०
माता देवी है । उसने जन्म दिया है ।

१३६७. भद्रा जनित्री अजीजनत् । १०९०
माता पूज्य है । उसने जन्म दिया है ।

## (घ) पुत्र

१३६८. आ वीरं पृतनासहम् । ४०५
पुत्र सेनाओं को जीतने वाला हो ।

१३६९. दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यां नाम तृतीयमधि रोचनं दिवः । ७०१

पुत्र माता-पिता का नाम सुदूर स्थानों तक फैलाता है और उनका यश स्वर्ग तक पहुँचाता है ।

१३७०. पर्षि तोकं तनयं पर्तृभिः त्वमदब्धैरप्रयुत्वभिः । १६२४

हे अग्नि ! तुम अपने अजेय और प्रमादरहित संरक्षण से हमारे पुत्रादि को समृद्ध करो ।

१३७१. विदा गाधं तुचे तु नः । १६२३

हे अग्नि ! हमारी सन्तानों के लिए सुस्थिरता प्रदान करो ।

१३७२. स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनम् । ५८

हे अग्नि ! यज्ञकर्ता को वीर और प्रशंसनीय पुत्र दो ।

१३७३.. स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत् । ९३६

तेजस्वी पुत्र ने जन्म लेकर माता-पिता का नाम प्रसिद्ध किया ।

१३७४. स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावा । ७६

हमारा पुत्र यश का प्रसारक और वंश-विस्तारक हो ।

## (ङ) कृषि

१३७५. आ याहि . . . . उर्वरापते, सोमं सोमपते पिब । ४०२

हे इन्द्र ! तुम भूमि को उर्वरा करने वाले हो, आवो और सोमपान करो ।

१३७६. वृष्टिं दिवः परि स्रव । ११८६

हे सोम ! तुम द्युलोक से वर्षा लाओ ।

१३७७. वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपो जिन्वन् गविष्टये धियः । १०१२

हे सोम ! तुम आकाश से वर्षा लाओ, जल बहाओ और पशु-समृद्धि के लिए हमारी बुद्धि प्रेरित करो ।

## (च) अन्न

१३७८. इन्द्र इषे ददातु नः । १९९
इन्द्र हमें अन्न-समृद्धि से युक्त करे ।

१३७९. इन्द्राग्नी इष आ वृणे । १५७५
हे इन्द्र और अग्नि ! मैं अन्न के लिए तुम्हें चुनता हूँ ।

१३८०. इषं तोकाय नो दधत् । ९९६
सोम हमारी सन्तान को अन्न दे ।

१३८१. इषं स्तोतृभ्य आ भर । ४२५, ९७१, १०२२, १७३७
हे अग्नि ! स्तुतिकर्ता यजमान को अन्न दो ।

१३८२. इषं स्वश्च धीमहि । १०६९
हमें अन्न और ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हो ।

१३८३. इषे पवस्व धारया । ८४१
हे सोम ! अन्न के लिए जलधारा के रूप में बहो ।

१३८४. उत्सं न कं चित् जनपानमक्षितम् । १५०७
हे सोम ! तुमने जनता के पीने के लिए अक्षय स्रोत बहाया ।

१३८५. क्षरा सहस्रिणीरिषः । १२१२
हे सोम ! तुम सहस्रों प्रकार की अन्नसमृद्धि दो ।

१३८६. क्षुमन्तो याभिर्मदेम । १५३
हे इन्द्र ! हम भोज्यसामग्री-संपन्न होकर आनन्दित हों ।

१३८७. धानावन्तं करम्भिणम् अपूपवन्तम् उक्थिनम् । २१०
हे इन्द्र ! हम स्तुतिकर्ता खील, सत्तू और मिष्टान्न से युक्त हों ।

१३८८. धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् । १३३७
हे सोम ! सदा वृद्धिशील अन्नसमृद्धि दो ।

१३८९. नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्ने ते । १२३९
हे सोम ! तेरे संरक्षण में हम धन और अन्नसमृद्धि के अतिनिकट हों ।

**१३९०. पवस्व सोमान्धसा । ९७७**
हे सोम ! तुम हमें अन्न देकर पवित्र करो ।

**१३९१. पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्र । ४५५**
हे इन्द्र ! तुम हमें सुपुष्ट अन्नसमृद्धि दो ।

**१३९२. यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः । ७३६**
हम दूध में जौ पकाकर स्वादिष्ट भोजन बनावें ।

**१३९३. यवं यवं नो अन्धसा पुष्टं पुष्टं परिस्रव । ९७५**
हे सोम ! हमें प्रत्येक प्रकार का जौ आदि अन्न और पोषक पदार्थ दो ।

## (छ) अतिथि

**१३९४. प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् । ५**
हे अग्नि ! तुम श्रेष्ठ अतिथि और मित्रवत् प्रिय हो। तुम्हारी स्तुति करता हूँ ।

**१३९५. मा नो हृणीथा अतिथिम् । ११०**
अतिथि का अपमान न करो ।

**१३९६. विशोविशो वो अतिथिम् । १५६४**
अग्नि प्रत्येक व्यक्ति का अतिथि है ।

## (ज) शिल्प (गृहादि)

**१३९७. अस्तं यं यन्ति धेनवः । ४२५, १७३७**
घर वह है, जहाँ गायें रहती हैं ।

**१३९८. अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिनः । १७३७**
घर वह है, जहाँ तीव्रगति वाले एवं बलवान् घोड़े सदा रहते हैं ।

**१३९९. अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्ष । १४२७**
हे सोम ! हमें सुन्दर आच्छादन के योग्य वस्त्र दो ।

१४००. सुप्रावीरस्तु स क्षयः । १३५२
घर पूर्णतया सुरक्षित हो ।

## (झ) आर्य, दस्यु

१४०१. साह्याम दस्युमव्रतम् । ८९३
हम आचारहीन दस्यु (नीचों) को पराजित करें ।

१४०२. हथो दासानि सत्पती । ८५५
हे इन्द्र और अग्नि ! तुम सज्जनों के पालक हो । तुमने दासों को मारा ।

१४०३. हथो वृत्राण्यार्या । ८५५
हे इन्द्र और अग्नि ! तुम दोनों आर्य हो, तुमने पापियों को मांरा ।

## (८) राष्ट्रीय, विश्वकल्याण

## (क) राष्ट्रीय

१४०४. देवी जनित्री अजीजनत् । ३७९
मातृभूमि देवी है । उसने जन्म दिया है ।

१४०५. भद्रा जनित्री अजीजनत् । ३७९
मातृभूमि मंगलकारिणी है । उसने जन्म दिया है ।

## (ख) विश्वकल्याण

१४०६. अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम् । ८९
हमने मानवमात्र की हितकर, पापनाशक, श्रेष्ठ अग्नि को प्राप्त किया ।

१४०७. अयं सिन्धुभ्यो अभवद् लोककृत् । ८२३
सोम नदियों के द्वारा लोक-कल्याणकारी है ।

१४०८. आ जाता सुक्रतो पृण । ५२
हे सत्कर्मी व्यक्ति ! मानवमात्र को सुख दो ।

१४०९. उरुः पृथुरयं वो अस्तु लोकः । ६२६
यह सारा संसार तुम्हारे लिए विशाल और सुखद हो ।

१४१०. त्वं . . . . विश्वेषां हितः । २
तुम सबके हितकारी हो ।

१४११. नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते । ५४
हे अग्नि ! मानवमात्र को प्रकाश देने के लिए मनुष्यों ने तुम्हें अपनाया है ।

१४१२. लोककृत्नुमीमहे । १०४४
हम लोकहितकारी को चाहते हैं ।

## (९) दार्शनिक

### (क) ईश्वर, ब्रह्म

१४१३. अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव । ६६
हे अग्नि (ईश) ! हम तेरी मित्रता में रहकर कभी दुःखी न हों ।

१४१४. अत्यो न गोभिरज्यते । ७७०
वह ईश्वर घोड़े के तुल्य तीव्रगामी है । वह ज्ञानेन्द्रियों से व्यक्त होता है ।

१४१५. अदर्दरुत्समसृजो वि खानि । ३१५
इन्द्र (ईश) ने ज्ञान का स्रोत खोला और ज्ञानेन्द्रियाँ उत्पन्न कीं ।

१४१६. अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती । ६३१
ब्रह्म की ज्योति प्राण और अपान के रूप में अन्दर विचरण करती है ।

१४१७. अभि त्वा शूर नोनुमः । ६८०
हे पराक्रमी इन्द्र (ईश) ! हम तुम्हें प्रणाम करते हैं ।

१४१८. असो यथा नोऽविता वृधश्चित् । ३१४
हे इन्द्र (ईश) ! तुम हमारे रक्षक और वृद्धिकर्ता (पालक) हो ।

१४१९. अहमन्नम् अन्नम् अदन्तमद्मि । ५९४
मैं (ब्रह्म) अन्न (भोज्य जगत्) हूँ और अन्न के भोक्ता का नाशक हूँ ।

१४२०. अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य । ५९४
मैं (ब्रह्म) ऋत की प्रथम ज्योति हूँ ।

१४२१. इन्द्र क्रतुं न आ भर । २५९
हे इन्द्र (ईश) ! हमें ज्ञान दीजिए ।

१४२२. इन्द्रो मुनीनां सखा । २७५
इन्द्र (ईश) मुनियों (विचारकों) का मित्र है ।

१४२३. ईशानमस्य जगतः । ६८०
वह इन्द्र (ईश) चर जगत् का स्वामी है ।

१४२४. ईशानमिन्द्र तस्थुषः । ६८०
वह इन्द्र (ईश) स्थावर जगत् का स्वामी है ।

१४२५. उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति । ६२०
वह ईश्वर अमरत्व का और अन्न से उत्पन्न संसार का स्वामी है ।

१४२६. ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात् । १८४७
वह ईश्वर गन्धर्व (ज्ञान का धारक) है और मुक्तरूप में रहता है ।

१४२७. एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः । १२८२
यह अमर देव सोम (ईश) अपने मूलस्थान (हृदय) में प्रकाशित होता है ।

१४२८. एष सूर्यमरोचयत् पवमानो अधि द्यवि । १२८४
इस सोम (ईश्वर) ने द्युलोक में सूर्य को प्रकाश दिया ।

१४२९. जज्ञानः सप्त मातृभिः । १०१
यह ७ माताओं (५ ज्ञानेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि) से उत्पन्न होता है ।

१४३०. ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः । ६२१
उस परम पुरुष से विराट् उत्पन्न हुआ और विराट् से पुरुष (जीव)।

१४३१. तद्दिदास भुवनेषु ज्येष्ठम् । १४८३
वह ब्रह्म ही संसार में सर्वश्रेष्ठ है ।

१४३२. तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् । १६२७
हे जीवमात्र में व्याप्त ईश! मेरे हव्य (प्रार्थना) को स्वीकार करो ।

१४३३. तावानस्य महिमा ततो ज्यायांश्च पूरुषः । ६२०
इतनी उस परम पुरुष की महिमा है। वह इससे भी बढ़कर है ।

१४३४. त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः । ६१८
उस पुरुष का एक अंश संसार है और तीन अंश द्युलोक में हैं ।

१४३५. त्वं न ऊती । २६०
तुम (ईश्वर) ही हमारे रक्षक हो ।

१४३६. त्वमिन्न आप्यम् । २६०
तुम (ईश्वर) ही हमारे सखा हो ।

१४३७. देवं देवत्रा होतारममर्त्यम् । ११२
तुम (ईश्वर) अमर हो, विश्वयज्ञ के कर्ता हो और देवों में श्रेष्ठ देव हो ।

१४३८. नकिष्टं कर्मणा नशद् यश्चकार सदावृधम् । ११५५
वृद्धिशील जगत् के कर्ता उस ईश को केवल कर्म से ही नहीं पा सकते ।

१४३९. न किष्ट्वा गोषु वृण्वते । २७०
तुझ (ईश) को भौतिक इन्द्रियों से नहीं पा सकते ।

१४४०. न की रेवन्तं सख्याय विन्दसे । १३९०
तुम धनी व्यक्ति को मित्र नहीं बनाते ।

१४४१. न जातो न जनिष्यते । ६८१
हे ईश ! तुम्हारे समान न कोई हुआ है और न होगा ।

१४४२. न त्वदन्यो मघवन् अस्ति मर्डिता । २४७
हे दयालु ईश्वर ! तेरे सिवा और कोई हमें सुख देने वाला नहीं है ।

१४४३. न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवः । ६८१
हे ईश ! तुम जैसा कोई और दिव्य या पार्थिव तत्त्व नहीं है ।

१४४४. न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ । २९१
हे उदार ईश ! तुम सौ, हजार और लाख में भी नहीं दिए जा सकते हो ।

१४४५. नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तम् । १८४६
हे ईश ! तुम आकाश में उड़ने वाले गरुड़ के तुल्य हो ।

१४४६. पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते । ८७५
हे ज्ञानाधिपति ईश ! तुम्हारा पवित्र ज्ञान सर्वत्र फैला हुआ है ।

१४४७. पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि । ६१९
उस परमपुरुष का एक अंश संसार है और तीन अंश द्युलोक में है ।

१४४८. पुरुत्रा हि सदृङ् असि । ११६७
हे ईश ! तुम सर्वत्र समदृष्टि हो ।

१४४९. पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम् । ६१९
यह वर्तमान, भूत और भविष्य सब कुछ परमपुरुष ही है ।

१४५०. प्रचेतन प्रचेतयेन्द्र द्युम्नाय न इषे । ६४२
हे चेतन इन्द्र (ईश) ! तुम हमें तेज और अन्न के लिए प्रेरणा दो ।

१४५१. प्रत्यङ् चित्रा बिभ्रदस्यायुधानि । १८४७
वह ईश तेजोमय शस्त्र धारण करता है ।

१४५२. प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः। ८७५
हे ईश ! तुम स्वामी हो और हमारे सारे अंगों में व्याप्त हो ।

१४५३. ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्तात् । ३२१
ब्रह्म सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ ।

**१४५४. भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानः । १८४८**
वह ईश प्रकाशमय है और तेजोमय प्रकाश से दीप्त है ।

**१४५५. भुवद् वाजेष्ववित्ता भुवद् वृधे । ७०४**
वह ईश युद्धों में रक्षक है और हमारी वृद्धि करने वाला है ।

**१४५६. महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे । २९१**
हे वज्रधारी इन्द्र (ईश) ! बड़े मूल्य से भी तुम्हें नहीं दिया जा सकता है ।

**१४५७. मा चिदन्यद् वि शंसत । २४२, १३६०**
हे मित्रो ! किसी अन्य की स्तुति न करो ।

**१४५८. मा न इन्द्र परावृणक् । २६०**
हे इन्द्र (ईश) ! तुम हमारा परित्याग न करना ।

**१४५९. यजिष्ठं त्वा ववृमहे । ११२**
हे ईश ! हम पूज्य तुमको ही अपनाते हैं ।

**१४६०. यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् । १८४६**
हे ईश ! तुम नियम के मूल में विद्यमान पालक शक्ति हो ।

**१४६१. यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः । १६०९**
वह ईश धन का पालक और स्वामी है। आर्य और दास उसके वश में हैं ।

**१४६२. मा वर्पो अस्मदप गूह एतत् । १६२५**
हे ईश ! तुम अपना रूप हमसे मत छिपाओ ।

**१४६३. येन ज्योतींषि आयवे मनवे च विवेदिथ । ८८१**
हे ईश ! तुमने चर जगत् और मनुष्यमात्र को ज्योति दी ।

**१४६४. यो मा ददाति स इदेवम् आवत् । ५९४**
जो ईश्वर को समर्पण करता है, वह अपने धन की रक्षा करता है ।

**१४६५. वयममृतं . . . . प्रियं मित्रं न शंसिषम् । ७०३**
हम उस अमर अग्नि (ईश) को प्रिय मित्र की तरह बुलाते हैं ।

१४६६. शतं भवास्यूतये । ६८४
हे ईश ! तुम सैकड़ों प्रकार से रक्षा करते हो ।

१४६७. शिक्षा शचीनां पते । ६४१
हे शक्ति के स्वामी ईश ! तुम हमें ज्ञान दो ।

१४६८. सखायो मा रिषण्यत । १३६०
हे मित्रो ! तुम खिन्न न होओ।

१४६९. सखीनामविता जरितॄणाम् । ६८४
वह ईश स्तुतिकर्ता मित्रों का रक्षक है ।

१४७०. सतश्च योनिमसतश्च विवः । ३२१
वह ब्रह्म सत् और असत् का कारण है ।

१४७१. सत्यमित्था वृषेदसि । २६३
हे ईश ! तुम वस्तुतः सुखों के वर्षक हो ।

१४७२. सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि । २७०
हे ईश ! तुम सदा सारे संसार के स्वामी हो ।

१४७३. सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । ६१७
उस विराट् पुरुष के असंख्य सिर, आँख और पैर हैं ।

१४७४. सुरुचो वेन आवः । ३२१
उस कमनीय ईश ने तेजोमय पदार्थों को प्रकट किया ।

१४७५. सूरा अण्वं वि तन्वते । ११२३
सूर्यवत् तेजस्वी विद्वान् सूक्ष्म तत्त्वों को प्रकट करते हैं ।

१४७६. हरिः पवित्रे अर्षति । १२६४
परमात्मा पवित्र आत्माओं में जाता है ।

१४७७. हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतम् । १८४६
यह आत्मा सुनहरी पंखवाला है और वरुण का दूत है ।

१४७८. हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा । ३२०, १८४६
हृदय से जिज्ञासु विद्वान् उस ब्रह्म को देख पाते हैं ।

## (ख) जीव

१४७९. अद्या ममार स ह्यः समान । ३२५
वह जीव मरता है और जीवित होता है ।

१४८०. अध त्विषीमाँ अभ्योजसा कृविम् । १४८८
वह तेजोमय जीव अपने तेज से पापों को नष्ट करता है ।

१४८१. इदं वसो सुतमन्धः पिबा । १२४
हे जीव ! इस तैयार किए हुए सोमरस को पीओ ।

१४८२. इन्दुमिन्द्रे दधातन । १४४६
इन्दु (जीवात्मा) को इन्द्र (परमात्मा) में लगाओ ।

१४८३. इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणः । १०२०
यह इन्दु (जीवात्मा) इन्द्र (परमात्मा) की मित्रता प्राप्त करता है ।

१४८४. इन्दुर्धर्माणि ऋतुथा वसानः । १०२१
इन्दु (जीवात्मा) ऋतुओं के अनुसार धर्मों को धारण करता है ।

१४८५. इन्द्रायेन्दो परि स्रव । ५६७
हे इन्दु (जीवात्मन्) ! तुम इन्द्र (परमात्मा) की ओर बहो ।

१४८६. एष पवित्रे अक्षरत् सोमः । १२८१
यह सोम (ईश) पवित्रात्मा पर द्रवित होता है ।

१४८७. एष सूर्येण हासते संवसानो विवस्वता । १२८५
तेजोमय सूर्य के साथ रहने वाला यह आत्मा उन्नति करता है ।

१४८८. एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति । १२७६
यह आत्मा मानवी प्रजाओं में श्येन पक्षी की तरह रहता है ।

१४८९. द्रप्सः समुद्रमभि यज्जिगाति । १८४८
बूँद (जीव) समुद्र (परमात्मा) में मिल जाती है ।

१४९०. द्विता यो भूदमृतो मर्त्येषु । १५५५
वह अमर परमात्मा मनुष्यों में द्वैत (ईश +जीव) रूप में रहता है ।

१४९१. पवित्रे सोमो अक्षरत् । १०९३
सोम (ईश) पवित्रात्मा पर बरसता है ।

१४९२. पश्यन् गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन् । १८४८
ईश्वरीय नियम में रहते हुए जीवात्मा गृध्र की दृष्टि से देखता है ।

१४९३. मदेषु सर्वधा असि । १०९३
सोम (ईश) प्रसन्न होकर सब कुछ देता है ।

१४९४. मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः । ६५२
योगियों ने दूध को मधु से (जीव को परमात्मा से) मिलाया ।

१४९५. योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि । ३१४
हे इन्द्र (ईश) ! तुम्हारा निवास हृदयरूपी घर में है ।

१४९६. विश्वस्मा इ स्वर्दृशे . . . . गोपामृतस्य विर्भरत् । ८४०
आत्मज्योति के दर्शनार्थ ऋत के रक्षक ईश को श्येन (आत्मा) लाया ।

१४९७. वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधे विचर्षणिः । १४८७
आत्मा पराक्रम से समृद्ध, शत्रु-विजेता और अतिकर्मठ है ।

१४९८. सश्चद् देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् । १४८७
सत्य देवता इन्दु (जीव) सच्चे देव इन्द्र (परमात्मा) से मिल गया ।

१४९९. साकं जातः क्रतुना साकमोजसा । १४८७
जीवात्मा ज्ञान, कर्म और तेज के साथ उत्पन्न होता है ।

१५००. सोमः पवित्रमत्येति रेभन् । ११७५
सोम (ईश्वर) पवित्रात्मा के पास प्रसन्न मन से आता है ।

१५०१. होता मन्द्रतमो विशि । १५५५
मनुष्यों में ईश्वर का आराधक सबसे अधिक प्रसन्न रहता है ।

## (ग) तत्त्वज्ञान

१५०२. इन्द्रमर्च यथा विदे । २३५
तत्त्वज्ञानी इन्द्र (परमात्मा) की उपासना करो ।

१५०३. जातः परेण धर्मणा । ९०
अग्नि (तत्त्वज्ञान) उच्चकोटि के धर्म से उत्पन्न होता है ।

१५०४. दिवस्पदम् . . . . गुहा हितम्, सूरः पश्यति चक्षसा । ११२७
प्रकाश का आश्रय (आत्मा) हृदयरूपी गुफा में है । विद्वान् उसे देख पाते हैं ।

१५०५. नकिष्टं कर्मणा नशद् यश्चकार सदावृधम् । २४३
सदा वृद्धिशील जगत् के कर्ता ईश को कर्म से नहीं (अपितु ज्ञान से) प्राप्त करते हैं ।

१५०६. पिता यत् कश्यपस्याग्निः । ९०
ज्ञानी का पिता अग्नि (ईश्वर) है ।

१५०७. मनुः कविः । ९०
मननशील व्यक्ति ही क्रान्तदर्शी होता है ।

१५०८. वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कम् । १८४७
जीवात्मा परमात्मा को देखने के लिये सुगन्धित कवच (सत्कर्म) धारण करता है ।

१५०९. श्रद्धा माता । ९०
श्रद्धा माता के तुल्य है ।

१५१०. स चिद् विवेद निहितं यदासाम्,
अपीच्यां गुह्यं नाम गोनाम् । ६७९
विद्वान् ही इन्द्रियों के अन्दर गुप्त रूप से रखे हुए आत्मतत्त्व को जान पाते हैं ।

## (घ) दार्शनिक तत्त्व

१५११. अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती । १३७७
उस परमात्मा का प्रकाश प्राण और अपान के रूप में शरीर के अन्दर व्याप्त है ।

१५१२. अहं सूर्य इवाजनि । १५००
मैं ऋतम्भरा प्रज्ञा के द्वारा सूर्य के तुल्य तेजस्वी हो गया ।

१५१३. अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह । १५००
मैंने पिता (ज्ञानी) से ऋतंभरा प्रज्ञा प्राप्त की ।

१५१४. उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् ।
धिया विप्रो अजायत । १४३
पर्वतों की गुफाओं में और नदियों के संगम पर चिन्तन से मनुष्य विप्र (ज्ञानी) होता है ।

१५१५. तव क्रतुभिरमृतत्वमायन् । ११४१
सभी देव अग्नि के द्वारा दिए गये ज्ञान से अमर हुए ।

१५१६. त्वां देवासो अमृताय कं पपुः । १३२७
देवों ने अमरत्व के लिये (आत्मज्ञान रूपी) सोमरस पिया ।

१५१७. दिवः पृष्ठान्या रुहन् । ९२
ज्ञानी तत्त्वज्ञान से द्युलोक के उच्चभाग को प्राप्त हुए ।

१५१८. प्र भूर्जयो यथा पथोद्यामङ्गिरसो ययुः । ९२
जिस मार्ग से ऋषिगण स्वर्ग गए, उसी मार्ग से विजयी होओ ।

१५१९. विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः । ३२६
हे इन्द्र ! तुमने विशाल लोकों में ऐश्वर्य रखा हुआ है।

१५२०. विश्वा हि माया अवसि स्वधावन् । ७५
हे शक्तिशाली अग्नि ! तुम इस मायामय जगत् के रक्षक हो ।

## (१०) आयुर्वेद

### (क) भिषज्, चिकित्सा

१५२१. अयक्ष्मा बृहतीरिषः । १४३५
हे सोम ! महान् अन्नसमृद्धि को रोग के कीटाणुओं से मुक्त रखो ।

१५२२. आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजा करत् । १११२
इन्द्र आदित्यों और मरुतों के साथ हमें नीरोगता प्रदान करे ।

१५२३. एवामृताय महे क्षयाय । १३६८
सोमरस अमरत्व और महान् निवास के लिए है ।

१५२४. तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह सीषधातु । ११११
इन्द्र सूर्य किरणों के द्वारा हमारे शरीर और सन्तानों को स्वस्थ रखे ।

१५२५. निष्कर्ता विह्रुतं पुनः । २४४
वह इन्द्र टूटी हुई हड्डियों को पुनः जोड़ देता है ।

१५२६. प्र न आयूंषि तारिषत् । १८४
वायु हमारी आयु बढ़ावे ।

१५२७. य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः ।
सन्धाता सन्धिं मघवा । २४४
इन्द्र ने गर्दन की टूटी हुई हड्डी को बिना किसी लेप (प्लास्टर) के ही जोड़ दिया ।

१५२८. वात आ वातु भेषजम् । १८४
वायु औषध के तुल्य बहे ।

१५२९. शंभु मयोभु नो हृदे । १८४
वायु हमारे हृदय के लिए सुखद और स्वास्थ्यप्रद हो ।

१५३०. संवेशनस्तन्वे चारुरेधि । ६५
अग्नि शरीर में प्रविष्ट होकर शरीर के लिए सुखकर हो ।

१५३१. स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः । १३६८
वह सोमरस शक्ति वर्धक और दिव्य अमृत है ।

## (ख) तेज, ओज

१५३२. अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । १५२०
अग्नि हमें तेज और महान् शक्ति दे ।

१५३३. आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर । ८३४
हे सोम ! तुम हमें वर्चस्विता के लिए शक्ति, वेग और सुरूपता दो ।

१५३४. क्रतुं न नृम्णं स्थविरं च वाजम् । ६२५
हे इन्द्र ! हमें ज्ञान, तेज और स्थायी शक्ति दो ।

१५३५. जीवा ज्योतिरशीमहि । २५९
हे इन्द्र ! हम सभी प्राणी ज्योति प्राप्त करें ।

१५३६. त्वं न इन्द्र भर ओजो नृम्णम् । ४०५, ११६९
हे इन्द्र ! हमें ओज और शक्ति दो ।

१५३७. दिवः पृष्ठमधि रोहन्ति तेजसा । ८७६
तेज से द्युलोक के उच्च भागों को प्राप्त करते हैं ।

१५३८. देवो ह्यसि नो दृशे । १०
हे अग्नि ! तुम हमारे मार्गदर्शक देव हो ।

१५३९. नमस्ते अग्न ओजसे । ११
हे अग्नि ! तुम्हारे तेज के लिए नमस्ते ।

१५४०. मयि वर्चो अथो यशः । ६०२
परमात्मा मुझे तेज और यश दे ।

१५४१. वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । १४६२
हम परमात्मा के सर्वश्रेष्ठ तेज को हृदय में धारण करते हैं ।

१५४२. वृषा ह्यसि भानुना । ७८४
हे सोम ! तुम अपने प्रकाश से सुखों के वर्षक हो ।

१५४३. सना ज्योतिः सना स्वः । १०४८
हे सोम ! तुम सदा प्रकाश और आनन्द हमें दो ।

१५४४. सहस्तन्न इन्द्र दद्धि ओजः । ६२५
हे इन्द्र ! हमें वह शक्ति और ओज दो ।

१५४५. सोमो मीढ्वान् अभि नो ज्योतिषावीत् । १३५९
उदार दानी सोम ने प्रकाश देकर हमारी रक्षा की ।

## (ग) बल, शक्ति

१५४६. अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति । १७३८
अग्नि प्रजा को शक्ति देता है ।

१५४७. आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् । १७३६
तुम दोनों अश्विनी कुमार हमें शक्ति दो ।

१५४८. आ नु त्यच्छर्धो दिव्यं वृणीमहे । ४६१
हम अग्नि की उस दिव्य शक्ति का वरण करते हैं ।

१५४९. इन्द्र न उपा याहि शतवाजया । २१५
हे इन्द्र ! तुम सैकड़ों शक्तियों के साथ हमारे पास आवो ।

१५५०. तरणिरित् सिषासति वाजम् । २३८, ८६७
शक्तिशाली इन्द्र ही शक्ति देता है ।

१५५१. त्वं नो जिन्व सोमपाः । २३०
हे सोमपान करने वाले इन्द्र ! तुम हमें शक्ति दो ।

१५५२. दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् । १३१२
सोम स्तुतिकर्ता को श्रेष्ठ पराक्रम देता है ।

१५५३. द्युमन्तं शुष्ममा भर । १३२५
हे सोम ! तुम हमें तेजोमय शक्ति दो ।

१५५४. पुनानो वरिवस्कृधि ऊर्जं जनाय गिर्वणः । ८४२
हे स्तुतिप्रिय सोम ! तुम पवित्र करते हुए मनुष्यों को सुख और बल दो ।

१५५५. पुष्टं पुष्टं परि स्रव । ९७५
हे सोम ! तुम हमें सभी प्रकार के पौष्टिक पदार्थ दो ।

१५५६. य ओजिष्ठस्तमा भर पवमान श्रवाय्यम् । ८२०
हे सोम ! तुम प्रशंसनीय सर्वश्रेष्ठ शक्ति हमें दो ।

१५५७. वाजी ददातु वाजिनम् । १९९
शक्तिशाली इन्द्र ! हमें शक्ति दे ।

१५५८. वृष्णस्तं वृष्ण्यं शवः । ७८२
हे सोम ! तुझ शक्तिशाली का बल भी शक्तियुक्त है ।

१५५९. शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः । ७२६
हे शक्तिशाली शक्तिपूजक इन्द्र ! तुम्हारे लिए यह सोमरस है ।

## (घ) दीर्घायुष्य

१५६०. इन्दो विश्वायुमा भर । १०५६
हे सोम ! तुम हमें पूर्ण आयु दो ।

१५६१. ज्योक् पश्येम सूर्यम् । १०५२
हम चिरकाल तक सूर्य को देखें ।

१५६२. तुचे तुनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे । ३९५
हे ईश ! हमारी सन्तान को सुखी जीवन के लिए दीर्घ आयु दो ।

१५६३. प्र न आयूंषि तारिषत् । ३५८
हे ईश ! हमें दीर्घायु करो ।

१५६४. मदेम शतहिमाः सुवीराः । ४५४
हे ईश ! हम वीर पुत्रों से युक्त होकर सौ वर्ष तक सुखी रहें ।

१५६५. व्यशेमहि देवहितं यदायुः । १८७४
हे ईश ! हम देवों के लिए हितकर दीर्घायु प्रप्त करें ।

## (११) विज्ञान

### (क) पृथिवी

१५६६. अनु मातरं पृथिवी वि वावृते । ५१
पृथिवी मातृतुल्य अन्तरिक्ष में परिक्रमा करती है ।

१५६७. आयं गौः पृश्निरक्रमीद् असदन्मातरं पुरः । ६३०, १३७६
यह नानावर्णों वाली पृथिवी (सूर्य की) परिक्रमा करती है और मातृतुल्य अन्तरिक्ष में रहती है ।

१५६८. तस्थौ नाकस्य शर्मणि । ५१
यह पृथिवी अन्तरिक्ष में पूर्ण सुरक्षित रहती है ।

१५६९. तेजः पृथिव्यामधि यत् संबभूव । १८४४
पृथिवी में तेज (आग्नेय ऊर्जा) है ।

### (ख) जल

१५७०. अपामुपस्थे महिषो ववर्ध । ७१
जल की गोद में अग्नि बढ़ता है (उत्पन्न होता है) ।

१५७१. अप्सु रेतः शिश्रिये विश्वरूपम् । १८४४
जल में सभी प्रकार की ऊर्जा है ।

१५७२. आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । १८३७
जल सुखदायी है। वह हमें शक्ति दे ।

१५७३. इमा आपः सुप्रपाणा इह स्त । ६२६
ये जल सुपेय रूप में यहाँ रहें ।

१५७४. यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । १८३८
जल का जो अत्युत्तम सारभाग है, उससे हमें युक्त करो ।

१५७५. शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये । ३३
देव-तुल्य जल अभीष्टसिद्धि और पीने के लिए शुभ हो ।

१५७६. शं योरभि स्रवन्तु नः । ३३
जल हमारा योग-क्षेम करे ।

## (ग) अग्नि

१५७७. अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । २७
अग्नि द्युलोक का शिरोभाग है। यह पृथिवी और दिशाओं का स्वामी है ।

१५७८. अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् । ४
अग्नि वृत्रों (दूषित कीटाणुओं) को नष्ट करता है ।

१५७९. अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यंसद् विश्वं न्यत्रिणम् । २२
अग्नि अपनी तीक्ष्ण ऊष्मा से सभी कीटाणुओं को नष्ट करता है ।

१५८०. अग्ने त्रातर्ऋतः कविः । ४२
हे अग्नि ! तुम रक्षक, सत्यरूप और क्रान्तदर्शी हो ।

१५८१. अपां रेतांसि जिन्वति । २७, १५३२
यह अग्नि जल की ऊर्जा को पुष्ट करता है ।

१५८२. आदिद् वो देव ओहते । ५५
यह अग्नि देवता तुम्हारा प्रेरक है ।

१५८३. आहुवे अग्निं समुद्रवाससम् । १८
मैं समुद्र में छिपी अग्नि का आह्वान करता हूँ ।

१५८४. उद्वा सिञ्चध्वम् उप वा पृणध्वम् । ५५
अग्नि की ऊर्जा को प्रवाहित करो या उसे पुष्टं करो ।

१५८५. ऊर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो । ३६
हे ऊर्जा के स्वामी अग्नि ! तुम अपनी चारों शक्तियों से हमारी रक्षा करो ।

१५८६. एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे । ४५
मैं शक्ति के पुत्र अग्नि को नमस्कार-पूर्वक बुलाता हूँ ।

१५८७. और्वभृगुवत् शुचिमप्नवानवदा हुवे । १८
अग्नि पवित्र है, समुद्री अग्नि का पालक है और धनसमृद्धि-युक्त है ।

१५८८. तमापो अग्निं जनयन्त मातरः । १८२४
जलरूपी माताओं ने अग्नि को जन्म दिया ।

१५८९. तमित् समानं वनिनश्च वीरुधो-
अन्तर्वतीश्च सुवते च विश्वहा । १८२४
उस शक्तिप्रद अग्नि को वन के वृक्ष और लताएँ ग्रहण करती हैं और ये सदा उस अग्नि (ऑक्सिजन) को फेंकती हैं ।

१५९०. तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियम् । १८२४
वृक्ष-वनस्पति उस अग्नि को ऋतुओं के अनुसार गर्भरूप में रखते हैं।

१५९१. तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व । ६५
हे अग्नि ! तुम अपनी तीसरी शक्ति से यहाँ प्रवेश करो ।

१५९२. त्वं पोता विश्ववार प्रचेताः । ६१
हे अग्नि ! तुम ज्ञानवान्, पवित्रकर्ता और सर्वथा वरणीय हो ।

१५९३. त्वमग्ने सप्रथा असि । १४०७
हे अग्नि ! तुममें विस्तार की शक्ति है ।

१५९४. त्वमित् सप्रथा अस्यग्ने । ४२
हे अग्नि ! तुम अकेले ही फैलने वाले हो ।

१५९५. त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत । ९
हे अग्नि ! अथर्वा (विद्वान्) ने जल को मथकर तुम्हें निकाला ।

१५९६. देवममीवचातनम् । ३२
अग्नि रोग के कीटाणुओं का नाशक है ।

१५९७. पाहि गीर्भिस्तिसृभिः । ३६
अग्नि अपनी तीनों शक्तियों से हमारी रक्षा करे ।

१५९८. पाहि नो अग्न एकया । ३६
अग्नि अपनी एक शक्ति से हमारी रक्षा करे ।

१५९९. पाह्युत द्वितीयया । ३६
अग्नि अपनी दूसरी शक्ति से हमारी रक्षा करे ।

१६००. पूर्णा विवष्टु आसिचम् । ५५
अग्नि तुम्हारे लिए अपनी ऊर्जा का प्रसारण करे ।

१६०१. प्रियं चेतिष्ठमरतिम् । ४५
अग्नि प्रिय, अत्यन्त चेतना युक्त और सदा सक्रिय है ।

१६०२. बृहद्वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये । ८८
अग्नि की किरणें महाशक्तिप्रद हैं । ऐसे अग्नि देव की स्तुति करो ।

१६०३. मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्याः । ६७
अग्नि द्युलोक का मूर्धा है और पृथिवी का सक्रिय पोषक है ।

१६०४. विश्वस्य दूतममृतम् । ४५
अग्नि संसार का अमर दूत (संवादवाहक) है ।

१६०५. श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिः । ५०
अग्नि श्रवण का साधन है और वह वाहक साधनों से सुने ।

## (घ) वायु

१६०६. उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा । १८४१
हे वायु ! तुम हमारे पिता, भ्राता और मित्र हो ।

१६०७. तस्य नो धेहि जीवसे । १८४२
हे वायु ! तुम अपने अन्दर विद्यमान अमृत तत्त्व हमारे जीवन के लिए दो ।

१६०८. प्र न आयूंषि तारिषत् । १८४०
वायु हमारी आयु बढ़ावे ।

१६०९. यददो वात ते गृहेऽमृतं निहितं गुहा । १८४२
हे वायु ! तुम्हारे अन्दर गुप्तरूप से रखा हुआ अमृत तत्त्व है ।

१६१०. वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे । १८४०
वायु औषधरूप में बहे और हमारे हृदय के लिए शुभ और सुखकर हो ।

१६११. स नो जीवातवे कृधि । १८४१
वायु हमें दीर्घजीवी करे ।

## (ङ) सूर्य

१६१२. अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् ।
इत्था चन्द्रमसो गृहे । १४७, ९१५
चन्द्रमा में सूर्य की गुप्त किरण (सुषुम्ण) प्रविष्ट है ।

१६१३. अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्र्यः। ६३९
सूर्य ने अपने रथ में रक्षक सात घोड़ों (किरणों) को जोता ।

१६१४. कनिक्रन्ति वृष्णो अश्वस्य रेतः । १८४४
सुखों के वर्षक अश्व (सूर्य) की शक्ति शब्द करती है ।

१६१५. चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । ६२९
सूर्य मित्र वरुण और अग्नि का नेत्र (प्रकाशक) है ।

१६१६. तन्तुं ततं परि सर्गास आशवः । १३७०
सूर्य की तीव्रगामी किरणों का जाल संसार में फैला हुआ है ।

१६१७. रजः सूर्यो न रश्मिभिः । ३४७
सूर्य अपनी किरणों से कणों में चेतना देता है ।

१६१८. विश्वा यद् रूपा परियासि ऋक्वभिः,
सप्तास्येभिः ऋक्वभिः । ४६३
तुम अपनी स्तुतियों से सारे रूपों में व्याप्त हो । सात मुख (छन्द) वाली स्तुतियों से तुम सर्वत्र व्याप्त हो ।

१६१९. सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । ६४०
हे सूर्य देव ! सात घोड़े (७ प्रकार की किरणें) तेरे रथ को ढोते हैं ।

१६२०. सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च । ६२९
सूर्य चर और अचर जगत् की आत्मा है ।

१६२१. सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवः । १३७०
सूर्य की किरणें वस्तु को फैलाती हैं (द्रवित करती हैं) ।

१६२२. हिरण्ययं बिभ्रद्त्कं सुपर्णः । १८४३
सूर्य सुनहरी कवचरूपी किरणों को धारण करता है ।

## (च) विज्ञान

१६२३. अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः । ५०२
प्राचीन मनुष्यों ने नवीन पद्धति को अपनाया ।

१६२४. अन्तरिक्षे स्वं महिमानं मिमानः । १८४४
सूर्य ने अन्तरिक्ष में अपना महत्त्व फैलाया हुआ है ।

१६२५. अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि ।
अन्तरिक्षेण यातवे । १२१७
सूर्य ने अन्तरिक्ष में चलने के लिए, मानवमात्र की भलाई के निमित्त, अपने घोड़ों को जोता ।

१६२६. ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । ११४५
मित्र और वरुण हमें महान् पार्थिव और दिव्य धन दें ।

१६२७. नेन्द्राद् ऋते पवते धाम किं चन । १३७०
इन्द्र (सूर्य) के अतिरिक्त और कोई भूमि को पवित्र नहीं करता है ।

१६२८. महिक्षत्रावृतं बृहत् । ११४३
मित्र और वरुण महान् रक्षक और महान् सत्यस्वरूप हैं ।

१६२९. ये ते पन्था अधो दिवो येभिर्व्यश्वमैरयः । १७२
हे इन्द्र ! द्युलोक से नीचे तुम्हारे मार्ग हैं । तुम गतिहीन के प्रेरक हो ।

१६३०. योनावृतस्य सीदतम् । ६६५
हे मित्र और वरुण ! तुम दोनों प्राकृतिक नियमों के मूल में हो ।

१६३१. रुचे जनन्त सूर्यम् । ५०२
प्राचीन विद्वानों ने प्रकाश के लिए सूर्यतुल्य प्रकाश को जन्म दिया ।

१६३२. सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च । ११४४
मित्र और वरुण सम्राट् हैं और घृत (संश्लेषण) के आधार हैं ।

## (छ) वृष्टि

१६३३. चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तम् । ३३१
वृष्टि-चक्र का मूल जल है ।

१६३४. नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे । १३१७
बादल पृथिवी के केन्द्र में और पर्वतों पर निवास करते हैं ।

१६३५. पयो गोष्वदधा ओषधीषु । ३३१
वृष्टि के द्वारा गायों में दूध और ओषधियों में रस आता है ।

१६३६. पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनः । १३१७
उड़ने वाले महिष (जलीय कुहरा) का पिता मेघ है ।

१६३७. पृथिव्यामतिषितं यदूधः । ३३१
वर्षा का केन्द्र पृथिवी में निहित है ।

## (ज) शिल्प

१६३८. अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव । १३६२
रथ स्थायी सहायता देने वाला और शक्ति प्रदर्शन का साधन है ।

१६३९. अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईडित आ वह । १३५०
हे अग्नि ! स्तुति किये गये तुम अति सुखद रथ पर देवों को यहाँ लाओ ।

१६४०. अनवस्ते रथमश्वाय तक्षुः । ४४०
शिल्पियों ने घोड़े के लिए रथ तैयार किया ।

१६४१. अन्तरिक्षेण यातवे । ८३३
राजा अन्तरिक्ष में घूमने के लिए बुद्धि से साधन तैयार करता है ।

१६४२. अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुम् । ३३२
रथ तीव्र-गति, अक्षत धुरी वाला और युद्धों में जाने योग्य हो ।

१६४३. अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथः । १७६०
तीन पहिये वाला, सुखद वाहन रथ (विमान) हमारी ओर आवे ।

१६४४. आ त्वा रथे हिरण्यये हरी मयूरशेप्या । १३९२
सुनहरी रथ में मोर के तुल्य पूँछ वाले घोड़े जुते हों । वे इन्द्र को लावें ।

१६४५. आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये । २४५, १३९१
सुनहरी रथ में सैकड़ों, हजारों घोड़े जुते हों । वे इन्द्र को लावें ।

१६४६. इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तये । २६६
हे इन्द्र ! सुखकर गृह तीन भागों वाला और तीन प्रकार की सुरक्षा से युक्त हो ।

१६४७. छर्दिर्यच्छ । २६६
मकान के लिए सुखद छत हो ।

१६४८. त्रिबन्धुरो मघवा विश्वसौभगः । १७६०
हे इन्द्र ! अश्विनी का रथ (विमान) तीन सीट वाला और सर्वसुविधा युक्त है ।

१६४९. त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् । ४४०
हे इन्द्र ! त्वष्टा ने तेजोमय वज्र (घातक अस्त्र) बनाया ।

१६५०. देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम् । ३३२
वह रथ (विमान) देव-प्रेरित, शक्ति शाली और रथों को जीतने वाला है ।

१६५१. नेमिं तष्टेव सुद्रुवम् । २३८
बढ़ई अच्छी लकड़ी से धुरी बनाता है ।

१६५२. बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः । ३३८
तुम विशाल रथ से, श्रेष्ठ वीरों से युक्त, उत्तम धनादि लाओ ।

१६५३. भद्रा वस्त्रा समन्या वसानः । १४००
राजा सोम सभा के योग्य उंत्तम वस्त्र धारण करता है ।

१६५४. यावया दिद्युमेभ्यः । २६६
हे इन्द्र ! घातक अस्त्रों को घर से दूर रखो ।

१६५५. वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां सत्रं सोम्यानाम् । २७५
हे गृहपति ! घर के खंभे सुदृढ हों । घर सोम्य जनों का आश्रय हो ।

१६५६. शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे । १७६०
वह दिव्य रथ (विमान) मनुष्यों और पशुओं के लिए सुखद हो ।

१६५७. समीचीनास ऋभवः समस्वरन् । २५६
श्रेष्ठ शिल्पियों ने भी अपनी सहमति दी ।

१६५८. सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये । १३९१
उस सुनहरी रथ में सैकड़ों, सहस्रों घोड़े जुते थे ।

१६५९. स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम । ३३२
कल्याण के लिए तार्क्ष्यवत् तीव्रगामी दिव्य रथ को पुकारते हैं ।

१६६०. हरितो रथे सूरो अयुक्त यातवे । १२१८
सूर्य ने अपनी यात्रा के लिए श्रेष्ठ घोड़ों को जोता ।

# (१२) वनस्पतिशास्त्र, प्राणिविज्ञान

## (क) वनस्पतिशास्त्र

१६६१. अरण्योर्निहितो जातवेदाः । ७९
अरणियों (काष्ठविशेष) में अग्नि छिपी हुई है ।

१६६२. वृक्षं न पक्वं धूनवद् रणाय । ११०५
पके हुए वृक्ष को फलादि के लिए हिलाया जाता है ।

## (ख) प्राणिविज्ञान

१६६३. अत्यो न क्रीडन् असरद् वृषा हरिः । १६१५
बलवान् सोम घोड़े की तरह मस्ती से चलता है ।

१६६४. अव्या वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति । ११३३
प्रिय सोमरस भेड़ों के बाल की बनी छलनी से छनता है ।

१६६५. अश्वं न गीर्भिः रथ्यं सुदानवे मर्मृज्यन्ते देवयवः । १५८४
उदार दानी एवं देवभक्त अग्नि को उसी प्रकार सुशोभित करते हैं, जैसे रथ ढोने वाले घोड़े को ।

१६६६. अश्वं न त्वा वारवन्तम् । १७, १६३४
हे अग्नि ! तुम बाल वाले घोड़े के तुल्य हो ।

१६६७. अश्वो न चक्रदो वृषा । ७८३
हे सोम ! तुमने शक्ति वाली घोड़े की तरह ध्वनि की ।

१६६८. अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वचम् । १६१५
साँप अपनी पुरानी त्वचा छोड़ देता है ।

१६६९. इन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः । १७१८
हे इन्द्र ! तुम मोर के पंख के तुल्य पूँछ वाले घोड़ों से यहाँ आवो ।

१६७०. कपोत इव गर्भधिम् । १८३

कबूतर कबूतरी के पास जाता है ।

१६७१. कृण्वन्तो वरिवो गवे । ८३२

गायों को सुख-सुविधा दो ।

१६७२. जिष्णोरश्वस्य वाजिनः । ३५८

घोड़ा बलवान् और विजयी होता है ।

१६७३. पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि । १५१२

तुम अवध्य गायों के लिए उनका रक्षक चाहते हो ।

१६७४. पृश्नयो घृतं दुह्रत आशिरम् । १८७

गायें घी और गव्य पदार्थ देती हैं ।

१६७५. प्र हंसासस्तृपला वग्नुमच्छ । १११७

हंस मधुर ध्वनि करते हुए शीघ्र अपने स्थान को जाते हैं ।

१६७६. मध्वा संपृक्ताः सारघेण धेनवः । १६०६

हे इन्द्र ! तुम शहद मिला हुआ दूध पीओ ।

१६७७. महिषो मृगाणाम् । ९४४

पशुओं में भैंसा बलवान् है ।

१६७८. यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन् एत्यवेरिणम् । २५२, १७२१

गौर मृग प्यासा होकर, मरुभूमि में, तालाब के पास जाता है ।

१६७९. वयश्चित्ते पतत्रिणो द्विपाद् चतुष्पादर्जुनि । ३६७

उषाकाल होते ही सभी पक्षी, मनुष्य और पशु गतिशील हो जाते हैं ।

१६८०. वृकश्चिदस्य वारणः । १६९२

भेड़िया और जंगली जानवर भी इन्द्र की आज्ञा में रहते हैं ।

१६८१. वृषभो गोषु । ९४५

गायों में बैल शक्तिशाली है ।

१६८२. शं यद् गवे न शाकिने । १६६६
इन्द्र बैल के तुल्य शक्तिशाली है ।

१६८३. श्येनो गृध्राणाम् । ९४४
गीधों में श्येन बलवान् है ।

१६८४. सदा गावः शुचयो विश्वधायसः । ४४२
गायें सदा पवित्र हैं और सबकी पोषक हैं ।

१६८५. समर्वन्तो रघुद्रुवः । १७३९
तीव्र गति वाले घोड़े हमें प्राप्त हों ।

१६८६. स्मसि स्थातर्हरीणाम् । १९३
इन्द्र घोड़ों का सारथि है ।

१६८७. हंसो यथा गणम् । ७७०
हंस झुण्ड में रहते हैं ।

१६८८. हरिभिर्याहि मयूररोमभिः । २४६
हे इन्द्र ! मोर के पंख के तुल्य पूँछ वाले घोड़ों से यहाँ आवो ।

## (१३) मनोविज्ञान

१६८९. अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः । १९
अग्नि प्रज्वलित करता हुआ व्यक्ति मन से बुद्धि को मिलाता है ।

१६९०. अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धताम् । १५६०
हे अग्नि ! शत्रुओं के दृढ़ विचारों को भी हतोत्साह कर दो ।

१६९१. आ ते वत्सो मनो यमत् परमात् चित् सधस्थात् । ८
हे अग्नि ! तुम अपने सुदूरस्थ मन को यहाँ ले आवो ।

१६९२. क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् । १७७७
भद्र विचार हृदयस्पर्शी होते हैं ।

१६९३. क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः । १७७८
भद्र विचार ज्ञानयुक्त और कल्याणकारी होते हैं ।

१६९४. चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम् । ८८४
चेतन मनवाली बुद्धि सत्य की पोषक होती है ।

१६९५. पुरुत्रा चिद्धि ते मनः । २७१
हे इन्द्र ! तुम्हारा मन अनेक स्थानों पर लगा हुआ है ।

१६९६. भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम् । ४२२
हे अग्नि ! हमें ऐसा मन दो, जो ज्ञान, सुख और शक्ति दे ।

१६९७. भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये । १५६०
पापों के नाश के लिए मन को पवित्र रखो ।

१६९८. मनो दक्षं दधस उत्तरम् । ७०६
हे अग्नि ! तुम्हारा मन शक्ति शाली और उत्कृष्ट है ।

१६९९. यत्ते दिक्षु प्राराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत् । ११७४
हे इन्द्र ! तुम्हारा मन स्तुत्य है और सभी दिशाओं में विख्यात है ।

१७००. यद् वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च । ८६
मन तीव्रगामी है। उससे अग्नि की स्तुति करो ।

१७०१. येना समत्सु सासहिः। १५६०
अग्नि ने शुभ विचार वाले मन से युद्धों में विजय प्राप्त की ।

## (१४) विविध

### (क) वेद

१७०२. ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते । ४८
हे मरुतो और ब्रह्मणस्पति ! मैं ऋचाओं से तुम्हारी स्तुति करता हूँ ।

१७०३. ऋषिभिः संभृतो रसः । १३००
वेदों में ऋषियों का ज्ञान भरा हुआ है ।

१७०४. कामान् समर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः । १३०१
मंत्रों से प्रसन्न होकर देवी-देवता हमारी कामनाएँ पूर्ण करें ।

१७०५. गायत्रं त्रैष्टुभं जगद् विश्वा रूपाणि संभृता । १८३०
गायत्री, त्रिष्टुप् और जगती छन्दों में सभी तत्त्व संगृहीत हैं ।

१७०६. गायत्रं त्रैष्टुभं जगद् . . . . देवा ओकांसि चक्रिरे । १८३०
गायत्री, त्रिष्टुप् और जगती छन्दों में देवों का निवास है ।

१७०७. तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः । १३०२
वेद की पवित्र ऋचाएँ हमें सहस्रों धाराओं से पवित्र करें ।

१७०८. पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते । ५६५
हे ब्रह्मणस्पति ! तुम्हारा पवित्र ज्ञान चारों ओर फैला हुआ है ।

१७०९. पावमानीः स्वस्त्ययनीः ताभिर्गच्छति नान्दनम् । १३०३
वेद की ऋचाएँ पवित्र करने वाली और मंगलकारी हैं । उनसे आनन्द की प्राप्ति होती है ।

१७१०. पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः । १३००
ऋचाएँ शोधक, मंगलकारी, सुखद और समृद्धिदात्री हैं ।

१७११. पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथो अमुम् । १३०१
पवित्र ऋचाएँ हमें इस लोक और परलोक का सुख दें ।

१७१२. पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् । १२९९
जो ऋषियों के ज्ञान से परिपूर्ण ऋचाओं को पढ़ता है । उसे सरस्वती दूध, घी, मधु और पौष्टिक पेय देती है ।

१७१३. पुण्यांश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति । १३०३
ऋचाओं का पाठक पवित्र अन्न खाता है और अमर होता है ।

१७१४. प्र गायत्रा अगासिषुः । २७१
विद्वानों ने गायत्री छन्द के मंत्रों का गान किया ।

१७१५. ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् । १३००
वेदज्ञ विद्वानों में अमृत भरा हुआ है ।

१७१६. यः पावमानीरध्येति ऋषिभिः संभृतं रसम् ।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना । १२९८
जो ऋषियों के ज्ञान से परिपूर्ण पवित्र ऋचाओं को पढ़ता है, वह वायु द्वारा स्पर्श की गई सभी पवित्र वस्तुओं को प्राप्त करता है ।

## (ख) कवि, काव्य

१७१७. अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते . . . . मध्वाभ्यञ्जते । ५६४
यज्ञकर्ता यज्ञ को परिष्कृत, व्यक्त, संसृष्ट करते हुए मधु युक्त करते हैं ।

१७१८. अपामुपस्थे कविर्भगाय । ४३१
कवि जल के समीप बैठकर यश के लिए काव्य–रचना करता है ।

१७१९. अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति । १७६२
समस्त तत्त्वों को देखता हुआ कवि प्रिय काव्य बनाता है ।

१७२०. अभि विश्वानि काव्या । ७७५
ईश्वर सभी काव्य रचना को पवित्र करे ।

१७२१. उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे । १४२४
सोम ने द्यावापृथिवी को काव्य से फैलाया ।

१७२२. एष कविरभिष्टुतः । १२८६
कवि स्तुत्य होता है ।

१७२३. कविर्गीर्भिः काव्येना कविः । ११७५
सुमधुर वचनों से और काव्यरचना से कवि होता है ।

१७२४. कविर्विप्रेण वावृधे । ७५९, १७११
कवि विशिष्ट ज्ञान से विकसित होता है ।

१७२५. कवीनां मतिर्ज्योतिर्विधर्म । ४५८
कवियों की बुद्धि प्रकाशस्वरूप और विशिष्ट धारणायुक्त होती है

१७२६. काव्या कविर्नृम्णा पुनानो अर्षति । ११३१
कवि काव्य-रचना और अदम्य उत्साह से धरती को पवित्र करता हुआ चलता है ।

१७२७. त्वं विप्रस्त्वं कविः । १०९४
परमात्मा ज्ञानवान् और कवि (क्रान्तदर्शी) है ।

१७२८. देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ।
ममार स ह्यः समान । ३२५, १७८२
परमात्मा की महिमा से व्याप्त उसके अमर काव्य (वेद) को देखो । जो कल मरा हुआ था, वह आज जीवित है ।

१७२९. देवो देवानां जनिमा विवक्ति। । ५२४, १११६
कवि देवों (दिव्यशक्तियों) के जन्म का विवेचन करता है ।

१७३०. परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः । ४८६
कवि कल्पनारूपी सागर की तरंगों पर बैठकर बहता है ।

१७३१. परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभुवत् । ९४
ब्रह्म समस्त संसाररूपी काव्य की धुरी है ।

१७३२. प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणः । ५२४, १११६
लोकहित-चिन्तक कवि काव्य की रचना करता है ।

१७३३. मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविः । ८२२
कवि अग्रणी होता है और वह विद्वानों के साथ रहकर सबको पवित्र करता है ।

१७३४. महान् कविर्निवचनानि शंसन् । १४००
महान् कवि तत्वों का विवेचन करता है ।

१७३५. युवा कविरमितौजा अजायत । ३५९, १२५०
इन्द्र युवा कवि है और अनन्त तेज वाला है ।

१७३६. सहस्रनीथः पदवीः कवीनाम् । ११७६
कवियों का नेता हजारों ढंग से चलता है ।

## (ग) शास्त्रज्ञ, विद्वान्

१७३७. आ विप्रमा मनीषिणम् । ११३८
विद्वान् मनीषी होता है ।

१७३८. आ सूर्यस्य . . . . रथं विष्वञ्चम् अरुहद् विचक्षणः । ७००
विद्वान् सूर्य के रथ पर बैठकर विचरण करता है ।

१७३९. ज्यायो महित्वमानशे, अभिष्टिकृद् विचर्षणिः । ८३९
अभीष्ट साधक, कर्मठ विद्वान् उत्कृष्ट गौरव प्राप्त करता है ।

१७४०. ते पूतासो विपश्चितः । ११०२
विद्वान् पवित्रात्मा होते हैं ।

१७४१. मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत । ३७६
उदार दानी विद्वान् की पूजा करो ।

१७४२. मदच्युत् क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित् । ११९८
आनन्दवर्षक विद्वान् कल्पनारूपी समुद्र की तरगों पर निवास करता है ।

१७४३. मनोर्वृधः पतिर्दिवः । १२४९
विद्वान् चिन्तक और ज्ञान का स्वामी होता है ।

१७४४. वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रम् । ३१९
सुन्दर पंख वाले पक्षियों की तरह विद्वान् ईश्वर के समीप जाते हैं ।

१७४५. वृषा मतीनां पवते विचक्षणः । ८२१
विद्वान् ज्ञान का वर्षक होकर संसार को पवित्र करता है ।

१७४६. सं सुजातासः सूरयः । १७३९
कुलीन विद्वान् ईश्वर के समीप जाते हैं ।

१७४७. समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासः । ५१८, ८५६
विद्वान् कल्पनारूपी समुद्र के शिखर पर आनन्दित रहते हैं ।

## (घ) भाषाविज्ञान

१७४८. उद् गा आजद् . . . . आविष्कृण्वन् गुहा सतीः । १६४१
इन्द्र ने गुप्त वाणियों (भाषाओं) का उद्धार करके उन्हें प्रकट किया ।

१७४९. ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् । ५२५, ८५९
वाणी (वाक् तत्त्व) ऋत का धारक है और ब्रह्म का ज्ञानरूप है ।

१७५०. गिरः शुम्भामि कण्ववत्, येनेन्द्रः शुष्ममिद् दधे । १५०१
मैं विद्वान् के तुल्य वाणी को परिष्कृत करता हूँ । इससे आत्मा बलवान् होती है ।

१७५१. तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम् । १०७७
वाणी (भाषा) धारक है । उसको भाषाशास्त्री विद्वान् परिष्कृत करते हैं ।

१७५२. तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निः । ५२५, ८५९
वह्नि (अन्तरात्मा) परा आदि तीन वाणियों को प्रेरणा देता है ।

१७५३. पतिर्वाचो अदाभ्यः । १२८५
वाणी का स्वामी अजेय होता है ।

१७५४. महान् कविर्निवचनानि शंसन् । १४००
महान् कवि तत्त्वों का विश्लेषण करता है ।



१७५५. यत्र नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः । १३५९
हमारे पूर्वज विद्वान् पदतत्त्व के ज्ञाता थे ।

१७५६. युञ्जे वाचं शतपदीम् । १८२८
मैं सौ पद वाली वाणी का प्रयोग करता हूँ ।

१७५७. वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतावृधम् । ९९०
वाणी (भाषा) के आठ पद (पद-विभाजन) और ९ कोण (प्रक्रिया) हैं ।

## (ङ) संगीत

१७५८. इन्द्राय साम गायत । ३८८
इन्द्र के लिए साम-गान करो ।

१७५९. गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्ति अर्कमर्किणः । ३४२
हे इन्द्र ! गायक तेरा गान करते हैं और स्तुतिकर्ता तेरी स्तुति करते हैं ।

१७६०. गाये सहस्रवर्तनि । १८२९
मैं सामवेद को सहस्रों ढंग से गाता हूँ ।

## (च) ज्योतिष

१७६१. अग्ने नक्षत्रमजरमा सूर्यं रोहयो दिवि । १५३०
हे ईश ! तुमने अमर सूर्य और नक्षत्रों को द्युलोक में रखा ।

१७६२. चरत् त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत् । २८१
सूर्य ने विचरण करते हुए ३० पैर (३० दिन का मास) रखे ।

१७६३. त्रिंशद् धाम वि राजति । ६३२, १३७८
सूर्य ३० स्थानों पर (मास के ३० दिन) विराजमान होता है ।

१७६४. दधद् ज्योतिर्जनेभ्यः । १५३०
सूर्य और नक्षत्र संसार को प्रकाश देते हैं ।

१७६५. मिमानो अक्तुभिः, पश्यन् जन्मानि सूर्य । ६३८
हे सूर्य ! तुम प्रकाश के द्वारा अहोरात्र का निर्माण करते हो और सबकी उत्पत्ति देखते हो ।

१७६६. वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः ।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः । ६१६
वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर ये ६ ऋतुएँ रमणीय हैं।

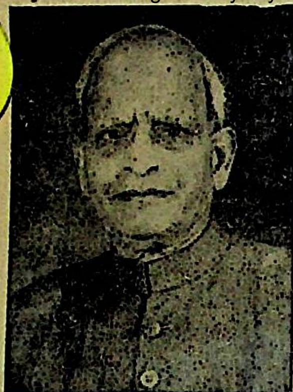
## (छ) ऋषि

१७६७. ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः । ११७६
सोम ऋषितुल्य मनवाला, ऋषियों का जनक और प्रकाशदाता है ।

१७६८. प्रियमेधा ऋषयः । ३१९
ऋषि बुद्धिप्रिय व्यक्ति होते हैं ।


तिथि
पु०सं० 2216


2216



**पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी**
**निदेशक, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्**
**ज्ञानपुर ( भदोही )**

जन्म—गहमर (गाजीपुर) उ० प्र०
तिथि—१६-१२-१९१९ ई०
पिता—श्री बलरामदास जी
शिक्षा—गुरुकुल म० वि० [illegible] पुर ( हरिद्वार ), लाहौर, इलाह[illegible]
उपाधियाँ—एम.ए. ( सं[illegible] हिन्दी ), डी०फिल्० ( इलाहाबाद ), [illegible]करणाचार्य (वाराणसी)। जर्मन, फ्रेंच, रूसी, [illegible]नी भाषा[illegible] में विशेष योग्यता। अवकाश-प्राप्त प्राचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्याल[illegible] उ०प्र०। प्रकाशन—७० से अधिक ग्रन्थ। उ०प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत ग्रन्थ—१. अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन ( १९५२ ), २. संस्कृत-व्याकरण (१९७२), ३. संस्कृत-निबन्ध-शतकम् (१९७७), ४. राष्ट्रगीत[illegible] [illegible]८), ५. भक्तिकुसुमांजलिः (१९९०), ६. अथर्ववेद का सांस्कृतिक [illegible] [illegible]९१)। अन्य विशेष उल्लेखनीय ग्रन्थ—१. भाषाविज्ञान एवं भाषा[illegible], २. प्रौढ रचनानुवाद-कौमुदी, ३. रचनानुवाद-कौमुदी, ४. प्रा० रचनानुवाद-कौमुदी, ५. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, ६. वेदामृतम् ( २० भाग ) सुखी जीवन, सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज, आचार-शिक्षा, नीति-शिक्षा, वेदों में नारी, वैदिक मनोविज्ञान, यजुर्वेद सुभाषितावली, सामवेद-सुभाषितावली, अथर्ववेद-सुभाषितावली, ऋग्वेद-सुभाषितावली, वेदों में आयुर्वेद, वेदों में राजनीतिशास्त्र।

---

'वेदों की महिमा अपार है। वेद ज्ञान के स्रोत हैं। विश्व को सर्वप्रथम ज्ञान देने का श्रेय वेदों को है। वेद मानव-मात्र के लिए प्रकाश-स्तम्भ हैं। जहाँ वेदों की ज्योति है, वहाँ प्रकाश है, उन्नति है, सुख है, शान्ति और सतत विकास है।....वेदों का स्वाध्याय प्रत्येक व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की उन्नति का साधन है, विश्वबन्धुत्व का प्रेरक है और विश्व-धर्म का संस्थापक है।'
—डा० कपिलदेव द्विवेदी ( वेदामृतम् )